

खण्ड-06 सत्र-07 (भाग-04)
अंक-91

सोमवार 26 नवम्बर, 2018
05 मार्गशीर्ष, 1940

दिल्ली विधान सभा

की कार्यवाही



छठी विधान सभा

सातवाँ सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-06 सत्र-07 (भाग-04) में अंक 91 से अंक 92 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग
EDITORIAL BOARD

सी. वेलमुरुगन
सचिव
C. VELMURUGAN
Secretary

एम.एस. रावत
उप-सचिव (सम्पादन)
M.S. RAWAT
Deputy Secretary (Editing)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-07 भाग (04) सोमवार, 26 नवम्बर, 2018/05 मार्गशीर्ष, 1940 (शक) अंक-91

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए :

- | | |
|--------------------------|------------------------------|
| 1. श्री शरद कुमार | 10. श्रीमती बंदना कुमारी |
| 2. श्री संजीव झा | 11. श्री जितेन्द्र सिंह तोमर |
| 3. श्री पंकज पुष्कर | 12. श्री राजेश गुप्ता |
| 4. श्री पवन कुमार शर्मा | 13. श्री अखिलेश पति त्रिपाठी |
| 5. श्री अजेश यादव | 14. श्री सोमदत्त |
| 6. श्री महेन्द्र गोयल | 15. सुश्री अलका लाम्बा |
| 7. श्री रामचंद्र | 16. श्री आसिम अहमद खान |
| 8. श्री ऋतुराज गोविन्द | 17. श्री विशेष रवि |
| 9. श्री रघुविन्द्र शौकीन | 18. श्री हजारी लाल चौहान |

- | | |
|--------------------------|-----------------------------|
| 19. श्री शिव चरण गोयल | 35. श्री सौरभ भारद्वाज |
| 20. श्री गिरीश सोनी | 36. श्री सही राम |
| 21. श्री जरनैल सिंह | 37. श्री अमानतुल्लाह खान |
| 22. श्री राजेश ऋषि | 38. श्री राजू धिंगान |
| 23. श्री महेन्द्र यादव | 39. श्री मनोज कुमार |
| 24. श्री आदर्श शास्त्री | 40. श्री नितिन त्यागी |
| 25. सुश्री भावना गौड़ | 41. श्री ओम प्रकाश शर्मा |
| 26. श्री सुरेन्द्र सिंह | 42. श्री एस.के. बग्गा |
| 27. श्री प्रवीण कुमार | 43. श्री अनिल कुमार बाजपेयी |
| 28. श्री मदन लाल | 44. श्रीमती सरिता सिंह |
| 29. श्री सोमनाथ भारती | 45. मो. इशराक |
| 30. श्रीमती प्रमिला टोकस | 46. श्री श्रीदत्त शर्मा |
| 31. श्री नरेश यादव | 47. श्री चौ. फतेह सिंह |
| 32. श्री करतार सिंह तंवर | 48. श्री जगदीश प्रधान |
| 33. श्री अजय दत्त | 49. श्री कपिल मिश्रा |
| 34. श्री दिनेश मोहनिया | |

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-07 भाग (04) सोमवार, 26 नवम्बर, 2018/05 मार्गशीर्ष, 1940 (शक) अंक-91

सदन अपराह्न 2.00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

राष्ट्रीय गीत – (वन्दे मातरम्)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, दिल्ली विधान सभा के सातवें सत्र के चौथे भाग में आप सबका हार्दिक स्वागत है। मैं आशा करता हूँ कि आप शालीनतापूर्वक सदन की कार्यवाही में भाग लेंगे और विशेष प्रयोजन पर बुलाये गये इस सत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक चर्चा करते हुए, कार्यवाही के सुचारु रूप से संचालन में मुझे पूरा सहयोग देंगे।

शोक-संवेदनाएँ

(भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन पर)

आप सबको विदित है कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री तथा भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का दिनांक 16 अगस्त, 2018 को लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया था। वे 93 वर्ष के थे। उनका विशाल व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। 25 दिसम्बर, 1924 को ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में जन्मे श्री वाजपेयी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और चार

दशकों तक भारत की संसद के सदस्य रहे तथा कवि, पत्रकार और प्रखर वक्ता थे। प्रधानमंत्री के रूप में अपने कामकाज के तरीके से उन्होंने भारतवासियों पर गहरी छाप छोड़ी। आपातकाल के दौरान वे जेल भी गये थे। वर्ष 1977 में वे भारत के विदेश मंत्री बनाये गये और पहली बार उन्होंने हिंदी में संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में भाषण दिया। वर्ष 1996 में वे भारत के प्रधानमंत्री बने तथा इसके बाद वर्ष 1998 से 2004 तक इस पद को सुशोभित किया। उन्होंने विश्व के तमाम बड़े राष्ट्रों के विरोध के बावजूद परमाणु परीक्षण करवाया और भारत को सशक्त परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनाने में योगदान दिया। उनके व्यक्तित्व की विशेषता यह थी कि सभी राजनीतिक दल अपनी पार्टी हितों से ऊपर उठकर उनका सम्मान करते थे। राष्ट्र के प्रति समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें पद्म विभूषण तथा भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उनका संघर्षमय जीवन देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से हुई अपूर्णीय क्षति के प्रति हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना के निधन पर शोक)

आपको विदित होगा कि दिनांक 27 अक्टूबर, 2018 को दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना का निधन हो गया। वे वर्ष 1993 से 1996 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने राजस्थान के राज्यपाल के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी। उनका जन्म 15 अक्टूबर, 1936 को लायलपुर (अब

पाकिस्तान) में हुआ था। वे 16 वर्ष की अल्पायु में ही कश्मीर में हुए सत्याग्रह आंदोलन में कूद पड़े और तीन मास तक कारावास का दंड भोगा। उन्होंने दिल्ली तथा राष्ट्रहित के लिए कई बार जेल यात्राएँ की। उन्होंने छात्र राजनीति से अपना कैरियर शुरू किया था और वर्ष 1959 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ के महासचिव चुने गये थे। वे वर्ष 1966 में महानगर परिषद के सदस्य मनोनीत हुए और इसके बाद वर्ष 1967 से 1989 तक लगातार चार बार महानगर परिषद के सदस्य निर्वाचित हुए। वर्ष 1977 से 1980 तक वे कार्यकारी पार्षद रहे तथा वर्ष 1975 में आपातकाल के दौरान जेल गये। वे वर्ष 1989 और 1991 में दो बार लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए।

दिल्ली के लिए विधानसभा का गठन करने के आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अपने कार्यकर्ताओं में वे 'दिल्ली के शेर' के नाम से विख्यात थे। उनके निधन से दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्र को अत्यधिक क्षति हुई है।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री मदन लाल खुराना के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(केन्द्रीय मंत्री श्री अनंत कुमार के निधन पर)

आप सबको ज्ञात होगा कि दिनांक 12 नवम्बर, 2018 को श्री अनंत कुमार का 59 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे। वे कर्नाटक के दक्षिण बेंगलुरु क्षेत्र से सांसद थे तथा केन्द्र सरकार में रसायन और उर्वरक तथा संसदीय कार्य मंत्री थे। वे छात्र राजनीति से होते हुए

राष्ट्रीय राजनीति तक आये थे। उनके निधन से राष्ट्रीय राजनीति को क्षति हुई है।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री अनंत कुमार के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

**(दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री एम. एस. धीर
के निधन पर)**

आपको जानकर दुःख होगा कि दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री मनिन्दर सिंह धीर का गत 17 दिसंबर 2018 को निधन हो गया। 66 वर्षीय श्री मनिन्दर सिंह धीर दिसंबर 2013 से फरवरी 2015 तक दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रहे। उनका जन्म 20 अप्रैल 1952 को दिल्ली में हुआ था। समाज सेवा में उनकी रुचि थी। वे दिसंबर 2013 में दिल्ली के जंगपुरा विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गये। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सजगतापूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री मनिन्दर सिंह धीर जी के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

**(दिल्ली विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री साहब सिंह चौहान
के निधन पर)**

आप सबको ज्ञात होगा कि दिल्ली विधानसभा के पाँच बार विधायक रहे श्री साहब सिंह चौहान का दिनांक 16 अगस्त, 2018 को निधन हो गया। वे काफी समय से बीमार चल रहे थे और कैंसर से पीड़ित थे। उनकी

पहचान दिल्ली के उन विधायकों में की जाती थी, जिन्हें विस्तृत विधायी ज्ञान था। दिनांक 10 जनवरी, 1950 को बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश में जन्मे श्री चौहान वर्ष 1980 से दिल्ली की राजनीति में सक्रिय थे तथा पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी विधानसभा के सदस्य रहे। वे दो बार यमुना विहार क्षेत्र से तथा तीन बार घोण्डा क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे। अध्ययन तथा शैक्षणिक क्षेत्र में उनकी गहन रुचि थी।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री साहब सिंह चौहान के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

**(दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य श्री जिले सिंह चौहान जी
के निधन पर)**

आप को यह जानकर अत्यधिक दुःख होगा कि गत दिनों दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य श्री जिले सिंह चौहान का 70 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। वे वर्ष 1973 से राजनीति में सक्रिय थे और भलस्वा, जहांगीरपुरी क्षेत्र से प्रतिनिधित्व करते थे। पहली बार वे वर्ष 1998 में दिल्ली विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और इसके बाद वर्ष 2003 में दोबारा विधायक बने।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री जिले सिंह चौहान के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

**(दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य श्री नंद किशोर सहरावत
के निधन पर)**

आप सबको यह जानकर अत्यधिक दुःख होगा कि दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य श्री नंद किशोर सहरावत का दिनांक 02 अक्टूबर, 2018 को मात्र 48 वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया वे ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित थे। वे वर्ष 2008 में विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र से सदस्य निर्वाचित हुए थे।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री नंद किशोर सहरावत के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा छत्तीसगढ़ में शहादत पर)

आप सबको विदित है कि 18 नवम्बर, 2018 को पंजाब के अमृतसर में करीब 200 लोगों से भरे प्रार्थना सभागार में ग्रेनेड हमले में तीन लोगों की मौत हो गई और 20 से अधिक लोग घायल हो गये। इसी तरह जम्मू-कश्मीर में आतंकी तथा छत्तीस गढ़ में नक्सली हमले की भी घटनाये हुई हैं जिनमें सेना के जवान शहीद हुए हैं।

ये पूरी तरह कायरतापूर्ण, अमानवीय और पाश्विक करतूत हैं। इसकी जितनी निंदा की जाये, उतनी कम है। भारतीय सुरक्षा बलों को इस तरह के कायरतापूर्ण हमलों का मुँह-तोड़ जवाब देना चाहिए ताकि इस तरह का दुस्साहस दोबारा न हो सके।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इन हमलों में हताहत नागरिकों तथा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उनके परिजनों को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(पंजाब में ट्रेन दुर्घटना में हताहतों के प्रति)

आप सबको विदित है कि दिनांक 19 अक्टूबर, 2018 को दशहरे के अवसर पर पंजाब के अमृतसर में बड़ा ट्रेन हादसा हो गया था और रावण दहन देख रहे सैकड़ों लोग ट्रेन की चपेट में आ गये। इसमें 60 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई और 50 से ज्यादा लोग घायल हो गये।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इस हादसे के मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उनके परिजनों को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

26 नवम्बर, 2008 को आतंकियों के हमले में मारे गये भाई-बहनों को श्रद्धासुमन अर्पण।

हम सबको ज्ञात होगा कि आज ही के दिन 26 नवम्बर, 2008 को मुम्बई में आतंकी हमला हुआ था, जिसका भारतीय सेना ने कड़ा मुकाबला किया और आतंकवादियों के इरादों को नेस्तनाबूद कर दिया। आज उस घटना को पूरे दस वर्ष हो गये हैं। उल्लेखनीय है कि उसी हमले के दौरान मोर्चा सम्भाले हुए इसी सदन के माननीय सदस्य कमांडो श्री सुरेन्द्र सिंह भी घायल हुए थे और उनका कान क्षतिग्रस्त हो गया था। मैं उनकी बहादुरी को नमन करता हूँ। शहीद हुए नागरिकों तथा भारतीय सेना के जवानों को यह सदन श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

अब दिवंगत आत्माओं के सम्मान में सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया जायेगा।

(सदन द्वारा दो मिनट के लिए मौन धारण किया गया।)

ओम शांति-शांति।

संविधान दिवस

आज आजाद भारत के इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण दिवस है। आज संविधान दिवस है। भारत का संविधान इसी दिन अर्थात् 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया था और तत्पश्चात् यह 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया था। मैं इस पावन दिवस पर अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष डा. भीमराव अम्बेडकर तथा संविधान का निर्माण करने वाले सभी महान नेताओं और विद्वानों का स्मरण करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से भारत के संविधान का निर्माण हुआ और संविधान के प्रावधानों का अनुपालन करके भारत विश्व का सबसे बड़ा और सशक्त लोकतंत्र बना। आज हम इस सदन में संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों के कारण ही उपस्थित हैं। संविधान दिवस के इस पावन अवसर पर मैं भारत के संविधान की उद्देशिका को पढ़ना चाहूँगा। सदन के सभी सदस्य अपने स्थान पर खड़े होकर मेरे साथ-साथ बोलेंगे।

हम भारत के लोग,

भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ईस्वी (मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं, जयहिन्द।

श्री महेन्द्र गोयल: आम आदमी पार्टी के जितने भी व्यक्ति बैठे हैं, आम आदमी पार्टी की स्थापना होने की बहुत बहुत बधाई। आपके मंच से उनको... दिया जा रहा है। सभी सदस्यों को आज के इस शुभ दिवस की बहुत-बहुत मैं बधाई देता हूँ और... ओमप्रकाश जी. आज खुशी के मौके पर न एक रोने-धोने के गीत नहीं गाने चाहिए, बैठ जाओ एक बार। बाद में खड़े हो जाइयो ना।

माननीय अध्यक्ष: महेन्द्र जी, बैठिए।

श्री गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर शुभकामनाएँ

आपको यह जानकारी प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष श्री गुरु नानक देव जी का 550वाँ प्रकाश पर्व मनाया जा रहा है।

भारत तथा देश विदेश में करोड़ों श्रद्धालु गहन आस्था और सम्मान के साथ इस पर्व को मना रहे हैं। इस अवसर पर पुराना सचिवालय परिसर में 03 दिसम्बर, 2018 से पंजाबी अकादमी द्वारा प्रदर्शनी आयोजित की जायेगी। दिनांक 07 दिसम्बर, 2018 को विधानसभा परिसर में सायं 6.00 बजे गुरु पर्व मनाया जायेगा, जिसमें माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी मुख्य अतिथि होंगे तथा माननीय उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी विशिष्ट अतिथि होंगे। आप सब इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इस अवसर पर सभी श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा श्री गुरु नानक देव जी को नमन करता हूँ। उन्होंने अपने प्रवचनों में हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने, प्रेमपूर्वक रहने, मानसिक शांति तथा सम्मानपूर्वक जीवन जीने का उपदेश दिया

था। आज के समय में जब धर्म और जाति के नाम पर समाज को बाँटने वाली कुछ शक्तियाँ सक्रिय हैं, ऐसे में प्रकाश पर्व के माध्यम से हम श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का पालन करके समाज में आपसी भाई-चारे और सद्भाव स्थापना में अपना योगदान दे सकते हैं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, मैंने... देखिए, अस्वीकार कर दिया है। कार्य स्थगन किस लिए? किस लिए कार्य स्थगन? बैठिए, ओम प्रकाश जी। पूरे विश्व में अस्पतालों की प्रशंसा हो रही है, आप कह रहे हैं, हालत खराब है। मैं पढ़ देता हूँ।

मुझे श्री विजेन्द्र गुप्ता, नेता प्रतिपक्ष तथा श्री जगदीश प्रधान से नियम-54 के अंतर्गत ध्यानाकर्षण, श्री ओम प्रकाश शर्मा से नियम-59 के अंतर्गत कार्य स्थगन प्रस्ताव, श्री संजीव झा से नियम-55 के अंतर्गत अल्पकालिक चर्चा की सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं। श्री कपिल मिश्रा की ई-मेल से प्राप्त सूचना नियमों के अंतर्गत नहीं है।

जैसा कि आपको विदित है कि यह सत्र विशेष प्रयोजन के लिए बुलाया गया है। सदन के समय के अधिकतम सदुपयोग तथा सभी सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के लिए, कार्यसूची में सूची-बद्ध विषयों के अलावा किसी अन्य विषय को विचारार्थ नहीं लिया जायेगा। अतः मैं किसी भी सूचना को स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सरकारी संकल्प नियम-90 श्री सत्येन्द्र जैन जी माननीय गृह मंत्री।

(श्री कपिल मिश्रा माननीय अध्यक्ष की कुर्सी के समीप आये।)

माननीय अध्यक्ष: कपिल जी, मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ। कपिल जी, आप वहाँ अपनी सीट पर जाइए, आप सीट पर जाइए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, सदन जिस मकसद के लिए बुलाया गया, वो मकसद...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप तो सदन में... देखिए मैं आग्रह कर रहा हूँ, आप बैठिए, कार्यवाही होने दीजिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: कल का मैं कोई समय नहीं दूँगा। श्री सत्येन्द्र जैन जी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैंने अपनी रूलिंग दे दी है ना। ये मेरा अधिकार है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, मैं किसी पर चर्चा नहीं करवा रहा हूँ। प्लीज बैठिए। मैं आग्रह कर रहा हूँ, मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर रहा हूँ। कल का कल देखूँगा। विजेन्द्र जी, मैं हाथ जोड़कर आग्रह कर रहा हूँ आप मुझे टी ब्रेक पर कक्ष में मिल लीजिए, फिर चर्चा कर लेंगे। दोनों विषय पर बात करते हैं, बैठिए।

सरकारी संकल्प (नियम-90)

माननीय अध्यक्ष: अब श्री सत्येन्द्र जैन जी, माननीय गृह मंत्री नियम-90 के तहत सरकारी संकल्प प्रस्तुत करने की अनुमति लेंगे।

माननीय गृह मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन): अध्यक्ष महोदय मैं नियम 90 के अन्तर्गत सरकारी संकल्प प्रस्तुत करने के लिए सदन की अनुमति चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष: अनुमति है।

माननीय गृह मंत्री: धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

“The Legislative Assembly of NCT of Delhi having its sitting in Delhi on 26 November, 2018:

Taking into consideration the following facts:

- ***That as per the records of the National Crime Records Bureau, the National Capital Territory of Delhi has acquired and has been consistently maintaining the dubious distinction of being the National Crime Capital as well,***
- ***That the NCT of Delhi has become totally unsafe its inhabitants, particularly women, children and elderly, in the wake of ghastly crimes such as rapes, kidnaps and murders becoming order of the day,***
- ***That the people of NCT of Delhi live in perpetual fear as to whether the near and dear ones who are out on work would be able to return home safely at the end of the day,***

- *That due to subversive, disruptive and anti-people instructions given to Delhi Police by Union Government through Lt. Governor, the elected Government is not in a position to enlist any support from Delhi Police even in enforcing central laws such as Essential Services Maintenance act, when needed,*
- *That the elected Chief Minister and Ministers can be attacked in their own office and at the public events hosted by the elected government,*
- *That those who attack the Chief Minister have the audacity to file complaint against the elected Chief Minister and pressure Delhi Police to register FIR against the Chief Minister,*
- *That the Delhi Police, in spite of its officials on duty being eye witnesses to such attacks on the Chief Minister, tries to hush them up with grossly illogical arguments which have turned the Delhi Police sadly in to a butt of ridicule,*
- *That the Delhi Police is not accountable to the elected Government, the Legislators and the Legislative assembly who are charged with the responsibility of looking after overall well being of the people of Delhi,*
- *That the seven Members of Lok Sabha belonging to BJP and the recently retired three Members of Rajya Sabha belonging to Congress have no proven record of their efforts to hold Delhi Police to account through Parliament, with 7 BJP Members of Lok Sabha actively assisting Delhi Police in spreading anarchy and harassment of ordinary people,*

- *That the elected government is not in a position to remove these grave deficiencies in the service of people on account of certain limitations imposed by the Constitution which kept 'police' out of the purview of the elected Government,*
- *That it has become a huge and unassailable challenge with the elected Government to discharge its functions and to look after public interest in the Absence any control whatsoever over Delhi Police; and*
- *That it is necessary with the elected Government to have certain degree of control over law enforcing agencies to ensure that decisions taken by it in public interest are implemented thereby contributing to welfare of people and also the public order,*

Resolves that:

The Union government take immediate steps, in larger public interest, to initiate necessary steps to bring the police in Delhi under the control of the elected government of NCT of Delhi and to make it accountable to the Legislative Assembly as is the case with any other State in the Union of India, by way of amending the Constitution and relevant laws, and

In the meanwhile, pending such amendments, necessary steps be initiated by the Government of India to develop certain powers to the elected Government so that it is in a position to have control over Delhi Police in implementing its decisions, including the decision to invoke ESMA from time to time with smooth running of civic services in public interest and in promotion of public order and for providing for security of its functionaries in discharge of their duties.'

अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर अभी कुछ ही दिन पहले दिल्ली सेक्रेटेरिएट में मुख्यमंत्री के कार्यालय के बाहर दरवाजे के बिल्कुल बाहर निकलते ही एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री के ऊपर हमला किया।

सबसे पहले उस व्यक्ति ने मिर्ची निकाल के मुख्यमंत्री के ऊपर फेंकी, मुख्यमंत्री जी ने चश्मा पहना हुआ था तो उनकी आंखों में मिर्ची नहीं जा पाई। फिर उस व्यक्ति ने धूसा मारा जिससे उनका चश्मा टूट गया, चश्मा नीचे गिरा, उनको चोट लगी और सबसे बड़ी आश्चर्य की बात है कि दिल्ली सेक्रेटेरिएट के अंदर कोई भी व्यक्ति अगर जाता है तो उसकी पूरी तलाशी ली जाती है। वो व्यक्ति दिल्ली सेक्रेटेरिएट के अंदर गया, मिर्ची का पूरा पैकेट लेकर गया, मिर्ची कोई ऐसी चीज तो है नहीं कि सेक्रेटेरिएट के अंदर बैन है या पेन है या पेंसिल है कि ले जाने की आवश्यकता थी। उसको पहले जाने दिया गया, उसके बाद मुख्यमंत्री के दफ्तर के बिल्कुल बाहर बैठने के लिए अलाउ किया गया; जहाँ पर मतलब बड़ा ही अजीब सा एक वाकया है और उससे भी बड़ी अजीब बात है कि सबसे पहले टीवी पर दिखाया गया कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है कि वो मुख्यमंत्री से मिल रहा था तो उसके ये जब ये पैकेट निकल गया, उसके अंदर से मिर्ची निकल गयी, तो दिल्ली पुलिस से इस पूरे वाकया को छुपाने की कोशिश की, जनता को गुमराह करने की कोशिश की, और एक सुनियोजित अटैक को उन्होंने एक छोटी सी बात बता कर कि भई वो मिलने आया था, उसकी जेब में से मिर्ची गिर गयी, खत्म करने की कोशिश की। वो तो बाद में जब सीसीटीवी फुटेज आई और सीसीटीवी फुटेज के अंदर उस हमलावर का चित्र साफ-साफ दिखाई दिया और वो हमला करते हुए दिखा तब दिल्ली पुलिस ने माना कि हाँ जी, हमला तो हुआ है। और ये पहला वाकया नहीं था कि एक मुख्यमंत्री के ऊपर इलेक्टेड मुख्यमंत्री के ऊपर पिछले साढ़े तीन

साल के अंदर ये चौथा वाकया था, जनवरी 2016, छत्रसाल स्टेडियम के अंदर हजारों लोग मौजूद थे, वहाँ पर पुलिस का पूरा इंतजाम था। पुलिस के रहते हुए, चारों तरफ होते हुए एक महिला ने मुख्यमंत्री के ऊपर अटैक किया और मुख्यमंत्री के ऊपर कुछ सामान फेंका जिसमें इंक थी, उनके मुँह, चेहरे के ऊपर, कपड़ों के ऊपर, सब पे इंक लगी, तो बम्ब भी हो सकता था। पुलिस पूरी तरह से नाकाम रही। मैं पूछना चाहता हूँ कि भारत के इतिहास में आज भी 29 राज्य हैं, बाकी मुख्यमंत्री भी हैं, केन्द्रीय मंत्री भी हैं, कितने लोगों को... जब उनकी पब्लिक सभा होती है, जिसको वेल प्लान्ड सभा कहा जाता है, कितने लोगों को इतने पास तक जाके अटैक करने का या उसको करने का मौका दिया जाता है।

जनवरी, 2016 की बात है, इस सदन को मैं बताना चाहूँगा तीन साल पूरे होने वाले हैं, 34 महीने हो चुके हैं; उस अटैक का स्टेटस क्या है? ज्यादातर लोग समझेंगे कि भई जो कल्ट्रिट है, उसको सजा मिल चुकी होगी, वो जेल में होगा। उसका स्टेटस है कि इन्वेस्टिगेशन इज गोईंग ऑन। जैसे बीरबल की खिचड़ी है ना, कि वो खिचड़ी चढ़ गयी, अब उतरेगी नहीं कभी भी। तीन साल पूरे होने वाले हैं। अभी तक इन्वेस्टिगेशन पूरी नहीं, चार्जशीट की तो बात ही छोड़ दीजिएगा। क्योंकि चार्जशीट करी नहीं है, उसको सजा दिलानी नहीं है; प्रायोजित है। मैं इसलिए कहना चाहता हूँ चारों के चारों जो हमले हुए, चारों की कड़ियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं, अलग-अलग नहीं है। उसके बाद दिल्ली सेक्रेटेरिएट के अंदर जो हाई सिक्योरिटी एरिया है, मुख्यमंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस के अंदर एक व्यक्ति ने जूता मारा... फेंक के मारा। उसकी भी जाँच का आज तक कुछ पता नहीं, क्या हो रहा है। अभी पिछले महीने सिग्नेचर ब्रिज का उदघाटन हुआ, उस उदघाटन के पहले बीजेपी के कुछ नेताओं ने पहले से डिक्लेयर कर दिया कि हम वहाँ पर जाके

दंगा फसाद करेंगे, हम उद्घाटन नहीं होने देंगे, हम उद्घाटन पहले कर देंगे, हम काले झण्डे ले के जाएँगे।

अध्यक्ष महोदय, एक सरकारी कार्यक्रम था, उस सरकारी कार्यक्रम के अंदर सरकारी स्टेज लगाया गया था, मुख्यमंत्री जी और पूरा कैबिनेट साथ में कई सांसद भी साथ में थे, कई हमारे एमएलए साथ में थे, अध्यक्ष महोदय, आप भी खुद वहाँ पर मौजूद थे, स्टेज के जस्ट टच करते हुए जो लोग प्रदर्शन कर रहे थे... ठीक है, प्रदर्शन करना अलाउड होगा, और उसका डिस्टेंस होता है न कुछ... के जो प्रदर्शन करने गए थे, प्रदर्शनकारी थे या वो कुछ भी करना चाहते, हमला करना चाहते, हमलावर थे, उनको स्टेज को टच करने दिया गया था, स्टेज तक पहुँचने दिया गया, सारे लोग काले झण्डे लेके गए थे, स्लोगंस लेके गए थे, उनके पास बोतलें थीं। जब मुख्यमंत्री वहाँ पर भाषण दे रहे थे वो बोतलें फेंक रहे थे; स्टेज पे, जिसकी विडियोज़ है कि बोतलें फेंक रहे थे, पत्थर फेंक रहे थे और पुलिस तमाशबीन थी। अति तो तब हो गयी जो विडियोज़ देखने को मिली... एक विडियो के अंदर पुलिस के एक उच्चाधिकारी को भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी जी मारते हुए दिखे, पहले उन्होंने उसको धक्का दिया, उसको थप्पड़ मारा, वो सब को दिखता है, साफ साफ दिख रहा है। दूसरे विडियो के अंदर एक डीसीपी शायद मि. ठाकुर उनका नाम है, उनका कॉलर पकड़ा हुआ है और धक्का दे रहे हैं जो कि फोटो भी छपी अगले दिन अखबार में। नहीं-नहीं, ठाकुर साहब की फोटो छपी थी, मीणा साहब एडिशनल डीसीपी थे, उनको थप्पड़ मारा, उनको धक्का दिया। तीसरी विडियो के अंदर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी जी कहते हैं, "मैंने सारे पुलिस वालों की जन्म कुंडली बना ली है, कौन कौन पुलिस वाले यहाँ पे थे, उनको मैं देख लूँगा और उन्होंने देख भी लिया। "चार दिन के अंदर

देख लूँगा।” मैंने कहा कि चार दिन के अंदर मैं इनको देख लूँगा। अरे! देख लिया। भारत के इतिहास में ऐसी घटना मुझे लगता है, कहीं नहीं मिलेगी कि जहाँ पर ऑन ड्यूटी इतने उच्चाधिकारियों को किसी एमपी ने कैमरा के सामने मारा हो, कॉलर पकड़ा हो, धक्का दिया हो। देखिएगा, पुलिस वाला हो सकता है कि पद में एमपी साहब अपने आप को बहुत बड़ा मानते हों, पर वर्दी की कुछ इज्जत करनी चाहिए। कुछ तो संस्कार होने चाहिए कि कॉलर पकड़ने से पहले वो सोचने की जरूरत थी कि उन्होंने एक डीसीपी का कॉलर पकड़ा। “किस लिए?” कहते हैं, “मुख्यमंत्री को भाषण नहीं करने देंगे, मंच पे नहीं चढ़ने देंगे, हम मंत्रियों को आगे नहीं जाने देंगे।” पार्टी के, जो दिल्ली राज्य के अध्यक्ष बीजेपी के हैं, उन्होंने वहाँ पर पूरा हुड़दंग किया। उसके बाद उससे भी भयानक स्थिति ये है अध्यक्ष जी, कि जिन लोगों ने हुड़दंग किया, जिन लोगों ने सरकारी कार्यक्रम में बाधा पहुँचाई, जिन्होंने बोटलें फेंकी, जिन्होंने पत्थर फेंके, जिन्होंने उच्चाधिकारियों को, पुलिस अधिकारियों को मारा, जिन्होंने कॉलर पकड़े, जिन्होंने धक्का दिया, उन्होंने ही एफआईआर करा दी और एफआईआर किसके खिलाफ कराई? दिल्ली के मुख्यमंत्री के खिलाफ! और वो ऐसा है, लिख भी ली गयी और अभी दो दिन पहले अखबार में पढ़ा कि पुलिस कह रही है कि मुख्यमंत्री को भी जाँच के लिए बुलाया जाएगा। तो मतलब इस तरह की इंकवायरी, एक तरफ तो 2016 में मुख्यमंत्री के ऊपर जो हमला हुआ, आज तक उनकी जाँच नहीं कर पाए, जाँच चालू है, जो जूता फेंका, उसकी जाँच चालू है और सिग्नेचर ब्रिज में कहते हैं, “हम उनकी जाँच करेंगे। मुख्यमंत्री को भी जाँच में बुलाया जाएगा।”

इसको देख के ऐसा लगता है कि जो दिल्ली पुलिस है, अपना काम न करके वो राजनीतिक हस्तक्षेप के अंदर दबी हुई है।

आज हम जहाँ भी जाते हैं... दिल्ली के अंदर आप कहीं भी जाएं, सारे यहाँ पर माननीय सदस्य गण हैं, किसी भी मीटिंग में हम जाते हैं, हर मीटिंग के अंदर एक मुद्दा जरूर आता है— लॉ एण्ड ऑर्डर। हर गली में हर मौहल्ले के अंदर चोरियाँ बढ़ गई हैं, छेड़छाड़ की घटनाएं बढ़ गई हैं, गाड़ियाँ चोरी होने लगी हैं, चेन स्नेचिंग बढ़ गई है...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: भई विजेन्द्र जी, प्लीज बैठिए, बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप जारी रखिये।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: जी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विषय क्या चल रहा है, विषय को कहाँ लेकर जा रहे हैं!

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, ऐसे नहीं चल पायेगा।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सोमनाथ जी, बैठ जाइए। आपको बोलने का मौका मिलेगा जी। आपको बोलने का मौका मिलेगा, आप अपनी बात रखियेगा। आप सदन का समय खराब कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठ जाइए, बैठिए बैठिए।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: जी, मैं बैठा हूँ ना।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: चुने हुए प्रतिनिधि बोतले फेंकते हैं मंचों पर।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: जी, बैठ जाइये।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए। झा साहब, बैठिए। ऋतुराज जी, बैठिए जी। ये तरीका ठीक नहीं है।

श्री ऋतुराज गोविंद: नरेन्द्र मोदी का चरित्र क्या है, सारा देश जानता है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, ये कोई तरीका है जिस ढंग से आप बोल रहे हैं? न तो आपने बोलने की इजाजत ली... आप बोलना शुरू हो गये। पर्ची मुझे भेज रखी है आपने नाम बोलने की। जब आप की बारी आयेगी, आप

बोलियेगा। नहीं, आपको नहीं बोलना है? मैं छोड़ देता हूँ इसको। आप अपना समय ले चुके हैं आप दस मिनट बर्बाद कर चुके हैं सदन का।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए प्लीज, ऋतुराज जी, बैठिए प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए प्लीज। जी, मैं आग्रह कर रहा हूँ, बैठिए आप। आप बैठिए जी। मैं चेतावनी दे रहा हूँ। आई एम गिविंग वार्निंग टू यू। नहीं, बैठ जाइए आप। बोल दिया आपने बीच में। सत्येन्द्र जैन जी, अच्छा बोल रहे थे।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: अलका जी, ये ठीक नहीं हो रहा है। मैं बार-बार आग्रह कर रहा हूँ, ठीक नहीं हो रहा है ये। ओमप्रकाश जी, बैठिए प्लीज, बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए टोकस जी प्लीज, अलका जी प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बस बस अब नहीं प्लीज।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मुझे पता क्या लग रहा है...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सोमनाथ जी, अब सदन शांत हुआ, आप बोलना शुरू हो गये। सोमनाथ जी, चुप रहिये जरा, सोमनाथ जी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सोमनाथ जी, बैठिए।

... (व्यवधान)

श्री ओमप्रकाश शर्मा: तुम्हारा सीएम सड़क पर लेट-लेट के माफी माँग रहा है। मैंने जो कुछ कहा था...

माननीय अध्यक्ष: ओमप्रकाश जी, वहाँ बैठिए आप।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ऋतुराज जी, ऋतुराज जी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ऋतुराज जी, बैठिए प्लीज, बैठिए। अलका जी, ऋतुराज जी, अलका जी, अब कोई नहीं बोलेगा। अलका जी, नोबॉडी विल स्पीक नाउ। सत्येन्द्र जैन जी, मंत्री जी खड़े हैं, उनको बोलने दीजिए प्लीज।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, जो बात मैं कर रहा था; एक बात तो सिद्ध हो रही है कि विपक्ष उस बात से सहमत है क्योंकि उस मुद्दे को ये डायवर्ट करना चाह रहे हैं, सुनना नहीं चाह रहे हैं, शोर मचाना चाह रहे हैं क्योंकि इस बारे में पूरी सहमति है। अभी हमारे माननीय विधायक कमांडो साहब ने एक खबर दी, मेरे को बताया है कि जो मिर्ची कांड हुआ

है, जिसने मिर्ची कांड किया है, उसका घर का नंबर है सीबी-76 और बराबर वाला घर जो सीबी-77 था; भाजपा के पूर्व विधायक के पास कई सालों से था। वो ही बात है ना? तो ये बात आप ही बताइये कि क्योंकि ये उसी विधानसभा में रहते हैं, इनको पता है और जिसने ये कुकृत्य किया है, वो बीजेपी का एक्टिव वॉलेंटियर है...

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: दरअसल जो बात लॉजिक से न हो, जो बात

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: वो दिल्ली पुलिस बतायेगी एण्ट्री कैसे हुई, दिल्ली पुलिस बतायेगी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आपको समय मिलेगा, बोल लेना। आपको जी... ऐसे नहीं चलेगा। आपको समय मिलेगा। तब बोलना जब समय मिलेगा।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: अरे! नाम आया हुआ है। क्या बात करते हो आप! बैठिए। जो मर्जी आये बोलेंगे? जो मर्जी आये बोलें फेकेंगा। बैठ जाइए आराम से।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: देखिए जी, बैठ जाइए, मैं आग्रह कर रहा हूँ। बैठ जाइए जरा। हाँ।

सुश्री राखी बिड़ला: बार बार ये बोलते हैं एण्ट्री कैसे हुई। इनका गृह मंत्री बतायेगा, राजनाथ जी बतायेगें, दिल्ली पुलिस बतायेगी; एण्ट्री कैसे हुई।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: राखी जी, प्लीज... बैठिए, राखी जी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सोमनाथ जी, वो पुलिस करेगी अपने आप। हम आग्रह कर रहे हैं। सदन आज हो रहा है, प्रस्ताव पारित होगा। चलिए, सत्येन्द्र जी।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, पहली बात तो विपक्ष इस बात से सहमत है कि जो-जो चीजें... मैं आरोप लगा रहा हूँ वो उससे बिल्कुल सहमत है, उनको कोई उसमें आपत्ति नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: झूठ बोल रहे हैं आप...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, ये तरीका ठीक नहीं है अब।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैं बार-बार...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: क्या?

श्री विजेन्द्र गुप्ता: उन्होंने झूठा बोला है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: अगर आपको लगता है...

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: बिल्कुल।

माननीय अध्यक्ष: आप राइटिंग में दीजिए, आप राइटिंग में दीजिएगा।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: हाँ, दीजिएगा, झूठ बोला है तो।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए आप। आप लिखित में दीजिए आप। आप बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं दुबारा से रिपीट कर देता हूँ।
दुबारा से रिपीट कर रहा हूँ सुन लो।...

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अरे! सुन लो भाई, सुन लो। अरे दुबारा बता देता हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, लगता है...

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: मैं दुबारा पहले रिपीट कर दूँ...

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अरे! सुन लीजिए...

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: हाँ, बता रहा हूँ, दोनों बता रहा हूँ। दो सवाल हैं आपके, दोनों का जवाब दे रहा हूँ। पहली बात, मैं दुबारा से रिपीट कर देता हूँ मैंने क्या कहा है। अभी कमांडो सुरेन्द्र सिंह जी, माननीय विधायक इस सदन के, उन्होंने मुझे इंफोर्मेशन दी है कि जिसने मिर्ची डाली, जिसने घूसा मारा, जिसने आक्रमण किया, उसका घर का नम्बर सीबी-76 है और उसके बराबर वाला घर सीबी-77 है।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: चलो कोई बात नहीं, मैं इंफोर्मेशन दे रहा हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: आप जितनी है, सुन लें।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बोलने तो दे नहीं रहे विजेन्द्र जी। हर एक सेकण्ड में टोक रहे हैं। आप बोलने दे नहीं रहे। आपको बोलने का मौका मिलेगा ना। आप नोट करिए, फिर बोलिएगा।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: चोर की दाढ़ी में तिनका।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप खिचड़ी बना रहे हैं बेमतलब के लिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बोलिएगा, आपको कोई रोक नहीं रहा है, आप बोलिएगा। आप बोलिएगा। चिंता ना करिए। बोलने का मौका मिलेगा आपको।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप पहले ही उसको, समय को खराब कर रहे हो।
चलिएँ

... (व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला: हिंदू बोलोगे, मुस्लिम बोलोगे। इसके अलावा तुम्हारे पास है क्या? ... (व्यवधान) फालतू बोले जा रहे हो, मंत्री को सुन लो।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: और मनोज तिवारी के बारे में कौन बताएगा?

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, विजेन्द्र जी, आपकी पार्टी के अध्यक्ष का भेजा मनोज तिवारी के बारे में कौन बताएगा? मैं खुद मंच पर था जब बोतलें फेंकी उसने। मैं खुद था मंच पर जब बोतलें फेंकी मनोज तिवारी ने। उसके बारे में कौन बताएगा? कौन बताएगा उसके बारे में?

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, कौन बताएगा उसके बारे में?

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: दूसरे...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: तो मनोज तिवारी का बोला है ना उन्होंने। उस पर आपको शर्म नहीं आती। उस पर आपको शर्म नहीं आती। बोतलें फेंक रहे हैं मनोज तिवारी। उसकी एक बार निंदा नहीं की आपने। मैं खुद मंच पर था। मैं खुद मंच पर था। मैंने बोतल कैच की है।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं फिर से रिपीट करता हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: पार्टी मत बनो। क्या पार्टी नहीं बने? क्या पार्टी बनाएं? अरे! सदन का अध्यक्ष वहाँ बैठा है और वो बोतले फेंक रहा है। मैंने देखा नहीं!

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बैठ जाइये। बंद करवा देंगे अभी। कल करवा दूँ बंद, चिंता ना करिए, कल हो जाएगा बंद सब कुछ। चलिए, शर्म नहीं आती है।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: दो मिनट, दो मिनट, चुप हो जाओ।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए यादव जी, बैठिए प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: वो उनकी आदत है।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं फिर से रिपीट करता हूँ। कई सारी जानकारियाँ निकल आएँगी। चोर की दाढ़ी में तिनका, एक शब्द है और एक मुहावरा है कि हमने कुछ बोला, वो चोर की दाढ़ी में तिनका।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: मैंने ये कहा कि अभी-अभी हमारे माननीय सदस्य ने मुझे एक खबर दी। उन्होंने बताया कि सीबी-76, मिर्ची वाले, अटेक करने वाले का है, सीबी-77 करण सिंह तंवर का है और उसके फेसबुक के ऊपर

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: भई आपकी बारी आएगी या नहीं आएगी? आपको नहीं बोलना है, आपको तथ्य नहीं रखने हैं? आप अपना समय और खराब कर रहे है।

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: हम ही न बोलें?

माननीय अध्यक्ष: नहीं, आप नहीं बोलना चाहते? आप नहीं बोलना चाहते? मैं छोड़ देता हूँ, काट देता हूँ, इसको नहीं बोलना है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आपको बोलना नहीं है क्या? आप नोट करिए, बोलिए।
सदन का कोई तरीका होता है ना।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: तो आप बोलिएगा ना उस वक्त। आपको बोलने का मौका मिलेगा अभी, बोलिएगा।

माननीय गृह मंत्री: ठीक है। अबकी बार शांति से सुन लीजिए। मैं दुबारा रिपीट करता हूँ। नहीं, तीसरी बारी, तिबारा रिपीट करता हूँ। कई बच्चों को समझ में नहीं आता। मैं तीसरी बारी में समझा देता हूँ।

... (व्यवधान)

श्री ओम प्रकाश शर्मा: पाँच बार बोलो ना।

माननीय गृह मंत्री: पाँचवी बार समझ में आएगा आपको। पाँच बार समझा देता हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ओम प्रकाश जी, फिर विजेन्द्र जी, आप बोले, ये सदन टोकाटाकी करे, मुझे मत कहिएगा।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैं बिल्कुल रेस्पेक्टफुली कह रहा हूँ...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: तो आप तथ्य रखिएगा ना। मैं रेस्पेक्टफुली आपसे कह रहा हूँ। जब सदस्य टोके तो आप...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बैठिए, आप बैठिए—बैठिए, प्लीज।

... (व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला: ऐसा है अध्यक्ष जी, एक बार मुझे बोलने का मौका दें। ये मंत्री जी को बोलने ही नहीं दे रहे हैं।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: राखी जी, बैठिए प्लीज।

... (व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला: इतनी देर से मंत्री जी खड़े हैं। बीच-बीच में आप बोलने लग जाते हैं।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: चलिए, जैन साहब। जैन साहब, रखिए प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: राखी जी, बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: राखी जी, अब बैठ जाइए प्लीज। राखी जी, बैठ जाइए अब।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, ... (व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला: तुम्हारे कहने से बोलेंगे हम?

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: राखी जी, अब कोई बात है ये? प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं सभी सदस्यों से प्रार्थना करूँगा कि आप कृपया इनकी बातों पर बहकाये में ना आँ। वो नहीं सुनना चाहते हैं। वो आपको प्रोवोक कर रहे हैं। आप प्रोवोक न हों। आप प्रोवोक होंगे, ये फिर कहेंगे, आपने ये बोल दिया। अभी विजेन्द्र गुप्ता जी ने जो शब्द यूज किए, ये सदन की गरिमा के लिए, अगर किसी ने अब कहना, रिपीट भी करना हो, तो आप गालियाँ नहीं दे सकते। आप कार्रवाई में देखिए कि क्या बोला आपने।

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: मैंने हमेशा सच बोला...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आपने झूठ बोला है। आपने बोला, झूठ बोल रहे हैं सदन में।

माननीय गृह मंत्री: उस शब्द को रिपीट नहीं कर सकते।

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: अध्यक्ष जी, मिस्लीड किया जा रहा है सदन को।

माननीय अध्यक्ष: आपने झूठ शब्द इस्तेमाल किया है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैं एक-एक चीज को अवॉएड कर रहा हूँ।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप बैठ जाइये। बैठ जाइये। वो चेलेंज कर रहे हैं वो रिपीट कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता: इन्होंने मिस्लीड किया है। इन्होंने मिस्लीड किया है।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अच्छा जी, चलो इस बात पर बाद में आएँगे।

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, मुझे लग रहा है, जो मुझे लग रहा है कि आप भी कपिल जी की तरह से बाहर जाना चाह रहे हैं।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ये कोई तरीका है। मैं बार-बार रिक्वेस्ट कर रहा हूँ। आपको परेशानी हो रही है, आपको परेशानी हो रही है कि कपिल बाहर चले गए। हम अंदर कैसे बैठे रह गए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, ओम प्रकाश जी, बैठिए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ओम प्रकाश जी, आपसे तो बात करना।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, दिल्ली शहर के अंदर किसी भी मीटिंग में हम जाते हैं, कहीं पर भी हम जाते हैं, एक मुद्दा बार-बार आता है कि चोरियाँ बहुत बढ़ गई हैं। पुलिस वाले कोई कार्रवाई नहीं करते हैं। छेड़छाड़ बढ़ गई हैं। आज नेशनल क्राइम ब्यूरो की ये रिपोर्ट कहती है कि दिल्ली के अंदर हीनियस क्राइम बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं और दिल्ली देश की कैपिटल नहीं, क्राइम कैपिटल भी बन गई है। दिल्ली के अंदर सरेआम आज गोली चलाने की घटनाएँ होने लगी हैं। कल बंदना जी की असेम्बली में मैं गया था...

... (व्यवधान)

श्री अजय दत्त: मेरे यहाँ भी कल एक मर्डर हो गया।

माननीय अध्यक्ष: भई, अब बैठ जाइये। ऐसे नहीं। उनको बोलने दीजिए।

माननीय गृह मंत्री: बंदना जी के यहाँ पर मीटिंग में गए तो वहाँ पर एक सज्जन खड़े हुए, कहते हैं, आज तक शालीमार बाग के अंदर छोटी-मोटी घटनाएँ तो रोज हुआ करती थी, चेन स्नैचिंग हो गई, झपट्टामारी हो गई, ये तो चलता था। कहते हैं, पिछले तीन महीने के अंदर 16 घटनाएँ गोली चलने की हुई हैं, 16 घटनाएँ गोली चलने की हुई हैं और शालीमार बाग जो कि दिल्ली का सबसे पॉश एरियाज में से एक है, उनका कहना ये था कि भई दिल्ली में रह रहे हैं, या हम कहते हैं कि गैंगवार के एरिया में रह रहे हैं। वो कह रहे थे कहीं आप ऐसा तो नहीं यू.पी. में रह रहे हो योगी जी की... एक सभ्रांत कॉलोनी के अंदर पिछले तीन महीने में 16

बारी गोली चलने की वारदात होना, दिल्ली के ऊपर... सोचने को मजबूर करता है।

सबसे बड़ी बात एक और है जब भी पुलिस की बात आती है, लॉ एण्ड ऑर्डर की बात आती है, उस चर्चा को चुप कराने की कोशिश की जाती है कि ये चर्चा नहीं होनी चाहिए जी। क्यों नहीं होनी चाहिए? ऐसा लगता है कि पार्टनरशिप है आपस में। बीजेपी के लोग पुलिस को सरेआम मारते हैं तो पुलिस कोई कम्प्लेंट ही नहीं करती। पुलिस के अधिकारी प्राइवेटली अभी हमारे संसद सदस्य मिलने गए थे, उनसे कहते हैं, “नहीं-नहीं, कोई बात नहीं, ऐसा चलता रहता है।” मतलब... पब्लिकली मारना, पब्लिकली कॉलर पकड़ना, धक्का देना, पुलिस के सबसे उच्च अधिकारी ने उनके सामने कहा, “नहीं, ये तो चलता है, इसमें तो कोई बात नहीं है।”

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: इसका मतलब इन लोगों को तकलीफ है कि पुलिस के बारे में कोई भी बात हो। मैं विपक्ष से पूछना चाहता हूँ कि जिस एरिया में वो रहते हैं, क्या वहाँ पर क्राइम कम हुआ? अगर वहाँ पर भी क्राइम बढ़ रहा है तो क्या लोग उनसे कहते हैं कि क्राइम बढ़ रहा है।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अब ये बार-बार ना, उसी मुद्दे पर ले जा रहे हैं।

फिर इनको तकलीफ बहुत होगी, दुबारा से मैं कह देता हूँ। देखो दो तरह के मुद्दे हैं, एक बार में समझ में नहीं आ रहा, पाँच में भी समझ नहीं आएगा तो क्या फर्क पड़ेगा? देखो जी, दीवारों के आगे कुछ भी बोल

लो क्या फर्क पड़ता है। और बीन बजाते रहेंगे हम, क्या होगा? तो कुछ को समझ में आएगा, कुछ को नहीं आएगा।

अध्यक्ष महोदय, ये कह रहे हैं कि एफआईआर क्यों नहीं कराई। सेक्रेटेरिएट के अंदर, बता दूँ, सिग्नेचर ब्रिज के अंदर हमला हुआ, मैं दिल्ली का होम मिनिस्टर हूँ, मैं उस टाइम मंच पर उपस्थित था, मुख्यमंत्री थे, सारी कैबिनेट थी, आप स्वयं वहाँ पे थे, मैंने पूरे वाक्या को, लिख कर, साथ में जितने ट्वीट्स के ऊपर वाट्सअप पे विडियो चल रही थी, उन विडियोज को डाउनलोड करके...

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: वो जवाब तो दे रहे हैं ना। विजेन्द्र जी, उससे आपको क्या परेशानी होती है? नहीं, उसको क्या परेशानी होती है? नहीं, क्या परेशानी होती है अब?

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नहीं, आपको क्या परेशानी होती है? क्योंकि आपके प्रदेश अध्यक्ष बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वहाँ गुंडागर्दी करते हैं, इसलिए परेशानी होती है, वो बोलते फेंकते हैं, इसलिए परेशानी होती है, दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष, सांसद को शर्म आनी चाहिए। मैं खुद मंच पर था, एफआईआर लिखवा दो, वो बता रहे हैं, सुन लीजिए।

माननीय गृह मंत्री: सुन तो लो, थोड़ी हिम्मत रखो, थोड़ी हिम्मत रखो।

माननीय अध्यक्ष: ऐसी शर्मनाक घटना! राजनीति के इतिहास में पहली बार देखी है मैंने। बोलिए, जैन साहब, बोलिए, बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री ओम प्रकाश शर्मा: आम आदमी पार्टी वाला काम मत करो, स्पीकर वाला करो।

माननीय अध्यक्ष: हाँ स्पीकर वाला करो, स्पीकर मंच पर बैठा था, इसलिए बोल रहा हूँ मैं। ऐसी शर्मनाक घटना राजनीति के इतिहास में मैंने पहली बार देखी है, किसी पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष इस ढंग की गुंडागर्दी करे, ये पहली बार देखी है मैंने।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, जिस दिन सिग्नेजर ब्रिज पर ये घटना हुई, अगले दिन मैंने सारी घटना को सिलसिलेवार लिखा।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: तुम मेरे मास्टर नहीं लग रहे। तुम्हारे से पूछ के नहीं बोलूँगा कि क्या बोलना है मुझे। मेरे मास्टर लग रहे हो क्या यहाँ पे? जो मेरे मन में आएगा, वो बोलूँगा। लिख के दे दो मेरे को। तुम चाहते हो कि तुम्हारी तमीज पे आ जाऊँ मैं। आता है मेरे को वो बोलना भी। सुन नहीं पाओगे।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: अरे! बता रहा हूँ ना सुन लो। चुप रह।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: इनको तमीज नहीं है, तमीज... सुनने की आदत भी नहीं है, अगर तमीज से बात करेंगे, सुन भी नहीं सकते ये। ओमप्रकाश जी, आपके बारे में तो बोल दिया तो ज्यादा ही हो जाएगा, अति हो जाएगी, आधा घंटा हो गया मेरे को।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: विजेन्द्र जी, मैं लास्ट वार्निंग दे रहा हूँ, मेरी लास्ट वार्निंग है, रिक्वेस्ट करके लास्ट वार्निंग दे रहा हूँ। क्या बार-बार टोका कर रहे हैं, आपने तमाशा बना रखा है।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आपकी बारी आएगी, बोलना। ये आया हुआ ना स्लिप। आपने लिख के भेजी है, आपने टाईम एक घंटा तो खराब कर दिया, आप लिख के भेजेंगे तो तभी तो बोलूंगा। तमाशा बना रखा है यहाँ। जैन साहब बोलिए।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, मैं देख रहा हूँ कि 35 मिनट हो गए मुझे खड़े हुए और 35 मिनट में, 35 सेकंड मुझे बोलने नहीं दिया गया। आप व्यवस्था दीजिएगा कि वन टू वन डायलॉग हो रहा है, ये मैं आपसे बात कर रहा हूँ।

माननीय अध्यक्ष: हाँ, बिल्कुल ठीक है।

माननीय गृह मंत्री: अगर मुझे बीच में टोका जाएगा, इस तरह की टोका-टाकी होगी, तो मैं व्यवस्था चाहूँगा कि उन सदस्यों को निकाल के बाहर किया जाए।

सुश्री राखी बिड़ला: बहुत बढ़िया!

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: जब इनको मौका दिया जाएगा, तब उनको बोलेंगे।

... (व्यवधान)

माननीय गृह मंत्री: मैं अध्यक्ष महोदय से बात कर रहा हूँ। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यही मुखातिब हूँ, आप ही को मैं बताना चाह रहा हूँ और

कुछ लोग जो क्लास में भी दंगा करते थे, वो यहाँ पे सदन में भी दंगा करते हैं। उनकी आदत सुधरने वाली नहीं है, पांचवी तक गए थे। तो अध्यक्ष महोदय, मैंने पूरे वाकया को सिलसिलेवार लिखा, ट्विटर के ऊपर वाट्सअप के ऊपर, सोशल मीडिया पे जो विडियोज थी, विडियोज को डाउनलोड किया; सीडी बनाई, मैंने दिल्ली के प्रिंसिपल सेक्रेटरी (होम) जो एसीएस (होम) कहलाते हैं, उनको पूरा लिख के भेजा कि इसको, दिल्ली पुलिस पे एफआईआर कराई जाए, एसीएस (होम) ने अगले दिन, अगले वर्किंग डे पर वो पुलिस को भेज दिया। पुलिस ने कोई एफआईआर नहीं करी। अगर पुलिस ने उसके ऊपर एफआईआर नहीं करी... अब ये कहते हैं कि जी, इसकी एफआईआर नहीं कराई आपने। पुलिस वहाँ पे मौजूद थी जिस टाइम मुख्यमंत्री के ऊपर हमला हुआ, पुलिस के लोग वहीं पे खड़े थे। तो एफआईआर कराने की जिम्मेदारी सत्येंद्र जैन की नहीं है, मैं तो वहाँ पर था नहीं, वहाँ पर पुलिस वाले खड़े थे, उन पर एफआईआर क्यों नहीं कराई? एफआईआर का मतलब है फर्स्ट इन्फोरमेशन रिपोर्ट। तो सबसे पहले उन्होंने फोन करके रिपोर्ट दी या नहीं दी आगे कि भाई साहब, यहाँ पे मुख्यमंत्री पे हमला हुआ है। वो मुझे समझ से बाहर है। कहते हैं, "एफआईआर नहीं की, एफआईआर नहीं की, एफआईआर नहीं की" हाँ जी, भाई साहब, सिग्नेचर ब्रिज की आपने एफआईआर नहीं की। दिल्ली सरकार ने लिख के दे रखा है, आज तक नहीं करी और किसलिए नहीं करी? बीजेपी के दबाव में नहीं करी, उसके अंदर सारे सेक्शन लिख के भेज रखे हैं कौन-कौन से सेक्शन बनते हैं इनके ऊपर, इन लोगों ने जो बदतमीजी वहाँ पर की है, देश के इतिहास में कभी किसी ने नहीं करी, जो गुंडागर्दी वहाँ पर करी है, किसी ने आज तक नहीं करी। अध्यक्ष महोदय।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मार्शल्लस विजेन्द्र गुप्ता जी को बाहर करें प्लीज, नहीं बिल्कुल अब मैं सहन नहीं करूँगा, बाहर करो, विजेन्द्र जी को, बाहर करें, आई विल नॉट अलाउ टू यू मैं किसी भी कीमत... बाहर करिए, बाहर करिए, नहीं, बाहर करिए, मैंने बार-बार वार्निंग दी आपको, जल्दी बाहर करिए। आपने मदारी वाला खेल समझा है! आधे घंटे से मैं देख रहा हूँ, आधे घंटे से देख रहा हूँ फिर आपने टोका है विजेन्द्र जी। नहीं, बाहर करिए, अरे! जगदीश जी से ही कुछ सीख लो, ले जाइए, ले जाइए। आप चिल्लाइए मत ज्यादा, नहीं चिल्लाइए मत, आप चिल्लाइए मत, कोई बात नहीं, आप जाइए आप। नहीं आपने अपना समय खराब कर दिया आपने। आप बोलना नहीं चाहते हैं, आपके पास बोलने को कुछ है नहीं, जिसको बोलना होता है, वो बोलता है, समझता है, मैंने तीन बार वार्निंग दी है। तीन बार वार्निंग दी है आपको। नितिन जी, प्लीज।

माननीय गृह मंत्री: अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर अगर दिल्ली सरकार किसी हड़ताल को रोकने के लिए एस्मा लगाती है, वहाँ पर कुछ कर्मचारी दंगा करते हैं, मार-पिट्टाई करते हैं, गुंडागर्दी करते हैं और दिल्ली पुलिस एस्मा को लागू करने से मना कर देती है; केंद्र का कानून है, हमारा तो कानून नहीं है, उसको भी लागू करने से मना कर देती है, मतलब फ्री फॉर ऑल, कि आप आइएगा, लोगों का सिर फोड़िएगा, खून निकलेगा, जो मर्जी निकले, दिल्ली पुलिस को कोई मतलब नहीं है। मतलब अराजकता की स्थिति बना देते हैं, फिर कहेंगे, “दिल्ली के अंदर अराजकता फैल गई है।” अरे! अराजकता फैलाने वाले तो आप हैं! आप देखिएगा ना, आपकी जिम्मेदारी है; दिल्ली पुलिस केंद्र सरकार के डायरेक्टली अंडर आती है; एल. जी. के थ्रू। अगर दिल्ली के अंदर कानून व्यवस्था की कोई भी दिक्कत आती है तो एल. जी. साहब जिम्मेदार हैं या केंद्र सरकार जिम्मेदार है।

और वो कहते हैं कि हमारी कोई जिम्मेदारी ही नहीं है। ये कैसे हो सकता है? दिल्ली के अस्पतालों... अगर अटैक होता है, डॉक्टर्स को पीटा जाता है, पुलिस से कहा जाता है, "सुरक्षा दे दीजिएगा।" आप दो आदमी यहाँ पे खड़ा कर दें।" कहते हैं कि हमारे पास टाइम नहीं है जी। "जिन्होंने अटैक किया, उनको पकड़ लीजिएगा।" तो भी, "टाइम नहीं है जी।" मतलब क्या होता है कि उन डॉक्टर्स को समझाना, पहले डॉक्टर पिटे भी और उसके बाद कहते हैं कि तुम्हें पकड़ के ले जाएँगे थाने में। "ले जाओ जी।" उनको दो दिन वहाँ बिठाते हैं तो कहते हैं कि कम्प्रोमाइज ही कर लो। मतलब हालात... ये एमएलए, ये सदन के जितने भी लोग बैठे हैं, कितने सारे एमएलएज को अरेस्ट किया गया, कितनों के ऊपर केस बनाए गए, मतलब मजाक बना लिया कि अगर किसी को अपना कोई केस सॉल्व करवाना हो, एफआईआर के अंदर लिख दिया कि एमएलए के दोस्त के भाई के, बहन के, चाचा के ताऊ का बेटे के लड़का था जी। वो सॉल्व हो जाएगा। उसी दिन उसके ऊपर कार्रवाई चालू हो जाएगी। उसके ऊपर लग जाएँगे, दिन और रात, सब कुछ छोड़ के दिल्ली पुलिस एक ही काम कर रही है विच हंटिंग... कि किस तरह से दिल्ली सरकार में जितने भी दिल्ली के अंदर विधायक हैं, सरकार के अंदर मंत्री हैं, उप मुख्यमंत्री को बताओ, उनको बुलाया गया, उनको फिक्स करने के लिए वो लगता है कि जैसे बोलते हैं ना कि उनको काम दिया गया है तो उस काम के पीछे लगे हुए हैं। जो असली काम है, उसको करने के लिए तैयार नहीं हैं। दिल्ली के अंदर इस सरकार के बनने से पहले एक व्यवस्था थी; जितने भी थाने थे, हर थाने के अंदर एक थाना लेवल कमिटी होती थी और उसके अध्यक्ष होते थे, विधान सभा के माननीय सदस्य और महीने में एक मीटिंग होती थी ताकि जनता की जो समस्याएँ हैं, थाना लेवल पर वो सॉल्व की जाती थी। इस केंद्र सरकार ने वो थाना लेवल कमिटी भी एल. जी. से

कहके भंग करवा दी। अब एक व्यवस्था थी, कई सालों से चल रही थी, कारगर थी, काफी कारगर थी, कहते हैं कि जी, हम डिस्ट्रिक्ट लेवल की कमिटी कर रहे हैं ना, डिस्ट्रिक्ट कमिटी क्या होती है? उसके अध्यक्ष होते हैं -एम. पी.। दिल्ली में सात एम. पी. हैं, सात के सात बीजेपी के हैं, वो तो रख ली, डिस्ट्रिक्ट कमिटी हो गई जिसके अंदर एक मीटिंग के अंदर बीस थाने... तीस थानों की मीटिंग होती है, चालीस थानों की मीटिंग होती है और एक इलाके में एक थाने को एक मिनट के करीब मिलता है। और तीन महीने या चार महीने में मीटिंग होती है। एक मिनट, एक पूरे इलाके के लिए... सोच के देखिये। क्योंकि थाना लेवल कमिटी के अंदर 67 एमएलए आम आदमी पार्टी के थे। थाना लेवल कमिटी को भंग कर दिया। क्योंकि उसकी अध्यक्षता एमएलए करते हैं। मैं तब मान लेता अगर डिस्ट्रिक्ट लेवल कमिटी भी खत्म कर देते, थाना लेवल भी खत्म कर देते। समझ में आता कि भई, चलो कोई लॉजिक था। डिस्ट्रिक्ट लेवल कमिटी की जरूरत है क्योंकि वहाँ बीजेपी के एमपी उसके अध्यक्ष हैं। थाना लेवल कमिटी की जरूरत नहीं है क्योंकि उसके अध्यक्ष आम आदमी पार्टी के एमएलए हैं। ये तो प्योर राजनीति है। सिर्फ राजनीति खेलने में लगे हुए हैं। दिल्ली की समस्याओं से मतलब नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, आज किसी भी एमएलए के पास कोई आता है कि मेरे घर में चोरी हो गई है क्या सॉल्यूशन है, किससे बात करें, किसको ये... बन्दना जी के यहाँ 16 बार गोली चली। बन्दना जी क्या कर सकती हैं? 16 बारी गोली चल गई अब... और अजय दत्त जी चिल्ला रहे हैं कि हमारे पर मर्डर कर दिया गया कल। किससे बोलें? कोई सुनने वाला ही नहीं है। तो दिल्ली शहर को जो देश की राजधानी है, उसको अराजकता का अड़्डा बना दिया गया है। और सबसे बड़ी बात ये है कि बिल्कुल

100 परसेंट जो इलैक्टेड गवर्नमेंट है, उसके बिल्कुल विमुख कर दिया गया है, उल्टा कर दिया गया है। उसकी बात नहीं मानेंगे जी। अरे भई, जनता के रिप्रेजेंटेटिव हैं ना। सरकार अलग चीज है। ये तो सारे रिप्रेजेंटेटिव्स हैं, जनता को ही तो रिप्रजेंट कर रहे हैं। जनता की बात तो कोई करेगा ना! कहते हैं, “नहीं, आप नहीं करेंगे।” ऐसा लगता है, दिल्ली शहर के अंदर 1947 से पहले की स्थिति है। देश तो आजाद हुआ पर दिल्ली नहीं हुआ आजाद। दिल्ली अभी भी अंग्रेजों के अधीन है। वो अंग्रेज कहाँ बैठे हैं? अब साउथ ब्लॉक में बैठे हैं, नॉर्थ ब्लॉक में बैठे हैं। उन्होंने दिल्ली की जनता को कोई आजादी नहीं दी। मैं आपके माध्यम से जो रेजूल्यूशन मैंने पेश किया है, मैं कहना चाहूँगा कि केन्द्र सरकार दिल्ली पुलिस को दिल्ली सरकार के अधीन करे। संविधान में संशोधन करे ताकि दिल्ली की जनता को सुरक्षा मोहैया कराई जा सके। लॉ एण्ड ऑर्डर की सिचुएशन ठीक की जा सके और जब तक, जब तक ये संविधान संशोधन नहीं होता तब तक कम से कम इतनी पॉवर दी जाये, कुछ न कुछ दी जाये ताकि कुछ कानूनों को सरकार अपने कामों को तो कर सके, जो आदेश दिये हैं, उनका तो पालन करा सके। अगर एस्मा लगाया तो उसको लागू तो कर सके। अगर हमारे पर्सनल हैं, हमारे लोग हैं, डाक्टर्स हैं इंजीनियर... साइट पे काम कर रहे हैं, उनकी सुरक्षा का तो ध्यान रख सके। अगर इतना तो कम से कम साथ-साथ किया जा सके, धन्यवाद, जय हिन्द।

माननीय अध्यक्ष: अन्य सदस्य भी चर्चा में भाग ले सकते हैं। श्री मदनलाल जी।

श्री मदन लाल: धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे इस बर्निंग टॉपिक पर बोलने का मौका दिया। मुझे याद है जब पहली बार 2013 में सॉरी 2013 में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी। वो भले ही 49 दिन

रही हो पर उन 49 दिन में इस दिल्ली की जनता ने वो राम राज्य देखा जिसकी वो सब लोग कल्पना कर रहे थे। जब उन्होंने आम आदमी पार्टी को भारी बहुमत से जिताया था। सीट भले ही 28 रही हों परंतु एक पार्टी के सहयोग से बनने वाली वो सरकार ने जिस तरीके से अपने उन चुनावी वायदों को पूरा करना शुरू कर दिया और उनमें सबसे बड़ा जो उनका वायदा था, वो था करप्शन फ्री दिल्ली को बनाना। एसीबी की मदद, उस समय उस तत्कालीन सरकार को थी। दिल्ली पुलिस सबसे ज्यादा अगर किसी से डरती है तो वो एसीबी से डरती है। क्योंकि एसीबी दिल्ली सरकार के अंडर थी। वो पूरा 49 दिन का समय ऐसा था कि अगर किसी पुलिस मैन ने किसी का चालान भी काटा हो तो पहले चालान काटता था पैसे बाद में लेता था और लोगों को लगने लगा कि अब दिल्ली से करप्शन खत्म हो जायेगी। दुर्भाग्यवश वो सरकार भले ही 49 दिन चली परंतु लोगों को लगने लगा था कि अगर दिल्ली में करप्शन को खत्म करना है तो इसी सरकार को लाना है। और अगली बार जब 2015 में इलेक्शन हुए तो दिल्ली की जनता ने भारी बहुमत के साथ उस आम आदमी पार्टी को जिताया जिससे करप्शन फ्री दिल्ली को करने का वायदा किया था।

2 मई, 2015 दिल्ली पुलिस के एक हेड कांस्टेबल को एसीबी ने 20 हजार रुपये रिश्वत लेने के आरोप में पकड़ा। अध्यक्ष महोदय, हद तो जब हो गयी जब एसीबी ने पकड़ा हो और दिल्ली पुलिस अपने थाने में एक किडनेपिंग का मुकद्दमा उन लोगों के खिलाफ करे जिन्होंने उस करप्ट हेड कांस्टेबल को पकड़ा था। बात कोर्ट तक पहुँची। उस हेड कांस्टेबल को कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने उसे जेल भेज दिया और दिल्ली पुलिस के उन अधिकारियों को जो उसे किडनेपिंग का मुकद्दमा बताकर एफआईआर दर्ज कर रहे थे, उनको प्रताड़ित किया, धमकाया। उसके तुरंत

बाद ही केन्द्र की सरकार को लगने लगा कि अगर एसीबी दिल्ली सरकार के पास रहेगी तो पुलिस सारी इस सरकार से डरने लगेगी। वो कोई गलत काम नहीं कर पायेंगे। उसी श्रेणी में तुरंत ही एसीबी को दिल्ली सरकार से छीन लिया गया।

महोदय 2013-14 में किसी एमएलए के खिलाफ सरकार के किसी मंत्री या चीफ मिनिस्टर साहब या डिप्टी सीएम के खिलाफ कोई मुकद्दमा इसलिए नहीं हुआ कि उस समय में सब लोग डरते थे कि अगर कोई गलत मुकद्दमा करेंगे तो मुसीबत होगी। परंतु एसीबी के चले जाने के तुरंत बाद चुने हुए प्रतिनिधियों के खिलाफ लगातार मुकद्दमों दर्ज होने लगे और जब-जब किसी एमएलए को पकड़ा जाता, कोर्ट पुलिस को फटकार लगाकर उसे वहीं जमानत देने लग गई। पर ये सिलसिला रुका नहीं। चाहे वो वाईस चेयरमैन, दिल्ली जलबोर्ड दिनेश मोहनिया का मामला हो। चाहे वो एमएलए गुलाब सिंह जी का हो जिन्हें पुलिस गुजरात से पकड़ लाई। मिनिस्टर इमरान हुसैन पर सैक्रेटेरियेट में हमला हुआ... आज दिन तक उसका कुछ नहीं हुआ। दिल्ली डायलॉग कमीशन के वाईस चेयरमैन आशीष खैतान जी के ऊपर हमला हुआ, उसपे कुछ नहीं हुआ। एमएलओ, एमएलए सुरेन्द्र कमांडो जब एक रेहड़ी पटरी वाले पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए एनडीएमसी के अधिकारियों से बात करने लगे तो उन निडर अधिकारियों ने उन पर एससीएसटी का मुकद्दमा दर्ज किया और हद तो तब हो गई, उस केस की, जब उनको जान-बूझकर सैटरडे के दिन जब डेजीगनेटेड कोर्ट छुट्टी पे थी, पेश किया गया। नीयत बड़ी साफ थी कि उन्हें जमानत नहीं मिलेगी। और मैं धन्यवाद करता हूँ दिल्ली की जूडिशियरी की निडरता की, निष्पक्षता की, कि बैठी हुई जो मैजिस्ट्रेट थी, जो डेजीगनेटेड कोर्ट भी नहीं थी—जज गोमती मनोचा, उन्होंने तुरंत ही उस दिन कमांडो सुरेन्द्र सिंह को

जमानत दे दी। पर दिल्ली पुलिस के हौसले पस्त नहीं हुए, वो लगातार ये ताक में रहते रहे कि जब-जब कभी मौका मिले, हम में से बहुत सारे एमएलएज के खिलाफ मुकद्दमें ऐसे हैं जिनका कोई उत्तर देना भी वाजिब नहीं लगता।

अध्यक्ष महोदय, मैं तीन मुकद्दमें... अभी आज के दिन कोर्ट में कॉन्टेस्ट कर रहा हूँ; वकील की हैसियत से। उनमें हमारे एक साथी हैं, सुरेन्द्र कमांडों जी का, मैंने बताया खत्म हो गया। दलाल साहब का...

सुखबीर दलाल पर एक मुकद्दमा दिल्ली पुलिस ने बनाया कि इन्होंने एक महाराष्ट्र में कोई चोरी के मामले को लेकर दिल्ली में एक आदमी वांटेड था। उसको पुलिस ने पकड़ा था और एमएलए सुखबीर दलाल ने पुलिस वालों की मौजूदगी में एसएचओ के सामने से उस मुलजिम को भगा दिया। अध्यक्ष महोदय, जब ये मुकद्दमा कोर्ट में भी आया, एडिशनल सेशन जज, पटियाला हाउस की कोर्ट में और जब हमने कहा कि वो ये बता तो दे कोई कागज तो दिखा दे कि वो मुलजिम वांटेड था। उसके खिलाफ कोई वॉरेंट था, उसके खिलाफ कहीं पुलिस ने कोई कार्रवाई कर दी, अरेस्ट करने की और जब तक वो गिरफ्तार नहीं हुआ। तब तक उसे गिरफ्तारी के बाद छुड़ाने का प्रश्न कहाँ हो गया और जज साहब ने पुलिस और प्रॉसिक्यूशन से जब ये पूछा तो इस बात को कहने में उन्होंने इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। उनके पास कोई जवाब नहीं है। वो मुकद्दमा खत्म हो जाएगा पर सवाल ये है कि पुलिस ने जिस एमएलए साहब को तंग करना था। उन्होंने अपने मकसद में कामयाबी हासिल की और इस पार्टी के विधायकों को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दूसरा दृष्टांत है; मेरे पड़ोस में महेन्द्र यादव जी बैठे हैं, इनके ऊपर एक मुकद्दमा बनाया कि एक तीन साल की लड़की के साथ रेप हो गया था इनके क्षेत्र में। पुलिस डिमॉस्ट्रेट

कर रहे थे लोग। वहाँ से निकलते हुए ये भी एसएचओ से बात करने लग गए और उस बात करने का खामियाजा इतना भुगतना पड़ा कि पुलिस ने उस डिमोंस्ट्रेशन के बाद एक मुकद्दमा दर्ज किया जिसमें एमएलए साहब को भड़काने वाला बताया पर जब कोर्ट में गवाही शुरू हुई और जब मैंने फिर उस केस के आईओ से क्रॉस एग्जामिन करना शुरू किया तो वो ये मान गए कि जब लोग भीड़ में पत्थर बरसा रहे थे वो भीड़ वहाँ पहले से मौजूद नहीं थी। नए लोग आए थे और उस समय एमएलए साहब एसएचओ से बात कर रहे थे। तो भड़काने का प्रश्न कहाँ से आया? जज साहब को बड़ा अचरज लगा! ये मुकद्दमा भी आज देर-सवेर बरी हो जाएगा। मुझे... तीसरा मुकद्दमा एमएलए ऋतुराज जी का... करने का अवसर अभी मिला हुआ है। उन पर आरोप है कि उनके क्षेत्र में जेई (एमसीडी) अनऑथोराइज कंस्ट्रक्शन को तोड़ने गया था। एमएलए साहब ने उस जेई के कॉलर को पकड़ा, उसे धमकाया पर जब कोर्ट में गया और उससे क्रॉस एग्जामिनेशन हुआ। तो ये मान गया कि मैं भरोसे के साथ नहीं कह सकता कि मेरा कॉलर पकड़ने वाले एमएलए ऋतुराज जी थे। तो जो यहाँ कोर्ट में जाने के बाद गवाहों का रवैया, गवाहों की बोली, गवाहों की भाषा बदलती है। तो मेरा ये मानना है कि ये पुलिस में भी बदली हुई होगी और इन सबके खिलाफ जान-बूझकर मुकद्दमा बनाए हुए हैं। जहाँ कोई गवाह नहीं है, वहाँ मुकद्दमे बन रहे हैं।

19 फरवरी, 2018, सीएम साहब के घर में दो सीएम, डिप्टी सीएम, 11 विधायक। वहाँ डिप्टी सीएम वहाँ चीफ सैक्रेटरी। उस कमरे से निकलते हुए सहजभाव से जाते सीसीटीवी कैमरे में दिख रहे हैं। वो रात को एलजी से मिलते हैं, सुबह पुलिस से मिलते हैं, एफआईआर शाम को होती है। उनका मेडिकल ऐविडेंस मेडिकल एग्जामिनेशन शाम को हो रहा है। वो ऐलिगेशन

लगा रहे हैं कि मुझे इन लोगों ने पीटा जिसके कोई गवाह नहीं हैं। एक मुकद्दमा बनता है और मुकद्दमा किस पर बनता है चीफ मिनिस्टर साहब पर कि उन्होंने उकसाया। जब कि उस एफआईआर में कहीं कोई ऐसी भाषा नहीं लिखी गई जिससे ये पता चले कि वो सीएम या डिप्टी सीएम ने और उन विधायकों ने जिनका नाम वहाँ मारने-पीटने में नहीं है। किसी को उकसाने में दिखाया गया हो। फिर भी एक मुकद्दमा बना, वो मुकद्दमा भुगत रहे हैं। क्योंकि एक सोची-समझी नीति के तहत इस पार्टी को, इस पार्टी के शीर्ष नेताओं को इस पार्टी के विधायकों को कमजोर करने की नीति या सोची-समझी चाल के तहत की जा रही है। सर, 4 नवम्बर, 2018 सिगनेचर ब्रिज का उद्घाटन... उससे पहले मैं याद दिला दूँ। सेन्ट्रल गवर्नमेंट ने दिल्ली में मेट्रो रेल का उद्घाटन किया था, वहाँ सीएम साहब को नहीं बुलाया था। बहुत सारे लोगों ने इस पर शोर मचाया, नाराजगी जाहिर की और स्वाभाविक रूप पर क्योंकि सीएम साहब को नहीं बुलाया गया था, वो नहीं गए।

माननीय अध्यक्ष: मदन लाल जी कन्क्लूड करिए, प्लीज।

श्री मदन लाल: आईटीओ पर सर, एक वॉक-वे बना। सीएम साहब को उसमें इन्वाइट नहीं किया था, वो नहीं गए। सिगनेचर ब्रिज में एमपी मनोज तिवारी जी को इन्वाइट नहीं किया गया था। अगर वो वहाँ गए हैं और वो वहाँ जबरदस्ती उस मंच पर चढ़ने की चेष्टा करते हैं तो गलती उनकी थी। मुकद्दमा किसके ऊपर? अमानतुल्लाह के मुकद्दमा। काहे का? 308 का। जान से मारने की कोशिश करने का। पर काहे की जुगता कोशिश थी वो जबरदस्ती स्टेज पर चढ़ रहे थे। इन्होंने केवल रोका और उन्होंने क्या किया? वहा एडिशनल डीसीपी रैंक के एक आईपीएस आफिसर का कॉलर पकड़ा, दूसरे को धक्का दिया, एसीपी मीणा को परिणाम भुगतने की

धमकी दी जिसकी वजह से वो ट्रांसफर भी कर दिए गए हैं। सर, ये जान-बूझकर करने की कोशिश की जा रही है और जिस तरीके से लगातार एमएलएज के खिलाफ या हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, डिप्टी सीएम साहब उनके खिलाफ मुकदमे दर्ज हुए हैं, उससे कहीं न कहीं एक बात साफ है कि जितना ज्यादा से ज्यादा पुलिस की कोशिश है कि इन लोगों को बदनाम करो, दुःखी करो; चाहे उसका कोई असर नहीं है कि कोर्ट में जाते ही उनको जमानत मिल जाती है। उसके बाद भी वो लगातार कोशिशें जारी हैं और उसका परिणाम है कि जो काम स्मूथली होना चाहिए, वो नहीं हो पा रहा है। बार-बार काम में रोड़ा अटकाने की कोशिश की जाती है। लोग अगर लॉ एण्ड ऑर्डर के खिलाफ बोलना चाहेंगे तो उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाएगा, उन्हें परिणाम भुगतने की धमकी दी जाती है। हालाँकि पीछे कुछ एमएलएज हैं, बहुत दुखी मन से कहा कि दिल्ली पुलिस के सभी अफसरों को एक करोड़ रुपये की अनुदान राशि जो उनके वीरगति को प्राप्त करने के बाद दी जाती है, उसे विदड़ों कर दिया जाए। क्योंकि इसी सरकार ने शुरू की थी। मुझे अच्छी तरह याद है कांस्टेबल सुरेन्द्र नाम का एक सिपाही था। जो शराब माफिया के साथ लड़ते हुए आयानगर के जंगलों में शहीद हुआ। तब श्रीमान केजरीवाल जी ने ये पहली मर्तबा... उससे पहले ऐसी बेवाओं को पहली तत्कालीन पुरानी सरकारें सिलाई की मशीन देकर अपने कर्तव्य निर्वाहन का पालन करती रही हैं। पहली बार थी माननीय केजरीवाल जी ने कहा कि जो कर्तव्य परायणता की लाइन में अपने देश के लिए न्यौछावर होगा, उसको एक करोड़ रुपये की राशि दी जाएगी और वो दी जाने लगी। पर जब हमारे कुछ साथियों ने कहा तो माननीय श्रीमान केजरीवाल जी... मैं उनको धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपने एमएलएज की बात को भी नकारते हुए कहा कि दिल्ली पुलिस के ये लोग हमारे भाई हैं, हमारे साथी हैं, वीर हैं, बहादुर हैं। हमको उनका ध्यान रखना पड़ेगा

और रखना चाहिए। मैं भी इस बात से सहमत हूँ, मेरे साथी भी सहमत हैं, हम सब सहमत हैं।

माननीय अध्यक्ष: मदन जी अब कंक्लूड करिए मदन जी, प्लीज।

श्री मदन लाल: सर, हमने ये कहा, केवल एक बात का भरोसा नहीं कर पा रहे हैं कि क्या वो अधिकारी जो इस तरह के एक्शन ले रहे हैं जिनको पता है अच्छी तरह कि वो गलत कर रहे हैं, ये कोर्ट में सस्टेन नहीं कर पाएगा। फिर भी वो लगातार अपनी हरकतों से बाज नहीं आते और जान-बूझकर हम लोगों को केवल इसलिए तंग करना चाहते हैं कि ये लोग काम न कर पाएँ। जिसकी कड़े शब्दों में भर्त्सना होनी चाहिए और मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि दिल्ली पुलिस को दिल्ली सरकार के अधीन कर देना चाहिए, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: श्री नितिन त्यागी जी।

श्री नितिन त्यागी: धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय कि आपने इस टॉपिक पे बोलने का मौका दिया। आज संविधान दिवस है। कांस्टिट्यूशन और कांस्टिट्यूशन का प्रिम्बल्स सर, आज आपने पढ़वाया और कांस्टिट्यूशन का जो प्रिम्बल है, वो बात करता है 15-16 चीजों के बारे में — ***Justice, Social-Economical and Political liberty of thought, Expression, Belief, faith and worship, Equality of Status and of Opportunity and to promote among them all fraternity, assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the nation.***

ये पूरा का पूरा जो प्रिम्बल है। ये पूरे के पूरे हमारे देश में जितने भी लोग हैं, सबको एक समानता मिले, उसी तरफ फोकस करता है। सबको बराबर के राइट्स मिलें, सबको बराबर की इज्जत मिले, सबको बराबर का

जस्टिस मिले, सबको बराबर का न्याय मिले। यहाँ तो दिल्ली में देख रहे हैं, बराबर की पुलिस की सुरक्षा ही नहीं मिल रही है। हम लोग जो इस असेम्बली का पार्ट हैं या केन्द्र में बैठे सांसद जो केन्द्र में सरकार चला रहे हैं। हम लोगों को आगे बढ़ के इस प्रिम्बल की, इस कांस्टिट्यूशन की रक्षा करनी चाहिए और आज दिखाई दे रहा है कि एक पार्टी जो कि केन्द्र में बैठी है, उसके नेतृत्व में किसी तरीके से इस पूरे के पूरे कांस्टिट्यूशन की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं।

गुलाब सिंह हमारे एक एमएलए हैं सर, आज यहाँ पर नहीं हैं। उनको ये ही दिल्ली पुलिस बहुत एक्टिव तरीके से जा के गुजरात से अरेस्ट करके लाती है। ला के उनको पेश किया जाता है कोर्ट में और जज कहता है कि इसको अरेस्ट करने का मतलब ही नहीं बनता। यहीं दिल्ली के अन्दर, यहाँ के एक पदाधिकारी चीफ सैक्रेटरी साहब एक झूठा आरोप बहुत सारे विधायकों पे लगाते हैं जिसका कोई प्रूफ, कोई प्रमाण कहीं नहीं है और हमारे दो एमएलएज को अरेस्ट कर लिया जाता है, उठा लिया जाता है। जैसे वो बहुत बड़े क्रिमिनल्स हों। बाकियों को पूछताछ के लिए बुलाया जाता है और उसी के रेप्रेशन में, उनके बहकावे में आके बहुत सारे लोग मिलके एक मंत्री के ऊपर हमला करते हैं जो कि पूरा का पूरा कैमरे में कैद है कि मंत्री के ऊपर हमला हो रहा है और जो मार-पीट कर रहे हैं, उनकी शक्लें भी आ रही हैं। उनके ऊपर कोई एक्शन नहीं होता है। ये मैं अभी सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रहना चाहता। ये आम आदमी पार्टी के विधायक और बीजेपी के विधायक। पर इसके बारे में बोलना जरूरी है।

अभी ओम प्रकाश जी चले गए यहाँ से बाहर। ओम प्रकाश जी का पूरा का पूरा वीडियो आया था टीवी पे। बुरी तरीके से एक लड़के को पीट रहे थे ये पार्किंग में... पटियाला हाउस कोर्ट थी शायद और उसमें पुलिस

कहती है, "आपस में धक्का-मुक्की हो गई। कोई एक्शन नहीं किसी तरीके का। कोई अरेस्ट नहीं। एक बड़े गुंडा प्रवृत्ति के इनके सांसद हैं, कभी वो सील तोड़ देते हैं, अवमाना करते हैं सुप्रीम कोर्ट की, कभी कुछ, कभी कुछ वो अपने गुंडों के साथ में एक सरकारी प्रोग्राम में पहुँचते हैं। उनके गुंडे दिखाई दे रहे हैं; चेयर फैंकते हुए, पोस्टर फाड़ते हुए सब जो कि सब सरकारी है, किसी पार्टी का नहीं है। सरकारी पोस्टर हैं, सरकारी बैनर हैं। ये सरकारी सामान को अब क्षति पहुँचाने की कोशिश वहाँ पे जाके और सरकारी अफसरों के साथ में मारपीट करते हैं, थप्पड़ मारते हुए की वीडियो है। वहीं पे लोग सीएम साहब के भाषण के दौरान बोतले फैंक रहे हैं। एक है उसकी पूरी की पूरी फोटो इतने क्लीयर है वो तीन-चार बार उसने बोतलें फैंकी है। पर कोई पहचाना नहीं जा रहा पुलिस से, कोई एक्शन नहीं लिया, उल्टा सीएम के ऊपर एफआईआर, सीएम का नाम एफआईआर में।

एक डिबेट में गया था सर, मैं। बड़ी अजीब सी बात है! वहाँ पे बोला कि भई, पुलिस ने एफआईआर तो मनोज तिवारी जी पे भी करी है और उधर भी करी है और तो पुलिस पे पक्षपात का आप आरोप क्यों लगा रहे हैं? ये पुलिस है जो डिसाइड करती है कि एफआईआर जो की जाती है, वो उसमें धाराएँ कौन लिखता है। पुलिस ही डिसाइड करती है वहाँ 308 लिख रही है। एक तौफीक नाम का लड़का बेचारा, वो पीट-पीट के उसे अस्पताल भेज दिया उसमें 323 लगा रही है पुलिस। ये पुलिस का पक्षपात है या नहीं है? इसमें कहाँ से हमारा इक्वेलिटी वाली बात आ गई! सर दिनेश मोहनिया हमारे साथी हैं, उनको प्रेस कॉन्फ्रेंस में से उठा के पुलिस ले के गई थी। अब बदतमीजी की हद देखिए; प्रेस कॉन्फ्रेंस के बीच में से उठा के लेके गई पुलिस। प्रकाश जारवाल को सड़क पे से खींच के लेके गई। महेन्द्र यादव जी का भी... मदन लाल जी ने बताया कि बाइचांस

वहाँ पे थे तो इन्हीं का नाम डाल दिया। शरद हमारे साथी हैं, शरद का नाम तक किसी सुसाइड नोट में नहीं है, उनको अरेस्ट करके दो हफ्ते तक रखा गया।

अमानत भाई के ऊपर... एक महिला कहती है कि वो गाड़ी में बैठके अमानत ने उस दूसरे आदमी को कहा कि इस पे चढ़ा दे। उसने इतनी दूर से सुन भी लिया जो जिसने चढ़ाई उसको नहीं अरेस्ट किया। जो झाइव कर रहा था, उसे नहीं अरेस्ट किया। अमानत को अरेस्ट कर लिया। घर से उठाके ऐसे लेके गए और कई सौ पुलिस वाले आ के पूरे मोहल्ले में हंगामा करके पुलिस वाले ऐसे उठाकर लेके गए जैसे किसी आतंकवादी को पकड़ के ले जा रहे हैं। पर दूसरी तरफ कोई एक्शन नहीं होता। अभी प्रधानमंत्री जी की कोई रैली हो जाती है तो रास्ते रोक दिए जाते हैं। लोग अपनी खिड़की से झाँक नहीं सकते। यहाँ हालत ये है कि सचिवालय में घुस के छत के ऊपर से बैनर लटका देते हैं। उनके ऊपर कोई एक्शन नहीं होता। एक-एक आदमी आइडेंटिफाइड है, उसपे क्या एक्शन हुआ? कहाँ से प्रेरित थे, किसने किया, किसने घुसने दिया उन लोगों को, इतना बड़ा बैनर टाँगा था वहाँ पे सचिवालय में और कई मिनट तक टाँगे रखा न कोई उतारने गया उस बैनर को न उन लोगों को हटाने के लिए वहाँ पे गया। ये क्या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं थी? सुरक्षा क्या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है? दिल्ली का चुना हुआ मुख्यमंत्री जिसकी तरफ हर आदमी आस भरके देखता है कि अगर कल को हमें परेशानी होगी तो ये हमारा साथ देंगे, इसलिए इनको चुना है। अगर वो ही सुरक्षित नहीं है, उसके ऊपर हमला होता है और पुलिस वाले झूठ बोलते हैं कि जेब में रखा हुआ, वो गिर गया मिर्ची। जेब में कौन मिर्ची रखके घूमता है सर? आपमें से किसी ने रखी है आज तक मिर्ची जेब में। ये पूरा का पूरा सब पैटर्न बना हुआ

है। पुलिस वाले इसमें बहुत एक्टिव दिखाई देते हैं कि एमसीडी वालों के साथ मिलके किस तरीके से उगाही की जाए, किसी तरीके से अनऑथराइज्ड तरीके से माफिया के साथ में मिल के लैंड को कब्जाया जाए, एन्क्रोचमेंट कराई जाए, किस तरीके से जो आज कल रोज रात को चोरियाँ हो रही हैं, दुकानों से शटर तोड़े जा रहे हैं, पुलिस वाले सारे के सारे लोग बताते हैं कि वहाँ से हॉर्न तब बजाते हैं अगर कोई और आ रहा हो। इस तरीके की मिलीभगत में तो पुलिस वाले बहुत एक्टिव हैं। यहाँ लोगों की सुरक्षा में पुलिस वाले एक्टिव नहीं हैं। दिल्ली देश की राजधानी है पर बहुत दुःख होता है, ये सुनता हूँ जब कि दिल्ली को देश की रेप कैपिटल बोला जाता है, देश की क्राइम कैपिटल बोला जाता है। ये किसकी नाकामी है? ये यहाँ की पुलिस, ऐसी पुलिस नहीं थी दिल्ली की। दिल्ली की पुलिस प्राइड था दिल्ली वालों का और ऐसी पुलिस इस तरीके से खराब किसके अंदर में हुई है? इस केन्द्र सरकार के अंदर में हुई है। इस एलजी के अंदर में हुई, इस होम मिनिस्ट्री के अंदर में हुई है जो लोग बैठे हुए हैं, या तो ये लोग नाकाबिल हैं अपनी सीट के लिए या ये जान-बूझके दिल्ली का सत्यानाश करने पे लगे हुए हैं। दिल्ली की जनता से बदला लेने पे लगे हुए हैं। ये बार-बार, बार-बार, बार ये चीज सोचने में आती है कि हम लोगों ने आते ही चीफ मिनिस्टर्स साहब बाकी मंत्री, बाकी विधायक कितने खुश हैं इस बात से कि किसी भी इतने दिलेर तरीके से ये लोग लगे रहते हैं; सुबह-शाम नहीं देखते, इन-ह्यूमन कंडीशन में काम करते हैं पुलिस वाले, एक्सेस ड्यूटी ऑवर इन लोगों के होते हैं, छुट्टी नहीं मिलती। ये सब चीजों को देखते हुए कि इनको क्राइम से लड़ने के लिए और हिम्मत बांधे इनको ये न सोचना पड़े कि परिवार अगर इन्हें कुछ हुआ तो परिवार को क्या होगा, एक करोड़ रुपये की सर, सहायता राशि रखी थी। कोई भी कितना भी पैसा हो जाए किसी के लॉस को कभी पूरा नहीं कर सकता।

माननीय अध्यक्ष: नितिन जी, कन्कलूड करिए अब। नितिन जी, प्लीज।

श्री नितिन त्यागी: सर, थोड़ी सी देर रूकिए प्लीज। सर विजेन्द्र जी के टाइम में से दे दीजिए, थोड़ा सा जरूरी है।

श्री सौरभ भारद्वाज: अरे! उनका टाइम खराब चल रहा है।

श्री नितिन त्यागी: हाँ, उनका टाइम खराब चल रहा है, उनके में से मत देना। इतना सोच के ये स्कीम रखी थी कि ये दिल्ली पुलिस वाले जो हैं, ये सब हमारे भाई हैं। पर आज की तारीख में सर, जिस तरीके का बिहेवियर दिल्ली पुलिस का हो गया है दिल्ली के प्रति। मैं ये नहीं कहना चाहता कि सिर्फ एमएलएज के प्रति आम आदमी पार्टी के या आम आदमी पार्टी के पार्षदों के प्रति या मिनिस्टर्स के प्रति या चीफ मिनिस्टर के प्रति, पर पूरी की पूरी दिल्ली के प्रति सिवाय बीजेपी के जो लोग हैं उनको छोड़ के बाकी सबके प्रति ऐसा बिहेवियर हो गया है कि जैसे वो बीजेपी के पर्सनल लटैत हों। बीजेपी की अपनी पर्सनल सिक्योरिटी टीम हो। वैसे सर, हालत ये है कि बीजेपी के जो एक विधायक साहब हैं, उनके घर में घुस के लोगों ने पीट दिया तो भी पुलिस कुछ नहीं कर पाई और कोशिश यही है पुलिस वालों की, बीजेपी की पर्सनल टीम बनी रहे और लोगों को धमकाती रहे, डराती रहे। आज एक छोटे-से छोटा बीजेपी का पदाधिकारी पुलिस वाले को, एसएचओ को धमका देता है। वो पलट के जवाब भी नहीं दे पाते। एक गुंडा सांसद पुलिस वालों को थप्पड़ मारता है और जिस वक्त राज्यसभा के एक सांसद संजीव भाई और एक और साथी उनसे मिलने के लिए जाते हैं, उनसे कहते हैं कि आपके पुलिस वाले को मारा। बोले नहीं-नहीं, हमारे पुलिस वाले को किसी ने कुछ नहीं किया, ऐसा ही कुछ हुआ।

मैं अपने सारे साथियों से पूछना चाहता हूँ, क्या इतनी सी भी संवेदना आज हमारे दिल में दिल्ली पुलिस के लिए है? कांस्टेबल साथी जो हमारे हैं न, जो सबसे बेचारे दबे रहते हैं, अपने अफसरों के बोझ के, उनसे पूरी सांत्वना है सर। पूरी संवेदना है। पूरी सिम्पैथी सर, मेरे को... पर उनके जो ऊपर अफसर हैं, जो राजनीतिक साजिश के तहत इस तरीके का पार्शियल बिहैवियर करते हैं, इस तरीके की गुण्डागर्दी करते हैं। पर्सनल बॉडी गार्ड और पर्सनल लठैत हो चुके हैं, एक पॉलिटिकल पार्टी के। गुलाम हो चुके हैं पॉलिटिकल पार्टी के। जिसको दिल्ली की जनता की सुरक्षा की चिन्ता नहीं है। दिल्ली की महिलाओं की सुरक्षा की चिन्ता नहीं है। दिल्ली के लॉ एण्ड ऑर्डर की चिन्ता नहीं है। इन लोगों को तो उन कॉन्स्टेबल्स को भी ये पता होना चाहिए कि उनके अफसर क्या कर रहे हैं, किस मिलीभगत से काम कर रहे हैं। सबको... मेरा आप सबसे ये रिक्वेस्ट है। मैं खुद इस बात को कहना चाहता हूँ। एक प्रपोज करना चाहता हूँ सर, छोटा सा अमेन्डमेंट सत्येन्द्र जी के रेजल्यूशन में... ***I want to propose the following amendment to the resolution presented before this House that Delhi Police be excluded from the list of departments with compensation of Rs. 1 crore to the kins of martyrs.***

बहुत भारी मन से मैं कह रहा हूँ पर ये जरूरी है। दिल्ली पुलिस वालों को ये याद दिलाने के लिए वो किसी एक के पार्टी के, पॉलिटिकल पार्टी के गुलाम नहीं हैं। वो रक्षक हैं इस दिल्ली के, इस दिल्ली की जनता के। इस दिल्ली की जनता के पैसे से उन्हें तन्ख्वाह मिलती है। उनकी जवाबदेही जनता को है। किसी एक सांसद-गुण्डे को नहीं है। उन्हें ये याद आना चाहिए। जब तक ये याद नहीं आता, मैं चाहता हूँ, आप सब इसमें मेरा साथ दें और ये जो एक करोड़ की जो सहायता राशि है, उसमें से पुलिस डिपार्टमेंट को सर, एक्सक्लूड करना चाहिए, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: सवा चार बजे तक के लिए टी-ब्रेक किया जाता है।

(सदन की कार्यवाही चायकाल के 4.15 बजे तक स्थगित की गई।

सदन अपराहन 4.15 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री रामनिवास गोयल) पीठासीन हुए)

सभापति महोदय: श्री सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाज: अध्यक्ष जी, बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया। अभी इससे पहले भाई नितिन त्यागी ने अपनी बात रखी। जैन साहब ने... मंत्री जी ने इसके ऊपर एक रेजल्यूशन सदन के सामने रखा हुआ है और दिल्ली पुलिस के विषय के अंदर बात हो रही है। मुझे लगता है कि दिल्ली पुलिस का एक डायमेंशन तो ये है कि वो किस तरीके से चुनी हुई सरकार के मंत्री, मुख्यमंत्री, सरकार और विधायकों के साथ किस तरीके का व्यवहार करती है,

द्वेषपूर्ण व्यवहार करती है। मगर दिल्ली पुलिस का एक जो इम्पोर्टेंट डायमेंशन है और जो बहुत जरूरी डायमेंशन है, वो ये है कि क्या दिल्ली पुलिस दिल्ली के लोगों के लिए कुछ अच्छा कर रही है या नहीं कर रही है। जब हम दिल्ली पुलिस के शहीद जवानों को एक करोड़ रुपये देने की बात करते हैं तो वो एक करोड़ रुपया हमारा नहीं है, सरकार का नहीं है। दिल्ली के लोगों का एक करोड़ रुपया है। दिल्ली के लोगों के टैक्स से दिया हुआ वो एक करोड़ रुपया है। तो सवाल ये उठता है कि क्या दिल्ली के लोगों के लिए दिल्ली पुलिस कुछ अच्छा कर रही है या नहीं कर रही है? दिल्ली के लोगों का क्या फीड बैक है दिल्ली पुलिस के लिए?

और मुझे लगता है दिल्ली पुलिस का जो फीड बैक है, उसे एक चीज बड़ी साफ हो जाएगी कि क्या केन्द्र सरकार जो साढ़े चार साल पहले ये कह कर चुनकर आई थी कि जो प्रधानमंत्री हैं, वो एक साफ सुथरे आदमी हैं, एक बाहरी आदमी हैं। एक गरीब परिवार से आए हैं और वो रिश्वत का एक रुपया भी बर्दाश्त नहीं करते। ये बात कही जाती थी प्रधानमंत्री जी के बारे में। दिल्ली के अंदर अगर हम देखें कि प्रधानमंत्री के पास दिल्ली की क्या चीजें हैं तो दिल्ली पुलिस सीधे-सीधे प्रधानमंत्री जी के अंदर आती है। और हमें किसी बड़े उद्योगपति से पूछने की जरूरत नहीं है। हमें किसी इन्टरनेशनल रेटिंग एजेंसी की जरूरत नहीं है। कोई ट्रांसपेरेंसी, इन्टरनेशनल आंकड़ों की जरूरत नहीं है। मुझे लगता है कि दिल्ली का सामान्य से सामान्य आदमी भी ये देख सकता है कि क्या प्रधानमंत्री के आने के बाद दिल्ली पुलिस के अंदर कोई परिवर्तन हुआ। क्या दिल्ली पुलिस ईमानदार हो गई? क्या दिल्ली पुलिस के सिपाहियों ने पैसे लेने बंद कर दिये? ये एक्सपैरीमेंट बड़ी आसानी से किया जा सकता है। आपके आस-पास मार्किट्स हैं; दुकानदारों से पूछिए, क्या दिल्ली पुलिस के सिपाहियों ने उगाही करनी बंद कर दी। हमारे आस-पास मोहल्लों के अंदर रेहड़ी पटरी वाले बैठते हैं, आप उनसे पूछिए कि क्या दिल्ली पुलिस ने रेहड़ी पटरी वालों से हफ्ता लेना बंद कर दिया।

अध्यक्ष जी, मैं एक दिन अपने यहाँ से गुजर रहा था तो कुछ औरतों ने मुझे रोका। कहने लगी देखियो भैया, ये पुलिस वाला इस सब्जी वाले को रोज मारता है। मैंने क्या सोचा, क्या बात हो गई! पूछा उससे। वो औरतें मुझे लेकर गई उस सब्जी ठेले वाले के पास। हमने पूछा कि भई, क्यों मार रहा है तुम्हें वो बीट वाला? वो कह रहा है, “साहब मैं तीन सौ रुपये देता हूँ हफ्ते के।” अब नया बीट कांस्टेबल आया है; क्योंकि एसएचओ

बदला है तो ये कह रहा है कि पाँच सौ रुपये देने हैं हफ्ते। और तीन से जब भी मिलता है, मुझे मारता-पीटता है। कह रहा है, "तूने बढ़ाए नहीं रेट।" ये खुल्लमखुल्ला है अध्यक्ष जी, कि पुलिस के बीट कान्सटेबल का एक मुख्य काम ये है कि उस इलाके के अंदर जितनी भी रेहड़ी-पटरी वाले हैं, उनसे हफ्ते के पैसे वसूल कर रहा है। तो ये चीज हम रेहड़ी-पटरी वालों से पूछ सकते हैं। जितने भी मैट्रो स्टेशन हैं, रेलवे स्टेशन हैं, बस स्टैंड्स हैं, मार्केट्स हैं, वहाँ पर पूछा जा सकता है कि वहाँ पर जो ऑटो रिक्शा खड़े करने वाले हैं, हर ऑटो रिक्शा वाले से, हर ई-रिक्शा वाले से महीने के पाँच सौ रुपये- आठ सौ रुपये- हजार रुपये लिए जाते हैं। ये बात सामान्य बात है आप किसी के साथ भी आप ऑटो लो और उस ऑटो वाले से पूछ लो कि यहाँ पर कितना रेट है, वो आपको बता देगा।

जितनी भी स्कूल वैन चलती हैं। उनसे तीन हजार से साढ़े तीन हजार रुपये महीने का, हर चौराहे पर बंटा हुआ है। सुबह-सुबह दूध बाँटने वाली गाड़ियाँ आती हैं। उनका हर चौराहे पर पैसा बंटा हुआ है कि इस चौराहे पर इतना पैसा देना है, इस चौराहे पर इतना पैसा देना है। हर चौराहे पर... रेड लाइट पर पैसा देना पड़ता है। रेस्टोरेंट ऑनर से पूछ लीजिए एसएचओ साहब का महीने का कितना है, वो बता देगा। मार्केट वालों से पूछ लो, एसएचओ साहब का कितना है, वो बता देगा। जितने फाइनेन्शियल फ्रॉड होते हैं दिल्ली के अंदर। हर फाइनेन्शियल फ्रॉड के अंदर एक-दो-पाँच जितना हाथ लग जाए लाखों में या करोड़ों के अंदर, दिल्ली पुलिस वसूली करती है। कुल मिलाकर एन्क्रोचमेंट तो मुझे लगता है सबसे पहला काम है। मतलब आम हो गया है कि आप अगर कंस्ट्रक्शन करना शुरू करोगे तो आपके पास पहले तो बीट कान्टेबल आएगा, हाँ भई। बीट कान्टेबल से काम नहीं चलेगा तो फिर थोड़ी देर बाद घूमकर एमसीडी वाला आएगा।

दोनों से काम नहीं चलेगा तो दोनों इक्ठ्ठे आएँगे। फिर वो कहेंगे कि “भई, तेरी शिकायत कर दी है पुलिस वाले ने।” एमसीडी के पास शिकायत आई है, तेरी एफआईआर हो गई है। मिल बाँटकर कुल मिलाकर सबको मालूम है, दिल्ली पुलिस का चरित्र क्या है। तो मेरी मुख्यमंत्री साहब से ये गुजारिश है कि जो एक करोड़ रुपया है, ये न हमारा है, न आपका है। न ये विधायकों का है, न ये सरकार का है। ये पैसा जो है दिल्ली के टैक्स पेयर का पैसा है। दिल्ली के टैक्स पेयर को इसके बारे में आकलन करने दीजिए कि क्या दिल्ली पुलिस ईमानदार है या बेईमान है। अध्यक्ष जी, ये बेईमानी सिर्फ इस चीज की नहीं है कि ये पाँच सौ रुपये या हजार रुपये किसी से ठग लेते हैं; एक महिला के साथ कोई दुर्व्यवहार होता है। किसी गली का गुंडा अगर उसके साथ कोई बदतमिजी करता है। वो पुलिस के अंदर रिपोर्ट दर्ज करने जाती है तो पुलिस का बीट कांस्टेबल सबसे पहले गुंडे को फोन करता है। कहता, “एक काम कर तू, “अपनी बीबी के नाम से इसके पति की रिपोर्ट करा दे।” तो उस महिला की रिपोर्ट बाद में होगी एक घंटे बाद, उस से पहले उस महिला जिसका उत्पीड़न हुआ है, उसके पति के खिलाफ झूठी कम्प्लेंट पुलिस वाला कर लेगा और फिर कहेगा, “आ जाओ, टेबल पर बैठ जाओ, एक तेरे ऊपर केस है। एक तेरे ऊपर केस है, बता क्या करें?” तो वो महिला जिसके साथ बदतमिजी हुई बीच बाजार, उसकी इज्जत के साथ खिलवाड़ हुआ, उस महिला को भी न्याय नहीं। मतलब इतने गिरे हुए लोग हैं ये।

अध्यक्ष जी, आमने सामने, मैं आपको बताऊँ, अगर आप व्यक्तिगत तौर पर किसी पुलिस वाले को जानते हो तो क्या है, वो आदमी आपको अच्छा लगेगा। मेरे बड़े मित्र हैं पुलिस के अंदर। मेरे साथ बचपन के पढ़े हुए लोग हैं जो पुलिस में हैं। मगर हम उनकी उस डायमेशन को देख रहे हैं,

पर्सनेलिटी को वो मेरे आगे एक्सपोज कर रहे हैं। मेरे को बाकायदा बड़ा अच्छा आदमी लगेगा। मुझे लगेगा ये तो बड़ा अच्छा परिवार वाला आदमी है। इसके बच्चे भी उसी स्कूल में जाते हैं, जिसमें मेरे जाते हैं। ये भी वैसे ही उठता बैठता है। ये तो बड़ा आदमी है। मगर अध्यक्ष जी, अगर इस चीज को बारीकी से देखा जाए तो इस समाज के अंदर जितनी भी कुरीतियाँ हैं, जितनी भी गंदगी है, हर चीज के अंदर मुझे लगता है ये पुलिस वालों का उसके अंदर जो है, पूरा-पूरा योगदान है। अगर आज दिल्ली के अंदर पचास हजार बच्चे या कुछ लाख बच्चे ड्रग से पीड़ित हैं, जिनके पूरे के पूरे परिवार बर्बाद हो गए, उसका कारण भी सिर्फ और सिर्फ दिल्ली पुलिस है। इनको सब पता है कि गांजा कहाँ बिकता है, ड्रग्स कहाँ बिकती है, कहाँ पी जाती है। अगर ये पीने वालों के ऊपर रोक लगा दें ड्रग्स के पीने वालों पर। देखिए हर इलाके के अंदर सबको पता है कि ये इलाके हैं जहाँ पर वो स्मैकिये बैठते हैं। अगर ये सिर्फ उन इलाकों पर ही प्रतिबंध लगा दें तो जो ये स्मैक पीने वाला, स्मैक पी नहीं पाएगा तो खरीदेगा भी कैसे? और खरीदेगा नहीं तो ये व्यापार भी बंद हो जाएगा धीरे-धीरे। ये कुरीति को आप खत्म कर सकते हैं। अवैध शराब का ही काम हो। अवैध शराब सब पुलिस वालों को पता है, कहाँ मिल सकती है, कहाँ नहीं मिल सकती। कत्ल के मुकद्दमे हों। सबसे पहले ये बताएँगे चाकू हम बदलेंगे। ये कहेंगे एफआईआर में ये वाला चाकू ले लेंगे, बाद में कोर्ट में दूसरा वाला चाकू रख देंगे। तेरा केस वहीं पर गिर जाएगा। तेरा भला हो जाएगा। जो आरोपी है उससे पाँच लाख-दस लाख-बीस लाख जो लेंगे-लेंगे और न्याय नहीं मिलता। कुल मिलाकर समाज के अंदर अगर क्राईम भी अगर बढ़ रहा है। जितनी भी कुरीतियाँ हैं, कुल मिलाकर ये पुलिस वालों का उसके अंदर पूरा का पूरा योगदान है। व्यक्तिगत तौर पर ये लोग अच्छे लगते हैं। अच्छे दिखते हैं। मैं मानता हूँ कि दस पन्द्रह परसेंट लोग ऐसे भी है... अध्यक्ष

जी, मैं ये मानूंगा ऐसे भी लोग हैं, वो जो जाना ही नहीं चाहते थाने। वो कहते हैं हमारा एयरपोर्ट पर ट्रांसफर करा दो। यार! हमारा कहीं पर सिक्यूरिटी पर लगा दो किसी के। हमारे को किसी ऐसी जगह लगा दो जहाँ न हमें किसी से न लेना पड़े, न किसी को देना पड़े। ऐसे भी लोग हैं थानों के अंदर, पुलिस के अंदर। मगर एक बड़ी तादाद जो इस सिस्टम की है; पुलिस के अंदर वो भ्रष्टाचार से पूरी तरह लिप्त है। सात-सात, छः-छः करोड़ के अंदर थाने बिकते हैं और जब थाने बिकेंगे, एक एसएचओ पाँच करोड़ रुपये देकर अपनी पोस्टिंग किसी थाने में कराएगा तो वो पाँच करोड़ रुपये पहले जो अपने दिये हैं, वो कमाएगा और फिर बाद में फिर ऊपर भी देगा। तो पूरा का पूरा जो पैसे का लेन-देन है, नीचे से ऊपर तक जाता है।

अध्यक्ष जी, मेरा इस सभागार के माध्यम से मुख्यमंत्री जी को और सरकार को ये निवेदन है कि आप दिल्ली पुलिस के बारे में एक सर्वे करा लीजिए दिल्ली में। दिल्ली वालों से पूछ लीजिए कि क्या दिल्ली पुलिस के कामों से वो खुश हैं। और मैं ये नहीं कहता कि सौ परसेंट लोग खुश होंगे, सौ परसेंट तो लोग हमसे भी खुश नहीं होंगे। अगर पचास परसेंट से ज्यादा लोग भी इनके कामों से खुश हैं जो कहते हैं कि हाँ, दिल्ली पुलिस अच्छा काम कर रही है तो आप एक करोड़ रुपये की जो राशि है, वो आप दिल्ली पुलिस को दें और अगर उस सर्वे के अंदर ये लोग नहीं आते हैं और इनका जो सच्चाई है, वो सामने आती है तो मुझे लगता है कि एक करोड़ रुपये बिल्कुल नहीं देना चाहिए। ये दिल्ली वालों का टैक्स का पैसा है, खून पसीने का पैसा है।

इसको मुझे लगता है, किसी सिपाही को दें, फौज वाले को दें, मुझे लगता है किसी फॉयर ब्रिगेड वाले को दें यहाँ तक कि अगर कोई एम्बुलेंस

भी चला रहा है और उसकी दुर्घटना में मौत हो जाती है तो उस एम्बुलेंस के ड्राइवर को भी दें। मगर मुझे ये लगता है और मेरा दिल से ये मानना है कि दिल्ली पुलिस को इस स्कीम से हटा दिया जाए, इसके अंदर सभी शहीदों को दिया जाए मगर दिल्ली पुलिस को इसके अंदर से एक्सक्लूड कर दिया जाए, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद सौरभ जी। पंकज पुष्कर जी।

श्री पंकज पुष्कर: माननीय अध्यक्ष महोदय, अत्यधिक महत्वपूर्ण मामले पर बोलने के लिए अवसर देने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। मेरे बहुत से माननीय साथियों ने...

माननीय अध्यक्ष: बहुत संक्षेप में रखिएगा। माननीय बोलने वालों की लिस्ट बहुत लंबी है।

श्री पंकज पुष्कर: माननीय साथियों ने ये पहले से बता दिया है कि दिल्ली पुलिस क्या कर रही है, ये वास्तव में बड़ा उदास कर देने वाली स्थिति है कि जितना पार्टी जैन होके, जितने पक्षपाती तरीके से और जितने दबाव में दिल्ली पुलिस काम करती है। और तो और इस प्रदेश के चुने हुए लोकप्रिय मुख्यमंत्री जो हैं, उन पर पिछले दो वर्ष में चार बार हमला हुआ है, विधायकों के ऊपर हमला हुआ है और विधायकों को झूठे आरोप में... पुलिस ने काम किया है, जेल तक भेजा है। ये सारी चीजें ये बताने के लिए काफी हैं कि दिल्ली पुलिस कितना अपने कर्तव्य से दूर है और कितनी पक्षपात तरीके से वो काम कर रही है। लेकिन बहुत महत्वपूर्ण ये समझना है कि दिल्ली पुलिस ऐसा कर क्यों रही है और दिल्ली पुलिस की ये सब करने की प्रेरणा कहाँ से आती है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से दिल्ली पुलिस का जो चरित्र है, वो कहाँ से शुरू होता है; ये ध्यान दिलाने के लिए मैं ध्यान दिलाऊँ कि 1861 का पुलिस एक्ट है जो कि पूरे पुलिस के मूल ढाँचे को बनाता है 1861, याद करें 1857 के चार वर्ष बाद जब पूरे देश में आजादी की एक उमंग पैदा हुई, एक आजादी की पहली लड़ाई शुरू हुई उसको कुचलने के लिए, उसको दबाने के लिए भारत के अंदर जो एक एकता कायम हो रही थी, जनता बीच जागरूकता आ रही थी, उसको दबाने के लिए औपनिवेशिक शासन ने, अंग्रेजी राज ने दिल्ली पुलिस का एक ढाँचा बनाया था; दिल्ली पुलिस एक्ट लेके वो आये थे। इसके बीच की एक लंबी कहानी है। इसके बीच का आज हमने उस अपने महान ऐतिहासिक संविधान का संविधान दिवस मनाया है। आज ही के दिन वो संविधान लागू हुआ था। तो अब तय यह करना है कि भारत, आज का भारत 1950 से आज 2018 है, इसकी तरफ बढ़ेगा। मतलब देश की आजादी को मजबूत करने की तरफ बढ़ेगा या ये औपनिवेशिक कानूनों की तरफ बढ़ेगा... 1861 की तरफ बढ़ेगा जब कि पुलिस को बनाया गया भारत की जनता को दबाने के लिए, डराने के लिए, तोड़ने के लिए, मुखबिरी करने और करवाने के लिए। माननीय महोदय, सवाल ये है कि भारत की पुलिस, दिल्ली की पुलिस इस समय भारत सरकार के कब्जे में है, हम देश के अंदर एक डेमोक्रेटिक पुलिसिंग चाहते हैं, कॉलोनियल पुलिसिंग चाहते हैं, एक ऐसी पुलिस चाहते हैं जो कि जनता की इच्छा के अनुसार, जनता की गरिमा, जनता के जीवन जीने के अधिकार, इसकी रक्षा करे, उसके सोशल, पॉलिटिकल, इकॉनामिक राइट्स को प्रोटेक्ट करे, रूल ऑफ लॉ को प्रोटेक्ट करे या वो एक सत्ताधारी दल या किसी भी शोषक समूह या किसी भी दबंग समूह के साथ मिलकर जनता को तोड़ने का काम करे, हमको तय यह करना है। माननीय महोदय, हमें

ये तय करना है कि पुलिस जो है, वो एक राज्य... एक ऐसा राज है जो कि कुछ लोगों के कब्जे में है जैसा कि अंग्रेजी राज के समय में था, उसकी तरफ खड़ी है या इस देश की करोड़ों-करोड़ जनता की तरफ खड़ी है, ये तय करना है।

माननीय महोदय, मैं अपने माननीय गृह मंत्री का जो प्रस्ताव है, उसकी पूरी पुरजोर समर्थन करते हुए ये बात कहना चाहता हूँ कि ये बात ये नहीं है कि अभी किसी एक दल विशेष, जिनके केवल चार विधायक हैं, उनकी गोद में पुलिस खेल रही है। हमारी शिकायत ये नहीं है, हम ये नहीं चाहते कि उनसे निकल कर हम जो 66 सदस्यों को चुनी हुई विधानसभा है, इसके पास या इसके नायक के, इसके मुखिया के पास आ जाए। हम चाहते ये हैं कि दिल्ली की पुलिस दिल्ली के नागरिकों की तरफ जवाबदेह बने, दिल्ली की पुलिस दिल्ली के जो देश का संविधान है, उसके मानक के अंदर काम करना शुरू करे।

मैं बहुत संक्षेप में कुछ बातें करूँगा कि ये जो डिमाण्ड है; दिल्ली की पुलिस को एकाउंटेंट बनाने की, ट्रांसपेरेंट बनाने की, प्रोफेशनली ग्रो करने की, उसको एक इंडिपेंडेंस के साथ काम करने की अनुमति और माहौल बनाने की, हमारी माँग ये है। ये विधानसभा इस प्रदेश के मुख्यमंत्री जिस देश के अंदर संस्थागत सुधार हो। लोकपाल की लड़ाई क्या थी? जन लोकपाल की लड़ाई भ्रष्टाचार मिटाने का जो भारत के संविधान का निर्देश है, उसका सारी संस्थाओं ने उल्लंघन किया, सीबीआई तोता बन गयी, चीफ विजिलेंस कमिशन बिल्कुल निर्बल हो गया, राजनीतिक दलों के कब्जे में आ गया, इसलिए जन लोकपाल का आंदोलन खड़ा हुआ। आज अगर हम दिल्ली पुलिस को, दिल्ली की विधान सभा के प्रति उत्तरदायी बनाने की बात कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कर रहे कि हम चाहते हैं कि वो किसी

राजनीतिक दबाव में आए, हम चाहते हैं कि वो सभी तरह के राजनीतिक दबावों से मुक्त हो और दिल्ली की विधान सभा एक बिल्कुल निष्पक्ष तरीके से दिल्ली की पुलिस को और अधिक गौरवमयी पुलिस बनाने की तरफ काम करे तो निश्चित रूप से उनको बुरी लगेगी जो आजादी की लड़ाई के समय मुखबिरी कर रहे थे। वो उस समय भी सत्ताधारी दल के हाथ में, अंग्रेजों के हाथ में खेल रहे थे और जो देश के लिए लड़ने वाले लोग थे, देशभक्त लोग थे, देश के अंदर अमन की बात करने वाले लोग थे, उनके खिलाफ मुखबिरी कर रहे थे, उनके खिलाफ जाकर वो उस समय की पुलिस से मिले हुए थे तो आज भी इस देश के अंदर, इस समाज के अंदर वो लोग हैं जो कि उस पुलिस से मिल जाएँगे जो कि आज आजादी की बात करने वाले, भ्रष्टाचार मिटाने वाले की आवाज जो भी करेगा, उसकी आंखों में मिर्ची डालने की कोशिश करेंगे, उस पर हमले करने की कोशिश करेंगे, उनको झूठे मुकदमों में फसाने की कोशिश करेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे केवल कहना चाहता हूँ कि हमारी जो माँग है, मेरा जो निवेदन है आपसे, वो ये है कि हम दिल्ली पुलिस के अंदर एक-एक जो ईमानदार अधिकारी है, उसके लिए हम दिल और जान से उसका सम्मान करते हैं। उसके लिए हर कीमत पर उसके समर्थन में, उसके सहयोग में, उसकी सुरक्षा के लिए खड़े होने के लिए तैयार हैं। दिल्ली पुलिस का एक-एक कांस्टेबल, एक-एक सिपाही जो रातों-रात जागता है, बहुत मुश्किल स्थितियों में काम करता है, उसके लिए दिल्ली की इकलौती विधान सभा है, दिल्ली का अकेले एक मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने एक करोड़ के शहादत दिवस पर उनको देने का एक घोषणा की, उसकी चिंता की, पूरे देश में ये उदाहरण कहीं पेश नहीं हो सका तो इससे आगे बढ़ते हुए मैं इस विधान सभा के संकल्प को आगे बढ़ाना चाहता हूँ और

ये बात मैं केवल इस विधान सभा के सदस्यों से नहीं कह रहा, माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से इस देश की...

माननीय अध्यक्ष: पुष्कर जी, कन्क्लूड करिए पंकज जी, प्लीज।

श्री पंकज पुष्कर: दो मिनट के अंदर बात पूरी करता हूँ माननीय अध्यक्ष महोदय। इस देश की सोई हुई आत्मा से, सर्वोच्च न्यायालय से, इस देश के पूरे नागरिक समाज से अपील करते हैं; हम ये कहते हैं कि हमको दिल्ली पुलिस के तौर पर, इस देश की राजधानी में एक ऐसी पुलिस व्यवस्था चाहिए जो की ईमानदार हो, जो भारत के संविधान के प्रावधानों पर खरी उतरे, जो कि किसी राजनीतिक दल के, किसी राजनीतिक नेता के दबाव में काम न करे और वो एक लोकतांत्रिक समाज के साथ खड़ी हो, जनता के साथ खड़ी हो और वो ये तय कर सके कि जनता को लगातार राइट टु लिव विद डिग्निटी... केवल काम उसको जिंदा रखने का नहीं है, मानव की गरिमा का सवाल है। जैसा मेरे सम्मानित साथियों ने बताया एफआईआर दर्ज नहीं होती, मेरे सामने सैंकड़ों केस हैं, मैं तो... आपने एक दिन का अधिवेशन रखा है इस पर 10 दिन की भी चर्चा हो, तो एक के बाद एक ऐसी चीजें आएंगी। माननीय महोदय, मैं यहाँ कुछ बातें कह के आपके सामने रुक जाना चाहता हूँ। हमारी माँग जो है...

माननीय अध्यक्ष: पंकज जी, कन्क्लूड करिए, प्लीज। कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री पंकज पुष्कर: माँग जो है मैं आपके सामने...

माननीय अध्यक्ष: पंकज जी, कन्क्लूड करिए, प्लीज। कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री पंकज पुष्कर: मैं केवल माननीय महोदय कहना ये चाहता हूँ कि पुलिस जो है, वो राज्य का सबसे मुखर चेहरा है, पुलिस जो है पब्लिक अथॉरिटी, स्टेट अथॉरिटी का सबसे एक एक्सप्रेस चेहरा है जो पूरी सरकार की, पूरे राज्य की जो अथॉरिटी बनती है, उसकी लेजिटीमैसी पुलिस से बनती है। जब पुलिस में जाने से... सिपाही के सामने जाने से जनता डरने लगती है तो इसका मतलब ये राज्य पराया राज्य हो गया है, ये सरकार जो है आततायी बन गयी है तो ये दिल्ली की विधान सभा, दिल्ली के चुने हुए एक सदस्य के तौर से मैं आपसे अपील करता हूँ कि ये पुलिस, दिल्ली की पुलिस अनिवार्य रूप से दिल्ली की विधान सभा के प्रति जवाबदेह हो। दिल्ली के माननीय गृह मंत्री एक प्रस्ताव सामने लेकर आ रहे हैं, हम नहीं चाहते, सुप्रीम कोर्ट की डायरेक्शन है, माननीय महोदय, सुप्रीम कोर्ट की डायरेक्शन पढ़ के मैं बैठ जाता हूँ कि स्टेट सिक्योरिटी कमीशन वो हम नहीं कहते कि हमारे अधीन आ जाए लेकिन स्टेट सिक्योरिटी कमीशन के अंदर सेंट्रल का भी प्रतिनिधित्व होगा, माननीय मुख्यमंत्री भी रहेंगे, इंडिपेंडेंट इंडियन भी रहेंगे, उसमें इंडिपेंडेंट ज्यूरिस्ट भी रहेंगे, उनके सामने उत्तरदायी बनें।

माननीय महोदय, पुलिस एस्टैब्लिशमेंट बोर्ड बने तो ये विधान सभा जो दिल्ली पुलिस के सुधार का दसों वर्षों से बल्कि 20-25 वर्ष से रुका हुआ एजेंडा है, उसको आगे बढ़ाने की माँग करती है। इसके अन्तर्गत माँग करती है कि दिल्ली पुलिस लोकतांत्रिक पुलिस बने, वो औपनिवेशिक शर्तों पे चलना बंद करे। एक सत्ता विशेष जो कि आजादी की लड़ाई में भी मुखबिरी करता था, आज भी मुखबिरी कर रहा है; उसके दबाव में खेलना बंद करे। दिल्ली के हर आजाद ख्याल, दिल्ली के हर ईमानदार अधिकारी के पक्ष में हर मेहनतकश, ईमानदार कांस्टेबुलरी सिपाही के पक्ष में दिल्ली की विधान सभा

खड़ी है, मैं माननीय गृह मंत्री के प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि इस सत्र को आगे बढ़ाया जाए और इस विषय पर चाहे हम को हर पुलिस थाने के बाहर जा के गांधीगिरी करनी पड़े, हम को सत्याग्रह करना पड़े, हम उनको जाके फूल दें, हम उनके घर पर, दरवाजे पर बैठेंगे, हर पुलिस थाने के एसीपी, डीसीपी के दरवाजे पे जा के बैठेंगे कि हम ईमानदारी का सम्मान करते हैं लेकिन हम दिल्ली पुलिस को रिफॉर्म का एजेंडा, उसको डेमोक्रेटिक बनाने के एजेंडे को आगे बढ़ाएँगे, जरूर बढ़ाएँगे, ये हमारी शपथ है, संविधान दिवस पर शपथ है, जयहिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद, धन्यवाद। इससे पहले कि मैं जनरैल सिंह जी को आमंत्रित करूँ बोलने के लिए, उनको बधाई दे रहा हूँ कि आज उनकी शादी की वर्षगांठ है।

(सभी सदस्यों ने मेजें थपथपा कर जनरैल सिंह जी को उनकी शादी की वर्षगांठ पर बधाई दी।)

माननीय अध्यक्ष: जनरैल सिंह जी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदया (सुश्री राखी बिड़ला) पीठासीन हुईं।

श्री जनरैल सिंह: थैंक्यू अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले धन्यवाद करता हूँ आपका। जहाँ आपने गुरुनानक साहब के 550 वें गुरुपर्व पर विधानसभा में तीन दिसंबर को एक प्रदर्शनी रखी और साथ साथ 7 दिसंबर को एक समागम भी रखा है तो मैं आपको दिल से धन्यवाद करता हूँ और आपके समय का गाना है अध्यक्ष जी, बड़ा ही मशहूर गाना था कि चिंगारी कोई भड़के तो सावन उसे बुझाये सावन जो आग लगाये, उसे कौन बुझाये

तो ये मशहूर गाना आज पूरी तरह से दिल्ली पुलिस की जो कार्यशैली है, उसके ऊपर सूट करता है। दिल्ली पुलिस जिसको दिल्ली की शान कहा जाता था, उसको हम देख रहे हैं अध्यक्ष जी। हो क्या गया है; एसीपी के थप्पड़ पड़ रहे हैं, डीसीपी के गिरेबान पकड़ी जा रही है और पकड़ा कौन रहा है? दिल्ली की बीमारी क्या है? मनोज तिवारी जो सांसद है, वो सांसद दिल्ली का चुना हुआ दिल्ली पुलिस के डीसीपी का गिरेबान पकड़ रहा है, एसीपी को थप्पड़ मार रहा है और ये कुछ कर ही नहीं रहे हैं। आगे से दूसरी तरफ सिर्फ थप्पड़ मारने का एक इल्जाम है उसकी एवज में दो विधायकों को चुनकर उठाकर 14 दिन के लिए जेल में डाल दिया जाता है।

अध्यक्ष जी, मेरा एक आपबीती है जो 2015 में जब ये सरकार बनी थी तो उसके बाद सबसे पहली जो एफआईआर हुई थी, वो मेरे ऊपर ही हुई थी। अब उसमें मेरे को, मेरे क्षेत्र से काल आती है जी कि एमसीडी का जेई आ गया है जी। हमारी बिल्डिंग तोड़ रहा है, हमें बचाओ और ये पैसे माँग रहा था इसके पैसे हम दे नहीं पाये तो बिना नोटिस के हमारी बिल्डिंग तोड़ने आ गया है। जन प्रतिनिधि होने के नाते मैं वहाँ पर गया। वहाँ जाकर जेई से पूछा कि भई कोई डेमोलेशन ऑर्डर है तो दिखाओ अब जेई ने डिमोलेशन ऑर्डर क्या दिखाना था, वो तो अपनी हवा में ही थे और एरिया के लोगों में गुस्सा इतना बढ़ गया। अगर मैं वहाँ बीच बचाव न करता तो जेई के साथ मारपीट हो सकती थी। मैंने खुद सौ नंबर पर फोन किया, पुलिस को बुलाया। पुलिस वहाँ पर आई और मौके से सबको ले गई। मैं, मेरे साथ सैंकड़ों क्षेत्रवासी सारे थाने में जाते हैं। थाने में जाकर वो बिल्डिंग का मालिक शिकायत देता है बिल्डिंग के मालिक के साथ-साथ मैं लिखित में शिकायत देता हूँ कि जेई ने बिना कार्रवाई के पैसे माँगे और इनकी

बिल्डिंग तोड़ी इसके ऊपर एक्शन लिया जाये। अब चोर के दिल में तो जो चोर है, उसको पहले से ही डर है। बिल्डिंग डिपार्टमेंट के एक से एक बड़े अफसर वहाँ पर आना शुरू हो जाते हैं कि सर, मामले को रफा दफा करो, मामले को निपटाओ। रात को 11 बजे तक हम वहाँ बैठे रहते हैं। "जी, निबटाएंगे नहीं, ये रोज का ड्रामा है; एमसीडी के बिल्डिंग डिपार्टमेंट का।" और पुलिस का जहाँ... जैसे सौरभ भाई अभी बता रहे थे कि कोई बिल्डिंग बने, ये पैसे लिए बिना नहीं छोड़ते। इसके ऊपर हर हाल में एफआईआर होनी चाहिए। अब हैरानी क्या होती है अध्यक्ष जी, रात को हमारी कम्प्लेंट पर ठप्पा मारकर हमें दे दिया जाता है। "ये लो जी, आपकी कम्प्लेंट रिसीव कर ली।" घर पहुँचता हूँ, 11 के साढ़े 11 बजे होते हैं टीवी पर हेड लाइन चल रही होती है, "जी, आम आदमी पार्टी के विधायक पर मुकद्दमा दर्ज! जेई से मारपीट का केस दर्ज।" ये रवैया वहाँ देखने को मिला अगले दिन से अखबारों पर तमाम टीवी चैनल्स पर आम आदमी पार्टी के ऊपर डिबेट शुरू हो जाती है। ये उसके तीन दिन बाद की अध्यक्ष जी, ये एक टीवी चैनल की मैं वो लेकर आया हूँ कटिंग, उसका स्क्रीन शॉट है। 'आप एमएलए डिक्लेयर्ड एक्सकॉन्डिंग बाइ दिल्ली पुलिस।' अब किसी को... मदन लाल जी बैठे हैं और हमारे कई सारे वकील साथी हैं। किसी को भगौड़ा घोषित करने का एक प्रोसीजर होता है। सिर्फ एफआईआर होने के तीन दिन बाद और मैं वहाँ पर हूँ और मेरे को भगौड़ा घोषित कर दिया जाता है और वो भी दिल्ली के पुलिस कमिशनर बीएस बस्सी द्वारा। अब मैं सोचता था कि इनको ऐसा करने से मिलता क्या है! जब बस्सी साहब रिटायर हुए तो उनको यूपीएससी का मेम्बर बना दिया गया तो मेरे को समझ आ गया जी, इनकी मजबूरी क्या है। सारे पुलिस वाले अध्यक्ष जी, मेरे को नहीं लगता खराब होंगे कुछ निचले लेवल पर हो सकता है

ठीक भी हों। पर जब ऊपर बॉस ही ठीक नहीं होगा तो नीचे कहाँ से पूरी कार्य प्रणाली ठीक तरीके से चलेगी? तो अध्यक्ष जी, ये वाक्या जो मेरे साथ हुआ, ये अपने आप में दिल्ली पुलिस के लिए प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। हर रोज इस तरीके के सैकड़ों वाक्ये होते हैं और इनका अंजाम क्या होता है; कोर्ट के अंदर मेरा मैटर जाता है, ये उस मैटर की जजमेंट है। दिल्ली पुलिस को हमें पकड़ने की... आम आदमी पार्टी वालों को पकड़ने की इतनी उत्सुकता है कि वो कई बारी प्रोसीजर फोलो करना भी भूल जाते हैं। प्रोसीजर ये है कि किसी पब्लिक सर्वेंट के ऊपर अगर उसको लगता है कि उसकी ड्यूटी करने से रोका जा रहा है तो वो कोर्ट के अंदर ऐप्लीकेशन देता है। कोर्ट के ऑर्डर से फिर एफआईआर होती है पर पुलिस ने ऐसा कुछ नहीं किया। सीधे मेरे ऊपर एफआईआर कर दी और कोर्ट की जजमेंट कहती है: ***“No court shall take cognizance of any offence punishable under Section 172 to 188 of the IPC except on the complaint in writing by the public servant.”*** पब्लिक सर्वेंट की कोई कंप्लेंट ही नहीं है पर पुलिस को इतनी जल्दी है कि हमारे ऊपर साथ के साथ एफआईआर दर्ज की, अगले दिन हमें भगौड़ा घोषित कर दिया और जितने लोग मेरे साथ थाने गये थे, सैकड़ों में वो लोग थे; विडियो में देख-देख के एक एक आदमी को थाने बुलाकर उनको परेशान किया, उनसे इन्वेस्टीगेशन की। तो ये जो पुलिस का ये मतलब इतना भेदभाव पूर्ण रवैया है; आम आदमी पार्टी और तमाम पब्लिक के साथ भी सिर्फ कुछ लोगों ने और एक पार्टी के साथ दिल्ली पुलिस अलग है कि अगर आप बीजेपी से हो तो आपके लिए कानून अलग है, आप बीजेपी से नहीं हो तो आपके लिए कानून अलग है। इस महीने के अंदर हमने सिग्नेचर ब्रिज का एक ताजा मिसाल देखी है। इसके पहले हमारे मंत्री भाई इमरान पर भरे सचिवालय

के अंदर ऑन विडियो ऑन कैमरा हमला होता है। सारी चीजें सामने... आदमी आईडेन्टीफाई हो रहे हैं। उसका क्या हुआ, हम सब जानते हैं और यहाँ पर स्टेज के ऊपर मुख्यमंत्री स्पीच दे रहे हैं उन तक के ऊपर एफआईआर हो जाती है। इतना शर्मनाक रवैया दिल्ली पुलिस का है। क्योंकि समय काफी अध्यक्ष जी ने बोला था, थोड़ा समय है तो मैं सिर्फ दो मिनट में अपनी बात खत्म करूँगा। एक तो मैं मंत्री जो के उस प्रस्ताव से पूरी तरह सहमत हूँ और सौरभ भाई ने बात को आगे बढ़ाया कि अगर आप इतने कॉन्फीडेंट हो तो आप दिल्ली के अंदर एक सर्वे करा लो कि अगर 50 परसेंट दिल्ली वाले भी ये बोल देते हैं कि हम दिल्ली पुलिस की कार्य प्रणाली से संतुष्ट हैं, दिल्ली पुलिस बहुत बढ़िया काम कर रही है तो बेशक दे देना। अगर उसके ऊपर बहुत मेजर पब्लिक ये बोल रही है, जी, नहीं दिल्ली पुलिस नहीं सुधरी। दिल्ली पुलिस ये करती है जो आप कह रहे हो तो आप ये कंपनसेशन देना रोक दो जी। मैं मंत्री जी के उस प्रस्ताव से पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि इनको शह है... सारे जानते हैं सेन्टर की... केन्द्र सरकार की मोदी सरकार की मिली हुई है पर हम भी डटे हुए हैं तो अपनी दो लाइनें कह के बात खत्म कर रहा हूँ:

भले बुझाने की जिद पर... भले बुझाने की जिद पर हवा अड़े जा रही है,

मगर चिराग की लौ और भी बढ़े जा रही है, बहुत बहुत धन्यवाद।
इंकलाब जिंदाबाद।

माननीय अध्यक्ष: अलका लाम्बा जी।

सुश्री अलका लाम्बा: अध्यक्ष जी, आपने मंत्री सत्येन्द्र जैन जी द्वारा रखे गये प्रस्ताव पर मुझे बोलने के लिए आमंत्रित किया है, मैं अपनी बात

को शुरू करूँ, उससे पहले मैं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को जो सात मई 2016 को मैं शब्द को दोहराऊँगी नहीं, एक शब्द का इस्तेमाल किया था पुलिस के लिए जिसे दस सितंबर 2010 को अदालत ने मुख्यमंत्री को ये कहते हुए बरी कर दिया कि उस शब्द में कोई गलती नहीं थी, जो शब्द इस्तेमाल किया। मैं दोबारा इस्तेमाल नहीं कर रही हूँ दिल्ली पुलिस के लिए वो शब्द सही इस्तेमाल किया था इसलिए दिल्ली के मुख्यमंत्री को उस मामले से बरी कर दिया गया है।

अध्यक्ष जी, ये अखबार है आठ साल में दिल्ली पुलिस के 250 से अधिक पुलिस कर्मी बर्खास्त हुए। क्यों बर्खास्त किया गया 250 पुलिस कर्मियों को? क्या आरोप थे? पुलिस कर्मियों पर अपहरण किया... पुलिस कर्मियों ने, डकैती की, हत्या के मामले में छेड़छाड़ के मामले में रिश्वत खोरी के मामले में। ये कोई अपराधी नहीं हैं, ये पुलिस वाले हैं। 250 पुलिस वाले इन मामलों में गंभीर मामलों में हत्या, छेड़खानी, डकैती में जो है, इनको सस्पेंड किया गया और ये अगर पुरानी खबर है तो आज का ताजा अखबार हिंदुस्तान टाइम्स उठा लीजिए आज की अखबार है, हेड लाइन पढ़िये:

'Afternoon horror: real copes may have extorted couple, scared tactics confidence shown by copes, shoot youth friends' ये लुटियंस दिल्ली का मामला है अध्यक्ष जी, ये कल का ही मामला है। लुटियंस दिल्ली के खान मार्केट में दो कपल्स जो खाना खाकर खान मार्केट से निकल के लोधी रोड होते हुए गोल्फ लिंक पहुंचते हैं और दो को पुलिस वाले जो हैं, उन्हें जो है, 'आपको गलत झूठे केस में फंसा देंगे। आप गाड़ी में बैठ के गलत काम कर रहे थे... ये कर रहे थे। उनसे पैसे उगाते हैं। दस हजार रुपया वो दे देते हैं कि आप झूठे आरोप लगा रहे हैं, चलिए आपको थाने लेकर चलते हैं और उन्हें अपनी बाईक आगे लगाकर थाने तक ले

भी जाते हैं और करते कुछ नहीं, सिर्फ डराते हैं, धमकाते हैं। उनको बहुत इतना खौफ में ले आते हैं कि वो जो जो कहता है पुलिस वाला, वो करते चले गये और दस हजार रुपये से जब मन नहीं भरा तो उनके एटीएम कार्ड निकाल के उनके एटीएम मशीन पर ले जाकर वहाँ से भी पैसे निकालते हैं और सब कुछ निकालने के बाद उन्हें जाने देते हैं। ये काम दिल्ली पुलिस आज कर रही है।

अध्यक्ष जी, दिल्ली पुलिस का जो एक लाख साठ हजार... ये कल का मामला है; दिल्ली पुलिस का चाल और चरित्र सामने आ रहा है। अब तो ये भी कहने लगे, 'ये दिल्ली पुलिस नहीं, बीजेपी की लठैत विंग बन गई है।' ये भाजपा के लिए लठैत इसकी जो लट्ठ है, वो सिर्फ भाजपा की विंग है। जो ऊपर से आदेश आयेगा, उसके लिए चलेगी। शांति, सेवा और न्याय इनके नारे हैं। शांति के नाम पर... फिर आज की तस्वीर... आज की अखबार है पंजाब केसरी 'मॉब लिंगिंग में युवक की हत्या।' ये शांति है दिल्ली के अंदर। आज सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद भी दिल्ली का माहौल इस तरीके से बिगाड़ा जा रहा है कि आज भी भारत की राजधानी दिल्ली के अंदर जहाँ कि पूरी तरह से पुलिस और कानून व्यवस्था केन्द्र के अधीन है, वहाँ पर जो है, इस तरह से मॉब लिंगिंग होती है। सेवा के नाम पर सिर्फ भाजपा के नेताओं की सेवा। वो भी किस लिए? क्योंकि अगर केन्द्र खुश रहेगा, इन्हें मनचाही पोस्टिंग, प्रमोशन और कमाई वाले थाने मिलेंगे।

अध्यक्ष जी, मैं जहाँ की विधायक हूँ, सिविल लाइन थाना मोटी कमाई का अड़्डा है। मोटी कमाई... मैं पूर्व डीसीपी का नाम नहीं ले रही हूँ, खूब मोटी कमाई कमा कर दी उन्होंने केन्द्र के लोगों से नशे और अवैध धंधों से उस डीसीपी ने जो आज केन्द्र में किसी मंत्री के नई दिल्ली के डीसीपी होकर प्रमोट होकर चले गये, दूसरे डीसीपी आये बहुत ईमानदारी से उन्होंने

नशे के खिलाफ वहाँ पर लड़े और मद्रासी कालोनी जैसे इलाकों में रेड की और नशा पकड़ा। उन्हें काला पानी भेज दिया गया।

तीसरी डीसीपी आई है, महिला हैं, डरती हैं क्योंकि उन्होंने देखा है कि दिल्ली की महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल जब नशे के अड्डों पर छापा मारी कर रही थी तो एक महिला पुलिस को पुलिस की जिप्सी से किस तरीके से बालों से खींचकर नीचे लाया गया, आज एक महिला आईपीएस अधिकारी जो हमारी डीसीपी हैं, उन्हें भी डर लगता है। वो नहीं आती है इन इलाकों में बिल्कुल भी। क्योंकि उन्हें डर है कि उनके साथ भी ऐसी वारदात जो है, वो हो सकती है।

अध्यक्ष जी, अभी विधायक बैठे थे, हमारे ओ.पी. शर्मा जी। भाजपा के विधायक हैं, पटियाला कोर्ट के बाहर सरेआम उन्होंने छात्रों को पीटा। लेकिन पुलिस की हिम्मत नहीं हुई... ओ.पी. शर्मा बीजेपी के विधायक की मारपीट पब्लिक प्लेस में करते हुए एक एफआईआर दर्ज करते। इतना ही नहीं, भाजपा के सांसद हैं, दक्षिण दिल्ली से रमेश विधूड़ी जी, अभी उन्होंने पूर्वांचल के लोगों को सिर्फ गाली गलौज नहीं की, पूर्वांचल के लोगों को पीटा, वीडियो-आडियो सब उनके पास सबूत है, उसके बाद भी दिल्ली पुलिस की हिम्मत नहीं होती कि भाजपा के सांसद पर हाथ भी डाल दे। तीसरा मामला मनोज तिवारी जी का है, वो भी भाजपा के सांसद है। जिस पुलिस वाले को उन्होंने धमकी दी कि तुम्हें मैं देख लूँगा, गिरेबान में हाथ डाला पुलिस वाले के, लेकिन पुलिस वालों की हिम्मत नहीं है। अमानतुल्लाह हमारे विधायक हैं, उन्होंने सिर्फ मंच पर... आप सुन सकते हैं वीडियो में, माननीय मुख्यमंत्री का भाषण चल रहा है, वो मंच की तरफ बढ़ रहे हैं, उकसा रहे हैं; चार बजे से छः बजे तक, लेकिन एक विधायक सिर्फ उन्हें हाथ से वहाँ पर रोकते हैं और वो एक ऊंचाई पर खड़े थे, बैलेंस बिगड़ गया, उस

पर अटैम्ट टु मर्डर, अटैम्ट टु मर्डर। और कोर्ट ने तुरंत इन्हें बेल दे दी कि थोड़ा सा रोकने से, धक्का लगने से अटैम्ट टु मर्डर आप क्या कह रहे थे। उनको बेल मिल जाती है। लेकिन मनोज तिवारी के ऊपर मामला दर्ज नहीं होता। लेकिन होता क्या है, वो मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि जिस अधिकारी का गिरेबान मनोज तिवारी, भाजपा के सांसद ने पकड़ा था, आज पता लगता है कि राजेन्द्र प्रसाद मीणा जिनका नाम है, उन्हें दिल्ली से, जो अपना नॉर्थ ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के एडिशनल डीसीपी थे, उन्हें दिल्ली से हटाकर हैदराबाद भेज दिया गया है और कहा गया... उन्हें ट्रेनिंग पर भेजा गया है जब कि मनोज तिवारी के पत्र के बाद ये कार्रवाई हुई है और जिन पुलिस के 20 अधिकारियों को हैदराबाद ट्रेनिंग में जाना था, उनमें उनका नाम ही नहीं था। लेकिन मनोज तिवारी ने कह दिया, उनकी सत्ता, उनकी सरकार है, सांसद हैं, कैसे हो सकता है कि राजेन्द्र प्रसाद मीणा को सबक न सिखाया जाए! उन्हें हैदराबाद भेज दिया गया।

अध्यक्ष जी, तीन उदाहरण व्यक्तिगत अपने बता रही हूँ। सब विधायकों ने अपने-अपने उदाहरण बताए हैं।

माननीय अध्यक्ष: आप समय सीमा का भी ध्यान रखें।

सुश्री अलका लाम्बा: मैं बता रही हूँ अध्यक्ष जी। महिला विधायक हूँ 2015 का मामला नोट कर लीजिएगा।

2015 में प्राचीन हनुमान मंदिर, यमुना बाजार के बाहर 'नशे से आजादी' अभियान, दिन कौन सा था, 9 अगस्त क्रांति दिवस, 15 अगस्त तक एक हफ्ते का अभियान था। मुझ पर पत्थर से हमला होता है, पुलिस की उपस्थिति में हमला हो जाता है और पुलिस की उपस्थिति में जब हमला होता है, मेरे सिर पर चोट आती है, एलएमसी होती है, घर पहुंचती हूँ, मेरी

एफआईआर नहीं ली गई आज तक। तीन साल हो गए अध्यक्ष जी, घर पहुंचती हूँ, पता लगता है अलका लाम्बा के ऊपर एफआईआर दर्ज हो गई। तीन साल केस को मैंने लड़ा; पटियाला कोर्ट में बाइज्जत बरी होकर आए। ये पुलिस वर्सेस विधायक हो गया था, क्योंकि झूठे मामलों में फंसाने का पूरा दबाव भाजपा द्वारा इनके ऊपर है इसलिए हमारे 22 विधायकों पर झूठे मुकद्दमें डाले, पिछले चार सालों में और 21 विधायक बाइज्जत बरी होकर आते हैं।

जो मुख्यमंत्री के साथ सचिवालय में हुआ अध्यक्ष जी, मैं उस समय, मेरी विधान सभा है, मैं वहीं पर थी, तुरंत मुख्यमंत्री के घर पहुँची। लोगों में बहुत ज्यादा डर हो गया कि अगर मुख्यमंत्री सुरक्षित नहीं है तो दिल्ली का आम नागरिक कैसे इस दिल्ली पुलिस के अधीन सुरक्षित हो सकता है। हम सब को चिंता हुई। आज जो लोग कहते हैं कि विधान सभा का सत्र एक व्यक्ति के लिए बुलाया गया है, मैं माफी चाहूँगी ये लोकतंत्र के ऊपर, चुने हुए मुख्यमंत्री के ऊपर हमला होता है और एक बार नहीं, अनेकों बार होता है, पुलिस की उपस्थिति में होता है। अध्यक्ष जी, उन्होंने कहा, कंधा थपथपाया, वो ही डीसीपी जिनको यहाँ से प्रमोशन करके भेजा गया, जो नशे के अड्डों को यहाँ से दे रहे थे, उन्होंने बयान दिया और यहाँ तक कहा कि नहीं, वो तो मिर्ची पाउडर गिर गया था। वो वहाँ पर अपनी समस्या हल करने आए थे, या फिर वहाँ पर अपना पकवान बनाने आए थे कि मिर्ची और नमक लेकर आए थे। और अध्यक्ष जी, ये भी बता दूँ, पुलिस जब छानबीन करती है, एयरपोर्ट से लेकर कहीं भी वीआईपी... आप चले जाइए राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आवास, एक-एक जेब की जाँच होती है, एक-एक पुड़िया निकलवाई जाती है कि कहीं कुछ गलत तो नहीं है। तो मुझे लगता है कि जब सचिवालय में वो शख्स गया, उस समय उसकी जेब की तलाश

क्यों नहीं ली गई? कहाँ पुलिस नाकाम रह गई, उसकी पूरी तलाशी लेने में और वो मिर्ची पाउडर निकालने में? या तो उसे जानकर छोड़ दिया गया पॉकेट के अंदर और या फिर आपने सही से जाँच नहीं की? ये तो गलती आपको माननी पड़ेगी। दोनों में से एक चीज तो है, या तो जानकर मिर्ची पाउडर अंदर जाने दिया और या तो आपने उसकी अनदेखी की और आपने जाँच ढंग से नहीं की। जो हमारा यहाँ पर आरोप है कि दिल्ली पुलिस मुख्यमंत्री की सुरक्षा को लेकर बिल्कुल गम्भीर नहीं है और हमें बिल्कुल इस बात का डर है। क्योंकि 2019 आ गया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री जिस तरह से हरियाणा के अंदर या दूसरे राज्यों में जिस तरह से दिल्ली के शिक्षा और स्वास्थ्य के मॉडल पर हिंदुस्तान की राजनीति को लाकर, चर्चा को लाकर खड़ा करना चाहते हैं, वहाँ इन्हें डर लग रहा है। क्योंकि वहाँ ये फेल हो जाते हैं। इसलिए आने वाले समय में, हमें पूरा डर है ये हमले एक के बाद एक बढ़ सकते हैं।

अध्यक्ष जी, दूसरा मामला... तीन मामले आपको कहा था।

माननीय अध्यक्ष: आप खत्म करिए जल्दी से।

सुश्री अलका लाम्बा: अध्यक्ष जी, दूसरा मामला 1 अगस्त का है। तिब्बत कॉलोनी, पुलिस की चौकी में बकायदा फेसबुक लाइव है, सबूत उपलब्ध हैं। पुलिस बिजली की चोरी वहाँ पर अवैध रेहड़ी पटरी लगवाकर, जहाँ से नशे का धंधा होता है, तिब्बत कॉलोनी, अरूणा नगर के पुलिस थाने से बिजली की चोरी करा रही थी। मैंने बिजली अधिकारियों को बुलाया, बोला, “ये जाँच करो। इन सब रेहड़ी पटरी वालों को।” जहाँ से अवैध नशे का धंधा चल रहा है, तिब्बत कॉलोनी के पास में, ये कहाँ से इनको बिजली मिल रही है? उन्होंने जब बिजली की तार को फॉलो करना शुरू किया तो

अरुणा नगर, तिब्बत कॉलोनी के पुलिस चौकी से वो बिजली की चोरी करवाई जा रही थी और जब मैंने लाइव पकड़ा। पुलिस वाले वहाँ से चौकी छोड़कर भाग गए। डीसीपी को फोन किया, आज तक कोई कार्रवाई नहीं है।

तीसरा मामला 13 अक्टूबर का है अध्यक्ष जी। 13 अक्टूबर को, 14 अक्टूबर को मुख्यमंत्री का मेरी विधान सभा में कार्यक्रम था। घर-घर लोगों को बुलाने जा रही थी। एक दरवाजा जो बहुत खटखाने के बाद नहीं खुला अध्यक्ष जी। तो लोगों ने मुझे कहा, “नहीं, आप इसको खुलवाइये।” मैंने कहा, “लोग रेस्ट कर रहे होंगे, आराम कर रहे होंगे।” “कोई नहीं, नीचे से पर्चा डाल दीजिए कि कल मुख्यमंत्री आ रहे हैं।” “ऐसे नहीं, आप खुलवाइये।” वहाँ की महिलाओं ने कहा। अध्यक्ष जी, जब मैंने वहाँ का दरवाजा खुलवाया उस घर का, जो बिल्कुल चौकी है, सिविल लाइन की चौकी के सामने वाले घर हैं, पूरा प्रोटेक्शन है। कब क्या होना है, इशारे में काम होते हैं सब वहाँ पर। अध्यक्ष जी, वहाँ पर दरवाजा खुलवाया तो हमारी नौजवान पीढ़ी, बच्चे वहाँ के चांदी के वर्क के ऊपर स्मैक, नशा करके पड़े हुए थे। तुरंत फोन किया डीसीपी मैडम को। आधे घंटे तक कोई नहीं आया। जो दो कांस्टेबल आए, लोगों ने खदेड़ना शुरू कर दिया। “यही तो हैं जो यहाँ पर नशे का अवैध धंधा ये दो कांस्टेबल करवा रहे हैं। यही तो सब यहाँ पर बढ़ावा दे रहे हैं। अध्यक्ष जी, 13 अक्टूबर को 12.00 बजे से लेकर शाम को 5.00 बजे तक मैं मजनू टीला गुरुद्वारे के चौराहे पर पूरी दिल्ली जाम हो गई थी, कश्मीरी गेट-आईटीओ तक। पुलिस ने आश्वासन दिया कि हम इनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे। अध्यक्ष जी, फेसबुक लाइव है उसका भी... 13 अक्टूबर का कि बकायदा पुलिस को घर में ले जाकर स्मैक के बड़े-बड़े लाखों रूपए की स्मैक जब्त करवाई है अध्यक्ष जी मैंने। लेकिन पुलिस कहती है, “आपने उसकी एफआईआर नहीं की।”

हमारे थाना लेवल की कमिटियों को खत्म कर दिया गया। बोला, "सात सांसद हैं भाजपा के इसलिए जिला स्तर की कमिटियों की मीटिंग होगी। मैं अध्यक्षा जी, आपसे निवेदन इस हाउस में करना चाहती हूँ, दिल्ली के सात सांसद हैं, सात हमारी कानून व्यवस्था के ऊपर कमिटियाँ बनी हुई हैं, जिसे सांसद चेयर करते हैं; कृपया इसकी जानकारी इस हाउस में मंगवा लीजिए कि कब-कब भाजपा के सातों सांसदों ने दिल्ली की कानून व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा को लेकर मीटिंग बुलवाई है। कौन-कौन उन मीटिंगों में शामिल होता है। क्योंकि मैं जो आपको बता रही हूँ, जो मेरी मीटिंग लास्ट हुई है, डाक्टर हर्षवर्धन चादनी चौक के सांसद हैं, कमिटी के चेयरमैन हैं। अध्यक्षा जी, वो मीटिंग में नहीं आते हैं। पता लगता है, वो नहीं आ रहे तो उनके पी.ए मीटिंग करेंगे। हम सबने विरोध किया कि सांसद और पी.ए में... लोगों ने सांसद को चुना है, पी.ए को नहीं चुना है। पी.ए. इस मीटिंग को नहीं कर सकते। तो कहा ठीक है अब डीसीपी करेंगे। थोड़ी देर बाद पता लगता है डीसीपी भी छुट्टी पर है, एडिशनल डीसीपी करेंगे। जब मैं एडिशनल डीसीपी से ये पूछती हूँ कि 13 अक्टूबर को मैंने आपकी पुलिस को स्मैक पकड़वाई, फेसबुक लाईव किया, सारे सबूत तथ्य आपके पास उपस्थित हैं। आपने क्या कार्रवाई की? एडिशनल डीसीपी का बयान था, मैडम आप यहाँ पर अपने व्यक्तिगत मामले उठा रही हैं। जैसे आज कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री के ऊपर हमला एक व्यक्ति के ऊपर हमला है। मैं ये कहना चाहती हूँ कि मुख्यमंत्री के ऊपर हमला व्यक्तिगत हमला नहीं है। मेरे द्वारा उठाई गई स्मैक, पकड़ाई गई चीज जो है, वो कोई मेरी व्यक्तिगत घर का घरेलू पर्सनल मामला नहीं था। एक जन प्रतिनिधि होने के नाते इलाके में नशे का धंधा है, मैं आपको स्मैक पकड़ा रही हूँ, स्मैक आपने जब्त कर ली। क्यों एफआईआर... अक्टूबर से नवम्बर आ गया, आपने दर्ज नहीं की? क्यों आपने उन पुलिस अधिकारी, जो दो वहाँ पर लोगों ने

एक्सपोज किया, जो भाग खड़े हुए वहाँ पर छोड़कर। कहाँ है वो स्मैक? कहाँ है वो एफआईआर? क्या कार्रवाई की? आपको याद होगा एक पाँच सितारा होटल में एक बड़े नेता का बेटा पिस्टल हिला रहा था, सिर्फ एक विडियो वायरल हुआ। पुलिस ने उसको खोजा उत्तर प्रदेश से और जेल भेज दिया। यहाँ पर एक चुनी हुई जन प्रतिनिधि सारे सबूत हैं। इमरान हुसैन के ऊपर दिल्ली सरकार के मंत्री हैं, सचिवालय के अंदर हमला होता है; सीसीटी फुटेज हैं। दिल्ली पुलिस एफआईआर नहीं करती, कोर्ट जाना पड़ता है मंत्री को और कोर्ट से इजाजत लेकर आनी होती है। अध्यक्ष जी, एक मामला हो तो बताएँ और आज जिनको भी लगता है कि ये सिर्फ मुख्यमंत्री के ऊपर हमला हुआ है, वो आम आदमी पार्टी के नेता हैं और व्यक्तिगत हमारा मामला है, तो ये उनकी भूल है।

ये भी कहा गया अध्यक्ष जी कि अरविंद केजरीवाल सरकार से लोग खुश नहीं हैं। युवा गुस्से में हैं। पहले तो भाजपा ये तय कर ले अध्यक्ष जी कि यूथ गुस्से में हैं, या फिर वो हमारा ही आदमी था। ये दो आरोप तो एक साथ सच नहीं हो सकते। या तो वो हमने खुद करवाया था, मुख्यमंत्री ने हमला... अपने ही कार्यकर्ता से, ये बात सच है, या फिर ये बात सच है कि यूथ उनसे खुश नहीं हैं और अगर यूथ खुश नहीं हैं, जिसने हमला किया तो मैं देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी से कहना चाहूँगी, चुनौती देकर कहना चाहूँगी, अगर ये गुस्से का इजहार करने का तरीका है तो अपनी एक बार पुलिस सुरक्षा को छोड़कर बाहर आइये। जिन युवाओं को आपने रोजगार का वायदा किया था, जिन किसानों को आपने कर्ज मुक्त करने का वादा किया था, जिस माँ-बहन-बेटियों को सुरक्षा का वायदा किया था, एक बार सुरक्षा के घेरे से देश के प्रधानमंत्री निकलकर दिखाएँ, गुस्सा

क्या है, वो देश उनको दिखा देगा। नोटबंदी के बाद चौराहे उनका इंतजार कर रहे हैं। नोटबंदी के बाद चौराहे उनका गुस्सा, गुस्सा हम दिखा देंगे।

सबको पता है वो शख्स जो पकड़ा गया, वो भाजपा का कार्यकर्ता था, जैसे हमारे एक विधायक ने भी बताया है कि जहाँ वो रहता है, उसका साथ वाला जो घर है, वो भाजपा के बड़े नेता का घर है।

जिस तरीके से ये युवाओं का माइंड वाश कर रहे हैं, किस तरह से उन्हें इस्तेमाल कर रहे हैं, किस तरीके से उन्हें हिंसा पर उतरने पर मजबूर कर रहे हैं वो साफ दिखता है; उसने जब अपने बयान में, जब पुलिस उसे ले जा रही थी उस शख्स को, जिन्होंने मिर्ची का हमला किया है मुख्यमंत्री के ऊपर, उनको ले जा रही थी, उसने साफ कहा, “मैं देशभक्त हूँ, देश को खतरा है। हम भाजपा को, मोदी को लाना चाहते हैं।” तो साफ पता लग रहा है युवाओं का माइंडवॉश कर चुके, इसीलिए आज देश में बहुत अपने आप में एक माहौल ऐसा बन चुका है जो सबके ऊपर एक खतरा मंडरा रहा है। मैं आपसे कहूँगी, “विश्व की सबसे बड़ी महानगरी में, दिल्ली पुलिस आती है।” ईमानदार लोग भी हैं, अच्छे लोग भी हैं, मैं भी बहुत पुलिस वालों को जानती हूँ, 25 साल से हिन्दुस्तान की राजनीति में हूँ, सलाम करती हूँ बहुत पुलिस वालों को, अपनी जान पर खेल रहे हैं, इसीलिए दिल्ली की सरकार जिस दिन 2015 में आई हम सबने खड़े होके दिल्ली के मुख्यमंत्री की इस बात का समर्थन किया कि जो देश में आज तक नहीं हुआ आजादी के 70 सालों में, जो दिल्ली की पुलिस अपना घर, परिवार सब छोड़ कर दिल्ली के नागरिकों और उन सब की सुरक्षा में लगी रहती है, वो अपनी ड्यूटी को करते, अपने फर्ज को निभाते हुए जब शहीद होते हैं, उनको अपने परिवार की चिंता नहीं होनी चाहिए, यही अरविंद केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने एक-एक करोड़ रुपए उनके परिवार, शहीद के परिवार को मदद देने का बात किया।

आज बहुत दुःख के साथ कहना पड़ा कि जब दिल्ली पुलिस इस तरह से बिना निष्पक्षता के, भेदभाव के एक भाजपा की लठैत विंग की तरह काम करेगी, एक-एक निर्दोष विधायकों को इस तरह से झूठे मामलों में फंसाएगी, हमारा आधा समय कोर्ट कचहरियों में, वकीलों में हमारी तनख्वाहें चली जाती हैं, अगर इस तरह से पुलिस करेगी तो मुझे ये कहते हुए बहुत अच्छा नहीं लग रहा है लेकिन मुझे ये कहना पड़ेगा कि दिल्ली सरकार को ये फैसला वापस ले लेना चाहिए। मैं आपके सामने एक मिनट नाम पढ़ देना चाहती हूँ जिन्होंने पुलिस वालों ने आत्महत्या की है: अनिरुद्ध, पुलिस कॉस्टेबल ने आत्महत्या कर ली, राजेंद्र ने हत्या कर ली, अमित खोरवार ने आत्महत्या कर ली, रामावतार ने आत्महत्या कर ली। क्यों आत्महत्याएँ कर ली? ईमानदार पुलिस वाले हैं, ऐसी जगह पोस्टिंग देते हैं, इतने घंटों की पोस्टिंग देते हैं कि अगर दिवाली-दशहरा भी हो, सुख-दुःख भी हो, अपने परिवार में शामिल नहीं हो पाते, इतने मानसिक पीड़ा से गुजर रहे थे कि आत्महत्या करने पर पुलिस ने इनको मजबूर कर दिया और उसी के साथ, सोनीपत के बीएसएफ के नरेंद्र सिंह, ईमानदार बीएसएफ पुलिस के अधिकारी थे, अभी भावना जी की विधानसभा पालम में विजेन्द्र सिंह और दीपक कुमार शहीद हो गए। दिल्ली के लिए, मुख्यमंत्री ने खुद जाकर उनके परिवारों को एक-एक करोड़ की मदद दी है, ये दो उदाहरण हैं आपके सामने। मैं अध्यक्षा जी, कहूँगी कि ये अपने आप में बहुत गम्भीर मामला है, आज की अखबार की सुर्खियाँ भी हैं। मैं आपसे सिर्फ ये कहना चाहूँगी, 3 अरब 66 लाख रुपए दिल्ली पुलिस ने मात्र 7 सालों में गाड़ियाँ किराए पर... इतने में तो पता नहीं दिल्ली पुलिस के पास, एसेट कितनी अपनी खुद की गाड़ियाँ बन गई होती और जो गाड़ियाँ ली हैं, वो कितनी गाड़ियाँ ली है? अध्यक्षा जी, 400 गाड़ियाँ, 400 गाड़ियाँ खरीदी जा सकती थी, 400

लोगों को ड्राईवर की नौकरी दी जा सकती थी, पर नहीं, मोटी कमाई होती है इसमें ट्रैवलर से, तो दिल्ली पुलिस को अभी तक 7 साल में 3 अरब 66 लाख की किराए पर गाड़ियाँ लेकर किराया और जब वो किराए पर गाड़ियाँ देती है तो ट्रैवलर से जाकर पूछिएगा। वो ये बताता है कि जब किसी बड़े अधिकारी के परिवार को लेकर दिल्ली के बाहर घूमने जाना होता है तो इसी ट्रैवलर से मुफ्त में गाड़ी लेकर जाते हैं वो। ये कौन पूछेगा? और आपको तो केंद्र सरकार से 270 गाड़ियाँ मिली हैं फिर भी चार सौ गाड़ियाँ पहले भी आती थी, 270 केंद्र से मिलने के बाद आज भी चार सौ गाड़ियाँ आपके पास आ रही हैं। क्योंकि मोटी कमाई आपकी इनसे आ रही है। और अध्यक्ष जी, लास्ट कहूँगी, उत्तर प्रदेश में जब योगी आदित्यनाथ जब भाजपा की सरकार आई, 30 हजार मामले... बहुत बड़ी विधान सभा है। चार सौ विधायक जीतकर आते हैं और सांसद 80 के करीब हैं। 20 हजार मामले अपने नेताओं के खिलाफ जो थे, सरकार बनते ही वापस ले लिए, यहाँ पर तो किसी पर कोई अपराधिक मामला नहीं था, जब हम सरकार में आए सबके ऊपर एक-एक मामले डालने शुरू किए, मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री तक को बख्शा नहीं गया। पुलिस से लेकर एसीबी से लेकर ईडी तक ये घर तक रेड डाल कर आते हैं, पेंट चैक करते हैं।

माननीय अध्यक्ष: अलका जी, खत्म हो गया आपका समय।

सुश्री अलका लाम्बा: अध्यक्ष जी लास्ट। कौन से मामले वापस लिए? एक नाम सुन लीजिएगा पूर्व गृहमंत्री हैं भाजपा के, नाम है, चिन्मयानन्द। क्या आरोप था? बलात्कार। बेटी का बलात्कार, चिन्मयानन्द अपनी शिष्या के साथ बलात्कार करते हैं। योगी आदित्यनाथ सरकार आते ही, अपनी ताकत का इस्तेमाल करती है और अपने नेताओं को बलात्कार के केसों से भी मुक्त कर देती है और यहाँ एक ऐसी सरकार है जो ईमानदारी से एक

आम आदमी के लिए काम करती है और उसके मुख्यमंत्री को, किसी भी स्तर पर जो है, वो है टारगेट करने का प्रयास किया जाता है। आज छोटी से छोटी घटना के ऊपर लोगों को गुमराह किया जाता है कि केजरीवाल सरकार क्या कर रही है। ये नहीं बताते कि दिल्ली की पुलिस, दिल्ली की कानून व्यवस्था, पूरी तरह से देश के गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी आपके पास है, देश के प्रधानमंत्री जी आपके पास है इसलिए जवाबदेही आपकी बनती है, लेकिन आज भी आप गुमराह करते हैं। कोई भी घटना होती है, केजरीवाल सरकार क्या कर रही है... और मैं इस बात को साफ कहके जा रही हूँ, उसे रिकॉर्ड में ले लिया जाए, अध्यक्ष जी, कि दिल्ली के मुख्यमंत्री... 2019 चुनाव में मात्र पाँच महीने बच गए हैं, उनके बढ़ते कदमों, को जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई है, जो देश को एक रखने की लड़ाई है, उसे रोकने के हर सम्भव प्रयास किए जाएँगे और ये पूरी लड़ाई दिल्ली पुलिस के कंधों पर रखकर जो है, वो लड़ी जा रही है। मैं दिल्ली पुलिस को भी कहूँगी, जब 49 दिन की सरकार आई थी, यही दिल्ली पुलिस थी, पूरी ताकत बनकर अरविंद केजरीवाल सरकार को ताकत देने का काम कर रही थी और एंटीक्रप्शन ब्रांच ने इतना शानदार काम किया, हर भ्रष्ट अधिकारी में खौफ पैदा हो चुका था, यही दिल्ली पुलिस थी। आज क्या हो गया इस दिल्ली पुलिस को? किस लालच में आ रहे हैं आप? क्या आपकी पोस्टिंग, प्रमोशन, आपकी कमाइयाँ क्या हैं? देश आज इतने गम्भीर दौर से गुजर रहा है; मात्र पाँच महीने हैं, मुझे इस बात का पूरा खतरा है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री के ऊपर ये हमले बढ़ेंगे ही। उनकी जान को खतरा हो सकता है क्योंकि आज सबसे बड़ी चुनौती भारत की राजधानी दिल्ली में... अगर केंद्र की मोदी सरकार को अगर कोई दे रहा है तो कोई ओर नहीं, दिल्ली का मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दे रहा है, बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्ष: बंदना कुमारी जी।

श्रीमती बंदना कुमारी: अध्यक्ष जी, देश की राजधानी दिल्ली में बढ़ती अपराध और अपराधिक मामलों को लेकर आज ये सदन बहुत ही चिंतित है। आज मैं एक छोटी सी बात से शुरू करूँगी। हमारा इलाका शालीमार बाग विधान सभा पड़ता है, शालीमार विधानसभा एक पॉश एरिये में और वहाँ पे व्यापारी से ले के मीडिल क्लास फेमिली, हाई क्लास फेमिली, लोअर क्लास फेमिली, हर तरह के लोग रहते हैं। हर तरह के लोगों में, जिस भी जगह जाएँ, वहाँ कोई सुरक्षित नहीं है। एक रिक्शा वाला भी अपनी कमाई ले के शाम को जब घर जाता है, उसको भी चाकू दिखा के उसकी कमाई छीन ली जाती है। एक सब्जी वाला जाता है वो कमाके, जो दिन भर की कमाई घर लेके जाता है, उसको भी चाकू दिखा के छीन ली जाती है। एक मिडिल क्लास फेमिली घर से उतरता है, अपनी पर्स लेके, अपनी जेब लेके उसकी जेब कतर ली जाती है। व्यापारी है, व्यापारी अपना पैसा ले के, बैंक में जमा कराने जाता है, उसकी बैग छीन ली जाती है, बंदूक के नौक पे। खुलेआम खूब चल रहा है! आजादपुर मंडी की जो अभी बहुत बड़ी घटना सामने आई है, क्योंकि हमारे क्षेत्र में बहुत बड़ा व्यापारी लोग वहाँ पे रहते हैं और वहाँ से लेके वो बैंक तक जाते हैं पैसे लेके। आए दिन उनकी बैग छीन ली जा रही है। आए दिन... जो हमारे वहाँ पे मैबर हैं मंडी के, उनके बेटे पैसा लेके जा रहे थे, उनका बैग बंदूक की नोक पे छीन ले गए। इस तरह की वारदात... अभी-अभी तुरंत एक मैसेज आया है, जो अभी-अभी पार्क में चैन स्नैचिंग हो गई, बाइक उसने वहीं छोड़ दिया, हेलमेट छोड़ दिया, वो चैन लेके भाग गया। लोग चैन पहन के निकलने, चाहे कोई भी महिलाएँ... तो वो पहनना ही बंद कर दी। हद तो तब हो गई जब एक हमारे सरदार जी हैं, वो थाने में किसी कम्प्लेंट को देने गए थे, थाने

में हमारे एसएचओ साहब बैठे, “सरदार जी, आप ये कड़ा क्यों पहने हो? इतना मोटा कड़ा पहन के आप क्यों चल रहे हो?” एक एसएचओ ये बात बोल रहे हैं, “ये कड़ा पहन के क्यों चल रहे हो?” उनको बड़ी आश्चर्य हुई। ये एसएचओ साहब भी, जहाँ सुरक्षा के लिए बात करने हम आते हैं, जहाँ कड़ा पहन के हम चल सकें, वहाँ पे एसएचओ साहब कह रहे हैं, “आप कड़ा पहन के क्यों जा रहे हैं?” तो हम सबके लिए बहुत ही चिंता की विषय है जो हमारे एरिये में दिन-दहाड़े गोली चल रही है। जे डी ज्वैलर्स है, दिन में गोली के नोक पे उनकी सारी ज्वैलरी लूट ली गई। दिन में एक घर में प्लंबर के रूप में एक शख्स जाता है, दिन में महिला अकेली थी, उनको कत्ल कर दिया जाता है। उनकी गर्दन काट दी जाती है, दिन के समय। उसी तरह से शाम के समय 4 से 5 बजे एक प्रोपर्टी डीलर हैं, उनको बकायदा गोली चला दी जाती है। सुबह-सुबह 6 बजे पार्क में टहलते समय गोली फायरिंग करते जा रहे हैं। इस तरह की बहुत सारी घटना शालीमार बाग में ही नहीं, पूरी दिल्ली की रोज-रोज सुनने हमें आती है। क्यों हो रही है, क्यों नहीं, हमारे जो सांसद, चुने हुए सांसद हैं, जिनकी जिम्मेदारी सिर्फ एक ही लोगों की सुरक्षा लॉ एण्ड ऑर्डर को मेन्टेन करना या लैंड की रक्षा करना। दो जिम्मेदारी मात्र दिल्ली की जनता ने दी, साढ़े चार साल में। मैं अध्यक्षा जी, आपको बताना चाहती हूँ जिस 49 दिन की सरकार को जनता बहुत याद करती है, 49 दिन की सरकार में जब थाना लेवल कमिटी हुआ करती थी और वहाँ एसडीएम भी आते थे, चारों निगम पार्षद आते थे, आरडब्ल्यूए के साथी होते थे, जो प्रधान होते थे गाँव के, स्लम के, जहाँ के भी वो लोग आते थे, उनके बीच में बैठ के चर्चा होती थी लोकल समस्या पे, बात होती थी। और थाना लेवल कमिटी से भी बहुत सारी समस्याओं को सॉल्व किया जाता था। एसएचओ डायरेक्ट जवाबदेह

होता था विधायक के प्रति, जवाबदेह होता था लोकल जनता के प्रति, आरडब्लूए के प्रति, कालोनी के प्रति।

वो सारी कमिटी को खत्म कर दी गई और बना दी गई डिस्ट्रिक्ट लेवल कमेटी। जिसके चेयरपर्सन, जिसके चेयरपर्सन भाजपा के सातों सांसद। आज तक हमारे जो डिस्ट्रिक्ट लेवल के कमिटी हैं, उसमें 10 विधान सभा आती है। मुझे याद है मैं एक मीटिंग में गई और मेरे साथ चार साथी थे। कह दिया गया, "मैडम आपको अकेले जाने की इजाजत है, ये लोग नहीं जायेंगे।" आज भी मैं पूरे क्षेत्र में हमारी जनता, हमारे कार्यकर्ता घूमते हैं, पूरे क्षेत्र में हमारे साथी घूम रहे हैं और वो नहीं जाएँगे अंदर! मैडम आपको अकेले अलॉउ है। क्योंकि उनको तो कुछ बोलने देना नहीं है बस आकर आज तक कम से कम कितनी मीटिंग हो गई और मीटिंग तो होती है कोरम पूरा करने के लिए, सिर्फ मिनट्स बनाने के लिए। मीटिंग में कोई चर्चा नहीं। एक भी मीटिंग में सांसद नहीं। तो ये बात हम सबके लिए हमारे क्षेत्र की जनता के लिए, हमारी पूरी दिल्ली की जनता के लिए बहुत ही चिंता की विषय है। जनता डरी हुई है, सहमी हुई है। बैंक में वो अपनी जो भी सामान है, वो बैंक में रखे। रास्ते तक सुरक्षित नहीं। बैंक में जायें तो बैंक के जो कैशियर हैं, जो मैनेजर हैं, उनको बंदूक दिखाके उनसे लूट ली जा रही है। बैंक में भी सुरक्षित नहीं है। महिलाएं घर में रखें तो महिला आज के डेट में... मेरे क्षेत्र में तो ऐसी स्थिति हो गई है जो हस्बैंड वाइफ साथ नहीं घूम पा रहे हैं। हस्बैंड को बाहर जाते हैं तो वाइफ घर की रखवाली करती है। हस्बैंड... वाइफ जाती है तो हस्बैंड बैठ के घर की रखवाली करते हैं। ये स्थिति हो गई है। इतनी दहशत फैल गई है। ये इस सदन के लिए बहुत... क्योंकि बहुत दिलो जान से 67 सीट की सरकार इस सदन में हम सबको भेजा था अपनी सुरक्षा के लिए लेकिन अभी वो सारी चीजें

तो हुई, अभी रिसेंटली हम तो अपनी बात करते ही नहीं हैं। अभी रिसेंटली 3 नवम्बर की घटना है, बहुत ही दर्दनाक घटना है। 3 नवम्बर को हमारे यहाँ दिवाली मिलन का प्रोग्राम था। प्रोग्राम से जब हम निकल रहे थे तो रास्ते में देखे जो ऑफिस के बगल में ही भीड़ थी। भीड़ में पुलिस... बहुत सारी पुलिस आई हुई थी। हमने कहा क्या हुआ? तो एक लड़की, 21 साल की लड़की थी, उसकी दर्दनाक हाथ कटा, पैर कटा, गर्दन कटा। पूरी दर्दनाक उसकी कट-कट के उसकी शरीर के कितनी भाग हुए थे, पता नहीं। और वहाँ जब मैं रुकी तो वहाँ पुलिस हमें कह रहे हैं, “जो मैडम आप क्यों रुके हो यहाँ पे? आप तो जाओ ना। ये पर्सनल मैटर है।” अरे! इतनी बड़ी घटना घट रही है और पर्सनल मैटर इसको कह रहे हैं। चार ईंट लेकर कोई जाये ठेले वाले, तो पुलिस वाले को पता चल जाती है जो इसके पीछे जाना है। और चाकू, हथियार लेके मर्डर हो रहा है पुलिस वाले को पता नहीं चलती। पुलिस को पता नहीं होती जो कत्ल हो रहा है। घर में बैठे वहाँ भीड़ वाले इलाके में कत्ल हो रही है और पुलिस को पता नहीं चलती। ये हम सबके लिए बहुत ही दर्दनाक है। और आज जो दिल्ली की स्थिति हो रखी है, बहुत ही दर्दनाक है। उसी दिन जब हम, हमने कहा, हमारे पूरे साथियों ने कहा, “जब तक ये बॉडी जाती नहीं है पोस्टमार्टम के लिए, तब तक हम यहाँ से हिलेंगे नहीं।” ढाई बज गई रात को। ढाई बज गई, उसके बाद मैं घर आती हूँ। घर पे अभी घुसी, आराम करने के लिए लेटती हूँ तो उसी समय 5-6 गुंडे-बदमाश हाथ में... तुमने बताया पुलिस को, बोला पुलिस को, तुमने कहा कत्ल करवाया। तुमने इस तरह से करते हुए आठ-दस गुंडे सबके हाथ में हथियार मेरे घर के दरवाजे पे गेट को तोड़ते हुए आये और चिल्ला रहे हैं निकलो बाहर, निकलो बाहर। अगर मैं उस समय निकलती तो वो गोली सीधा चलती। अंदर से मैं एसएचओ को फोन कर रही हूँ। एक बार दस मिनट हो गये। फिर दूसरा फोन कर

रही हूँ, फिर दस मिनट हो गये, फिर तीसरा मैं 100 नम्बर को कॉल करी। हमारे घर से थाने की दूरी पैदल चलने पे तीन मिनट का रास्ता है पैदल चलने पे। वहाँ ये हालत है। आसपास के लोगों ने मुझे कहा, कल हमें क्यों नहीं बताया। एक बगल में हमारे बुजुर्ग हैं, वो तो देख रहे थे। वो बेचारे वो खुद डरे थे। हमने उनको कहा, “अंदर ही रहिये।” मैंने किसी पड़ोसी को फोन नहीं किया, जो निकलेगा, उसी पे गोली चलेगी। और उस समय जब पुलिस आयी तो पुलिस ने जो रास्ता बताया, उस रास्ता से नहीं आयी, दूसरे रास्ते से आयी। जैसे पुलिस की गाड़ी दिखी पुलिस को तो भागा, एक पकड़ा गया। एक पकड़ा गया तो वो पुलिस बस सुबह-सुबह मुझसे पूछ रही है, “मैडम, ये जुवेनाइल है, इसको क्या करें?” हमने कहा, “वो आप जानिये, क्या करेंगे। वो आपकी डिसिजन है, आप करो जो करना है।” ये कहके बात खत्म हो गई उसके बाद उसपे क्या हुआ, नहीं हुआ, कोई मामला नहीं। फिर अगले दिन एक आदमी... एक बच्चा ढाई साल का, गर्दन कटा हुआ नहर में फेंका। उसी तरह से एक एरिया में एक पार्किंग की छोटी मामला गोली चल गई।

माननीय अध्यक्ष: कंपलीट कीजिए मैडम।

श्रीमती बन्दना कुमारी: तो इस तरह की घटना लगातार घट रही हैं। और ये बीजेपी की कठपुतली भाजपा की केन्द्र शासित राज्य की कठपुतली बनी आज पुलिस घूम रही है। मैं ये नहीं कहती जो पुलिस ही यहाँ सौ परसेंट अपने मन से ये काम कर रही है। पुलिस को करवाया जा रहा है। ये भाजपा के द्वारा जो अगर तुम ऐसा नहीं किए, डरा-धमका के लोगों को नहीं रखे तो मैं तुम्हारा क्या करूँगा अभी बताई हमारी बहन अलका, जो मीणा जी का क्या हश्र हुआ। हैदराबाद भेज दिया गया। तो सभी पुलिस वाले को कहा जाता है, मेरी बातें नहीं मानी तो तुम्हारा हश्र वही होगा।

आज जिस तरीके से... एक छोटी सी घटना और बताऊँगी। सरकारी काम हम आप एक बच्चे को स्कूल में एडमिशन के लिए जब हम थाने जाते हैं, कहते हैं, "स्कूल में इसका एडमिशन करें" तो भाजपा का एक कार्यकर्ता आ के कहता है, "इन्होंने टीचर को धमकाया।" अरे! पुलिस स्कूल में बच्चे के एडमिशन के लिए, मैं नहीं बोलूँगी, तो कौन बोलेगा? मैं नहीं कहूँगी, तो कौन कहेगा। लेकिन भाजपा कही, "ये टीचर को धमका रही हैं।" उसी कड़ी में मैं बता रही हूँ, अभी एक डीडीए की बाउंडरी बन रही थी। डीडीए की जमीन थी; अवैध कब्जा हो रहा था। हमने लगातार लेटर दी डीडीए के साथियों को, डीडीए के डिपार्टमेंट को, विभाग को लगातार लेटर दी और उसमें जब बाउंडरी बननी शुरू हुई तो निगम की पार्षद हमारे वार्ड-62 की निगम की पार्षद ने जाकर कहा जो कि बन्दना जी के विधायक के लेटर पे तुम क्यों काम कर रहे हो? इस काम को रोको। और उन्होंने सारे एकदम जेनुइन काम, जायज काम डीडीए की प्लॉट को घेरी जा रही थी, उसपे बाउंडरी वॉल की जा रही थी ईंटों से और अधिकारियों को धमकाया, अधिकारियों के आँख से आँसू आ गये। मैं रूकी वहाँ पर, अधिकारियों ने कहा, मैडम... कुछ अधिकारी तो अच्छे भी होते हैं, कहे, "मैडम, आप चले जाओ, नहीं तो आप पे एफआईआर दर्ज हो जायेगी।" और उन्होंने जब नीचे के अधिकारियों ने कहा, मैं चली गई और वो सरकारी काम में बाधा बुरी तरीके से किया उन्होंने। इतना अधिकारियों को परेशान किया, इतना गाली-गलोच दी लेकिन उसपे एफआईआर दर्ज नहीं हुई। आज तक कोई कार्रवाई नहीं। उनके सामने बाउंडरी तोड़ दी गई। सिर्फ बाउंडरी से... खुन्दक इस बात सा था जो कि विधायक के कहने पे बाउंडरी आपने क्यों बनायी। विधायक के कहने से काम नहीं करना। और उस अधिकारियों को बुरी तरह प्रताड़ित किया गया। लेकिन आज तक...

माननीय अध्यक्ष: बन्दना जी।

श्रीमती बन्दना कुमारी: उस अधिकारियों पे कार्रवाई नहीं। वो अधिकारी नहीं, निगम पार्षद पे पुलिस की हिम्मत नहीं हुई एक आदमी भी एक एफआईआर दर्ज कर सके। तो आज जो दिल्ली की स्थिति है, वो हम सबके लिए बहुत चिंताजनक है। और जो हमारे मुख्यमंत्री जी पे या हमारे मंत्रीगण पे या सभी विधायकों पे जिस तरीके से परेशान किया जा रहा है, जिस तरीके से हैरास किया जा रहा है। इससे हम सब आहत नहीं हैं, हमें तो झेलने की आदत है।

अध्यक्ष महोदय: धन्यवाद।

श्रीमती बन्दना कुमारी: लेकिन दिल्ली की जनता जिन्होंने पूर्ण ताकत से पूर्ण बहुमत से अपनी पूरी ताकत लगा के हमें जितवा के भेजा था जो हमारे लिए सुरक्षा आज वो असुरक्षित महसूस कर रही है। वो चिंतित है जो हमारे मुख्यमंत्री जी को जिस तरह से उस दिन नहीं लगातार डे बाई डे जिस तरीके से हमला हो रहा है और सिग्नेचर ब्रिज पे जो हुआ, वो पूरे देश ने देखा। जो आज जिस तरीके से पुलिस पे मनोज तिवारी जी करते हैं हमला, उनपे कोई कार्रवाई नहीं होती है और कहा जाता है पुलिस को, जो तुम्हें देख लेंगे। और वही काम अगर आम आदमी पार्टी का कोई एक कार्यकर्ता, क्या विधायक क्या, कोई भी किया होता तो आज उस पे 10 एफआईआर लाद दी जाती। जैसे अमानत भाई पे लाद दी गई है। तो ये जो हो रहा है, इससे दिल्ली की जनता आहत है और हम सब जिस तरह से जैन साहब ने जो आज रेजल्यूशन दिया है, उस सब का समर्थन करते हैं और दिल्ली की जनता अपने आप को जो असुरक्षित महसूस कर रही है और केन्द्र की भाजपा की सरकार जिस तरह से दिल्ली के जनता

से जो बदला लेने का काम कर रही है 2019 में दिल्ली की जनता ने भी अपनी तैयारी कर ली है जो इनसे बदला लेगी अपनी जिस तरह से अपने आप को असुरक्षित, उनके अपने बच्चे असुरक्षित, उनकी परिवार असुरक्षित है, उसका बदला 2019 में लेगी जय हिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्ष महोदया: बहुत-बहुत धन्यवाद।

मेरा सभी साथियों से निवेदन है, समय सीमा का ध्यान रखें क्योंकि वक्ता बहुत है। आप लोगों में से... फिर साथियों को मुझे काटना पड़ेगा नंबर। तो प्लीज आप लोग अपने समय का ध्यान रखें। मनोज कुमार जी।

श्री मनोज कुमार: बहुत-बहुत धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया। सबसे पहले मैं पूरे सदन को संविधान दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ कि आज संविधान को भारत सरकार ने अंगीकृत किया था। उसके बाद 26 जनवरी, 1950 को वो लागू हुआ। वही चीज... हम लोग उस संविधान की पूजा करते हैं जिससे देश चलता है। ये दिल्ली राजधानी से भी राज्य चलते हैं। एक तरफ दूसरी सरकार है जो संविधान को फाड़कर के फेंकती है, उसकी अवहेलनाएँ करती है, उसका अपमान करती है और वहीं एजेंसियाँ पुलिस जो संविधान की शपथ लेकर के अपने कर्तव्य के लिए आते हैं और वो मूक-दर्शक बनकर के उनको देखते रहते हैं। यहाँ पर बहुत महत्वपूर्ण चर्चा आज हो रही है पुलिस को लेकर के। ये बिल्कुल सही बात है कि सभी लोग करप्ट नहीं हैं लेकिन कहावत है कि एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है। मुझे बहुत बुरा भी लगता है, उस समय जब पुलिस के ऊपर टिप्पणी भी होती है। क्यों होती है उसका कारण ये है कि मेरे पिताजी, मेरे चाचाजी, जीजाजी मेरा पूरा खानदान पुलिस में है। लेकिन शर्मिंदगी तब होती है जब एक पुलिसवाला रिश्वत लेकर के किसी बेगुनाह को छोड़ता

है। आज पूरे देश के अंदर जो शान हुआ करती थी, पुलिस कहा जाता था... दिल्ली पुलिस की सर्विस बड़ी अच्छी है, बहुत मुस्तैदी से काम करती है और आज पूरे देश का नाम पूरी दिल्ली का नाम शर्म से झुका हुआ है कि दिल्ली पुलिस सिर्फ पैसा लेकर काम करती है। सिर्फ भाजपा की एजेंट बनकर रह गई दिल्ली पुलिस। ये बात आज की नहीं है जब हम बहुत सारे लोग विधायक चुनकर के आए, जब उन्होंने देखा कि भाजपा पूरी तरह से साफ हो गई। तो इनके विधायकों को कैसे रोकना है, इनके मंत्रियों को कैसे टॉचर करना है, कैसे मुख्यमंत्री को काम करने से रोकना है, ये सारे षड़यंत्र बीजेपी के मुख्यालय में रचे गए। आज भाजपा का एक प्रदेश अध्यक्ष डीसीपी का कॉलर पकड़ लेता है। एक एसीपी को थप्पड़ मार दिया जाता है और उसे खुलेआम चेतावनी दी जाती है कि तुझे चार दिन में देख लेंगे। देख लेने का मतलब उसका ट्रांसफर कर दिया जाता है। सेम ऐसा ही एक मुकद्दमा मेरे ऊपर हुआ और ये हुआ 2013 में जिस दिन पोलिंग हुई। जिस दिन पोलिंग हुई, उस दिन जब मैं एक सेंटर में पहुँचा जहाँ पोलिंग हो रही थी; पोलिंग स्टेशन में। तो बाहर पुलिस वाले ने मुझे रोक दिया कि आप अंदर नहीं जा सकते, पाँच बज गए। मैंने उसे अपना एक कार्ड दिखाया कि जी ये जो वोटिंग हो रही है, मेरे लिए हो रही है। मैं कैंडिडेट हूँ आम आदमी पार्टी का। तो उसका इतना गंदा रवैया रहा। मैंने उससे कहा भाई मेरे लिए वोटिंग हो रही है मुझे शक है कि अंदर गलत वोटिंग हो रही है। उसने राइफल उठाकर मेरे सामने रखकर कहता है, "अंदर घुसा, गोली मार दूँगा। मुझे जब ये कहा गया तो मैं बाहर गेट के बाहर बड़े शांतिपूर्वक तरीके से आराम से धरने पर बैठ गया। एसीपी आए, उनको रिटर्न में कंप्लेंट दी कि इस पुलिसवाले ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया। उस पुलिसवाले को वहाँ से तुरन्त हटा दिया गया। उसके बाद वहाँ

पर एडिशनल डीसीपी साहब पहुंचे, उनको कंप्लेंट दी। दोनों कंप्लेंट आज रिसीव हैं 2013 की। परन्तु दिल्ली पुलिस ने आज तक एफआईआर, उस पर नहीं करी। उल्टा दिल्ली पुलिस ने मेरे ऊपर एफआईआर करी कि मैंने सरकारी काम में बाधा पहुँचाई। पुलिसवाले को धमकी दी कि तुझे मैं देख लूँगा जो एफआईआर में लिखा हुआ है, वो ये है कि मैं तुझे देख लूँगा। देख लूँगा पर 506 में मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है पटियाला हाउस कोर्ट में और एक वो है, देख लूँगा का मतलब एक एसीपी का ट्रांसफर यहाँ से हो जाता है। दिल्ली के अंदर दो तरह का कानून कैसे हो सकता है। अगर वो चुने हुए हैं सांसद तो चुने हुए हम भी विधायक हैं। दोनों के लिए अलग-अलग मापदंड कैसे हो सकता है? 2000 से पहले तो कोई नहीं थे मुकद्दमें। ऐसा अचानक क्या हुआ, 2013 के बाद कि लगातार सारे आम आदमी पार्टी के विधायक दागी हो गए, गुंडे हो गए। उन पर रोज मुकद्दमे किए जाते हैं। अब तो डर ये होता है कि घर से निकलो तो रुमाल से छींकना है, नहीं तो कल को एफआईआर पुलिस करेगी कि इसने छींका, वायरस से एक आदमी बीमार। ये हालत दिल्ली पुलिस की यहाँ पर है। सिर्फ दिल्ली पुलिस भाजपा के हाथ की कठपुतली बनी हुई है आज। जैसे सभी कई सारे माननीय सदस्यों ने चर्चा की; पटियाला हाउस कोर्ट के बाहर पूरा लाइव मीडिया ने दिखाया कि कैसे हमारे एक सदस्य भाजपा के विधायक एक नौजवान को मारपीट करते हैं और उस कोर्ट के बाहर मारपीट करते हैं। उसके बावजूद भी उनके ऊपर कोई कार्रवाई नहीं की गई। अगर हमारा कोई भी कार्यकर्ता, विधायक किसी काम को, अच्छे काम के लिए भी जाता है तो उसे पता भी नहीं होता कि उसके ऊपर एफआईआर लिख दी जाती है। सबसे शर्मनाक घटना हुई कि सचिवालय के अंदर कई बार हमारे विधायकों को रोक दिया जाता है पुलिस के द्वारा। कहने पर कि

हमारी गाड़ी पर स्टिकर भी है, आई कार्ड भी दिखा देते हैं। उसके बावजूद भी रोककर 5-5 मिनट खराब करते हैं। वो व्यक्ति कैसे वहाँ तक पहुँचा जो इतने सारे बैरिकेड पार करके गया। क्यों नहीं उसकी एक-एक जेब की तलाशी ली गई और बाद में कहा जाता है कि जी, उसकी जेब में मिर्ची पाउडर था, वो गलती से गिर गया। अध्यक्ष महोदया, मुझे बहुत चिंता हो रही है, अपने नेता की। इस देश के अंदर सबसे ज्यादा दर्द अगर किसी को है तो वो भाजपा को है कि अरविंद केजरीवाल कैसे दिल्ली का मुख्यमंत्री बन गया जो इतनी ईमानदारी से काम कर रहा है, जिसने पूरे विश्व के अंदर अकेली छोटी सी सरकार होते हुए शिक्षा के क्षेत्र में इतना बड़ा काम कर दिया, हैल्थ के क्षेत्र में इतना बड़ा काम कर दिया! उन्हें डर है कि आने वाला प्रधानमंत्री अरविंद केजरीवाल होगा, इसको कैसे ही रोकना है।

अध्यक्ष महोदया: पूरा कीजिए मनोज जी, जल्दी से।

श्री मनोज कुमार: मुझे तो डर ये होता है आजकल कि जिस तरह सरकारी कार्यक्रम के अंदर बोटलें फेंकी गईं। हो सकता है, किसी बोटल के अंदर तेजाब होता! वो फेंक देते उसके ऊपर। अब मुझे इस चीज का कोई भी अंदेशा नहीं है... किसी को भी कि वो मिर्ची पाउडर लेकर गया, वहाँ पर पानी की बोटल फेंकी गई कहीं ऐसा न हो कि भाजपा हमारे नेता की हत्या करवानी चाहती हो कि किसी तरह इस आंदोलन को रोका जाए। अगर ये बढ़ेगा तो ये सब नष्ट हो जायेंगे। एसीबी हमसे इसीलिए छिनी कि भाजपा के गंदे नेताओं के ऊपर कोई एफआईआर न हो, उनके ऊपर मुकदमे ना किए जाएँ। ताकि वो संरक्षण में रहे और भाजपा दिल्ली पुलिस को अपने लठैत अपने विंग की तरह इस्तेमाल कर रही है। जैसे और पार्टियाँ अपने यूथ को आगे कर देती है, यहाँ मोदी पुलिस से अपनी पुलिस को आगे कर देती है। पुलिस दिल्ली की जनता के पैसे से तनखाह लेती है,

काम तीन विधायकों के लिए सात सांसद के लिए करती है। दिल्ली की जनता तीन-साढ़े तीन करोड़ की आबादी में है लेकिन मात्र ईमानदारी से जो काम कर रही है दिल्ली पुलिस, वो भाजपा के 10 आदमियों के लिए काम करती है। ये कहाँ का न्याय है? पुलिस तो ऐसी नहीं थी। मुझे नहीं लगता कि आज कोई भी ईमानदार आदमी अपने बच्चों से ये कहे कि जाकर पुलिस में भर्ती हो जा। क्योंकि उसे पता है कि अगर बच्चे को करप्शन सिखाना है, बेईमान करप्ट बनाना है, जैसे अलका बहन ने अभी कई सारे तथ्य पढ़कर बताए, आंकड़े दिए कि कितने पुलिस अधिकारी हत्याओं लिप्त हैं, कितने लूट में लिप्त हैं तो कोई भी माँ-बाप नहीं चाहेगा कि उसका बेटा भी वैसा बने या उसकी बहन-बेटी भी ऐसा बने।

मैं अपने क्षेत्र की बात कर रहा हूँ; मयूर विहार, फेज-3 की कौंडली विधानसभा की। 2014 में तीन रिक्शे भरकर जाते हुए राशन के, मैंने रोके। पुलिस को बुलाया, अपने अधिकारी बुलाए गए, सरकार नहीं थी उस समय पर। सुबह से शाम हो गई, एफआईआर नहीं लिखी गई कि ये बोरियाँ राशन की कैसे बाहर निकली, गोलमोल करके वो खत्म कर दिया गया। जब पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी बनाए गए राशन के, उस समय हमने काम शुरू किया। अपने क्षेत्र की जो सबसे ज्यादा समस्या आती थी राशन को लेकर के। जाकर के हमने राशन की दुकानों की चैकिंग करी। दुकान को सील करने का अगर राइट्स किसी पर है तो वो एक अधिकारी के ऊपर होता है, न कि किसी विधायक के पास होता है।

अधिकारी ने देखा सारी गड़बड़ियाँ हैं, इसमें उसको समय दिया। इन्हें सही नहीं करने पे वो दुकानें सील कर दी गई। इन लोगों ने मिलकर के पुलिस के साथ मिलकर के पुलिस के एक एसएचओ ने 28 दुकानदारों को फोन किया राशन के कि एक लड़के को पकड़ा है हमने। तुम आ करके

एफआईआर करो। आज जब वो कोर्ट में मामला पहुँचा तो सभी के अन्दर न्यायालय ने हमें बरी किया उसके अन्दर। लेकिन पुलिस ने जानबूझ के हैरास करने के लिए, उनको संरक्षण देने के लिए ताकि वो खुल करके राशन को ब्लैक कर सकें, उस पे लोगों को राशन न मिल सके क्योंकि उनकी उगाहियाँ वहाँ से होती हैं। राशन की शॉप से वो उगाही करते हैं, शराब के ठेकों से वो उगाहियाँ करते हैं, अस्पतालों से वो उगाहियाँ करते हैं। सारे गलत धंधे अगर कहीं पे जाते हैं तो वो सारे वहीं से शुरू होते हैं, थाने से। हमारे सौरभ भाई ने बिल्कुल सही बात कही कि दिल्ली के अन्दर जनता से पूछ लिया जाए कि क्या दिल्ली पुलिस के काम से संतुष्ट हैं तो मैं दावे से कह सकता हूँ एक परसेंट दिल्ली के लोग नहीं निकलेंगे जो ये कहें कि पुलिस के काम से संतुष्ट हैं। यहाँ तक जनता उल्टा कहती है, मैडम अध्यक्ष महोदया, कि कोई पुलिस वाला जब मर जाता है तो जनता कभी दुःख व्यक्त नहीं करती, वो और ही कुछ टिप्पणियाँ करती है। वो कहती है, "अच्छा हुआ।" शहीद अगर कोई सिपाही हो जाए बॉर्डर पे फौज का, तो पूरे देश की जनता को दुःख होता है। कह रहे हैं यार! एक अच्छा ईमानदार आदमी सैनिक शहीद हो गया। ये भी वही सैनिक हैं। क्यों इन्होंने अपनी गरिमा को गिराई, क्यों भाजपा के एजेंट बने? जो आज इन्हें अपने ऊपर इतना शर्मिंदगी महसूस होती है। आज एक दिल्ली का मुख्यमंत्री उस शहीद को एक करोड़ की राशि देता है क्योंकि उन्हें पता है कि उसका परिवार कैसे चलता है। लेकिन बिल्कुल सही बात है दिल्ली की सरकार, दिल्ली की जनता का पैसा है, जब दिल्ली की जनता के हित में काम नहीं करोगे तो आपको एक करोड़ तो क्या मेरे हिसाब से आपको एक हजार रुपया देना भी ठीक नहीं है। मैं पूरी तरह से सौरभ भाई का भी समर्थन करता हूँ कि उनकी राशि जो एक करोड़ तय की गई है, वो वापिस की

जाए। मंत्री सत्येन्द्र जैन साहब का भी जो प्रस्ताव है, मैं पुरजोर से उसका समर्थन करता हूँ कि वो व्यवस्थाएँ बनें दिल्ली के हक के लिए, लड़ाई जो लड़ी जा रही है उसके अन्दर इनकी भी उतनी ही भूमिका है जितनी आम आदमी पार्टी या और दल के विधायकों की है, बहुत-बहुत आभार, बहुत बहुत धन्यवाद, जयहिन्द, जय भीम, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय: राजेश ऋषि जी। समय सीमा का ध्यान रखें राजेश ऋषि जी। सभी विधायकों से विन्नम प्रार्थना है।

श्री राजेश ऋषि: अध्यक्ष महोदय जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद। आज जो सत्येन्द्र जैन जी ने, हमारे मंत्री जी ने रेजुलेशन पेश किया है, मैं उसका पुरजोर समर्थन करते हुए अपना विचार रखना चाहता हूँ। जैसा कि अभी मनोज भाई बता रहे थे कि दिल्ली में दिल्ली पुलिस का राजनीतिकरण हो चुका है। ये बिल्कुल सत्य बात है। इसके कुछ उदाहरण मैं भी आपके सामने पेश करता हूँ। क्योंकि मैं बिना उदाहरण के आपको नहीं बता सकता कि ये बीजेपी की पुलिस बन चुकी है।

पुलिस कमिटी की पहली मीटिंग में जब हम पहुँचे तो वहाँ पे हमारे सांसद महोदय बैठे थे और वहाँ जितने भी नुमाइंदे बुलाए गए थे, जो मेम्बर्स वहाँ बनाए गए हैं। उन सबने पुलिस की वाह वाही, वाह वाही करना शुरू की। उसके बाद जब नम्बर मेरा आया तो मैंने अपने चेयरपर्सन जो हमारे सांसद जी थे, उनसे मैंने पूछा कि ये मीटिंग बीजेपी की है क्या? बोले, "क्या मतलब?" मैंने कहा, "जी ये पुलिस वाले आपने बुलाए हुए हैं इसमें।" बोले, "नहीं ये पुलिस की मीटिंग है।" मैंने फिर से, "सारे बीजेपी के लोग क्यों बैठे हैं, सारे के सारे?" कह रहे हैं, "कैसे कह सकते हो आप?" मैंने, "जी "वो आपका मण्डल अध्यक्ष है, वो आपका सारे... सबकी मैंने उनको

बताया कि ये सब वो लोग बैठे हैं आपके सारे। जब वो मेम्बर्स उन्हीं के सारे बैठे हैं और टोटल वहाँ पर पुलिस भी उन्हीं की राग में राग अलाप रही है तो हमारी क्यों सुनेगी? मैंने उनके सामने अपने जनकपुरी के कई मुद्दे रखे, पूरे उदाहरण के साथ रखे। मैंने उनसे कहा, "जी मेरे क्षेत्र के अन्दर अगर आप कोई भी नई गाड़ी खरीद के लेके आए, तो मात्र एक हफ्ते के अन्दर फॉर्चूनर जैसी गाड़ी चोरी हो जाती है और पुलिस को पता होता है, कहाँ जाती है। ये बात मैंने रखी थी वहाँ पर और अगर न चोरी हो आप मेरा नाम बदल दीजिए। क्योंकि वहाँ पर एक हफ्ते से ज्यादा कोई गाड़ी रुकती नहीं है जो गाड़ी घर के अन्दर भी खड़ा करता है, उसका भी ताला तोड़ के ले जाते हैं। हमारे क्षेत्र के अन्दर चोरियाँ डट के हो रही हैं। एक घर में तो लगातार एक साल में तीन बार चोरी हुई पुलिस आई, पुलिस ने रिपोर्ट लिखी। मैंने तो साफ कहा कि इसमें पुलिस मिली हुई है चोरी करने में। बोले जी, "कैसे कहते हैं।" मैंने कहा, "जी, उदाहरण बताता हूँ आपको। जब तीन बार उस घर में चोरी हो रही है और वो आदमी आपको रिकॉर्डिंग दे रहा है, चोर का एड्रेस दे रहा है, चोर की फोटो दे रहा है उसके बाद भी आप नहीं पकड़ रहे। इसका मतलब आप बिना मिले थोड़ी हैं और आप खाली लिख रहे हैं, कितना माल चोरी गया, हिस्सा लेना है। ये बिल्कुल सत्य बात है कि इस समय दिल्ली के अन्दर जो दिल्ली पुलिस है, वो पूर्णरूप से भगवा बन चुकी है भगवा, और उनका भगवा करण हो चुका है। स्थिति ये है कि अगर आप कहीं भी चले जाएं, आपको कहीं पुलिस वाला नजर नहीं आएगा। पुलिस वाला नजर वहाँ आएगा, जहाँ मकान बन रहा होगा, जहाँ पर रेहड़ियाँ लगी होंगी। मैं आपको एक चीज बताना चाहता हूँ कि मेरे पास कुछ पत्रकार लोग आए थे। उन्होंने मुझे बताया कि हमारे उत्तम नगर से द्वारका मोड़ तक पुलिस की डेली एक करोड़ से ऊपर की क्लेक्शन है। मैंने कहा ऐसा नहीं हो सकता है। तो ये बात मैंने अपने

पुलिस कमिटी में भी रखी। तो वहाँ डीसीपी साहब बोले, "इतना नहीं हो सकता है।" मैंने कहा, "जी, कम तो हो सकता होगा।" बोले, "नहीं-नहीं, मेरा कहने का मतलब इतना सब कुछ नहीं होता है। तो ये बात पुलिस भी मानती है कि उनकी वसूली होती है। एक करोड़ की वसूली बहुत बड़ी रकम है और 50 से 55 लोग वहाँ पर इकट्ठा करते हैं। प्राइवेट लोग लगाए हुए हैं इन्होंने पैसा क्लेक्शन के लिए। ये स्थिति धीरे-धीरे बदतर होती जा रही है। आपने भी कुछ दिन पहले पढ़ा होगा कि एक्साइज के लोग दो नम्बर की शराब जहाँ बिकती है, वहाँ पर रेड करने पुलिस को लेके गए। पुलिस ने पहले ही इंफॉर्मेशन दे दी उनको, वो सब लोग वहाँ पे हथियार ले के तैयार खड़े थे। उन्होंने एक्साइज के जितने अफसर थे, उनको खूब मारा, सिर फाड़ दिए। लेकिन पुलिस वाले भाग गए वहाँ से। बिना पुलिस की इंफॉर्मेशन के ये सब काम नहीं हो सकते। पुलिस ने बताया तभी हुआ वहाँ सब कुछ।

मैं आपको अपने एरिया की बताता हूँ कि मेरे घर के आगे फायरिंग हुई, तीन राउंड गोली चली, चलाने वाले वो ही सांसी थी जिनकी दुकाने मैंने बंद करवाई थी। वो गोली चलाके गए। मैं घर पे था नहीं, मेरे घरवालों ने 100 नम्बर डायल किया, पुलिस नहीं आई। मैंने फिर वहाँ से फोन किया एसएचओ को कि मैं घर पे नहीं हूँ, मेरे घर के सामने फायरिंग हो रही है। एसएचओ ने बोला, "देखता हूँ।" रातभर पुलिस नहीं आई। शाम का टाइम था। रात भर पुलिस नहीं आई। मैंने घर जा के ट्वीट किया। मैंने सीपी को लिखके भेजा तो सुबह डीसीपी मेरे घर पहुंचते हैं, फोर्स लेकर, "कहाँ हुआ, क्या हुआ?" मैंने अपनी वीडियो रिकॉर्डिंग निकालके दी। बकायदा जवान लड़का एक खड़ा है, गोली लोड करता है, टां ए टां... तीन फॉयर करता है फिर दरवाजे की तरफ देखता है। काफी उसका दिखाया मैंने।

उनको पूरा ले के चले गए। फिर दबाव में आके उन्होंने पकड़ा एक लड़के को पकड़ा, दूसरे दिन जमानत पे छोड़ दिया। कह रहे हैं, “जी, हथियार बरामद हो गया हमारे को।” तो ऐसे सुरक्षा क्या करेंगे ये? जब हमारी सुरक्षा नहीं है तो जनता की क्या करेंगे ये? हमारे मुख्यमंत्री जी जो बेचारे पूरी तौर से लगे हुए हैं इस समय भ्रष्टाचार मिटाने के लिए। ये हमारे देश की लोगों की एक उम्मीद हैं और ये उम्मीद इनको सता रही है, कहीं ऐसा न हो कि आने वाले 19 में अरविंद केजरीवाल जी न बन जाएं प्रधानमंत्री। इसी डर के कारण ये सब कुछ हो रहा है। दिल्ली पुलिस को जो एक करोड़ की बात है, बिल्कुल सत्य बात है जी। जब दिल्ली पुलिस न तो जनता की हिफाजत करती है, न हमारी भी हिफाजत करने को तैयार है, न हमारे सीएम साहब, हमारे मंत्रियों के साथ हिफाजत को तैयार है। आज फोर्स लगी है साथ में उसके बावजूद भी अटैक हो रहे हैं। जिस लड़के ने अटैक किया था, अभी उसकी वीडियो रिकॉर्डिंग देखी थी, उसमें पुलिस वाला उसे कह रहा है, “तुम्हें जो करना है, करो और हमें अपना काम करने दो।” यानी उसको प्रोत्साहित कर रहे हैं कि तुमने जो किया, वो ठीक किया है और हम अपना काम करेंगे। यानी हम कोई एफआईआर नहीं करेंगे। तो ये स्थिति पैदा की हुई है। मैं एक करोड़ के मामले में ये ही कहना चाहता हूँ कि दिल्ली पुलिस का वाकई ही सर्वे होना चाहिए जनता बहुत दुःखी है। वो एफआईआर कराने जाती है, उसकी एफआईआर नहीं होती। वो हमें फोन करती है कि जी, हमारी एफआईआर नहीं हो रही। वो होता क्या है कि अगर 18 साल से ऊपर की कोई स्त्री अगर वो पहुँची नहीं टाइम पे घर पे या मिसिंग है तो पुलिस उसपे कोई कार्रवाई नहीं करती। बोले, “जी, वो आप ढूँढ लो, ढूँढ लो... करके वो लटकाते रहते हैं, लटकाते रहते हैं। 18 साल से छोटे में फिर भी कुछ कार्रवाई की कोशिश करते हैं ये। लेकिन

एफआईआर लिखने का नाम नहीं है। आज दिल्ली में अपराध बहुत तेजी से बढ़ रहा है। अगर किसी राजा के पास उसपे पुलिस नहीं है तो उसका राज करना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि हमारे साथ भी कई बार होता है हम कई सीवर की लाइन डाल रहे होते हैं, कुछ लोग आके रोक देते हैं। हम 100 नम्बर बुलाके पुलिस बुलाते हैं, पुलिस उसको आना कानी करके निकल जाती है, कुछ नहीं हो पाता। अगर दिल्ली पुलिस हमारी बात सुने, हमारे इशारे पे काम करे, वो भी हम जायज काम कराएँगे, नजायज काम की बात नहीं करेंगे तो ये बहुत सुधार होगा। आज की डेट में आप सड़कों पर खड़ी हुई गाड़ियाँ देखेंगे, कई टैम्पो खड़े हैं, रोड के ऊपर पार्किंग बनी हुई है, कहीं बसें खड़ी है। तो इनके भी मैंने जब इनके सर्वे किए पता चला कि जिनके ट्रक और बसेज खड़ी हैं, वो तीन हजार रुपये महीना ट्रैफिक पुलिस को देते हैं। इसीलिए वो हटाते नहीं हैं। कई बार मैंने भी लिखित में कम्प्लेंट भेजी। लेकिन वो आज तक गाड़ियाँ हटी नहीं। उस दिन थोड़ा सा हटा देंगे फिर आ जाएँगी, गाड़ियाँ वहीं लग जाएँगी। एक करोड़ देने की बात पे मैं... मंत्री जी सामने बैठे हैं, हमारे रेवेन्यू मिनिस्टर, मैं ये ही कहना चाहूँगा कि जो पुलिस निकम्मी हो चुकी है और बिना पैसे के चलती नहीं है। मुझे एक आदमी बोले थे कि ये गाँधी जी तो अब चले गए लेकिन बिना गाँधी जी के आज भी देश नहीं चलता है। जब तक गांधी जी न दो पुलिस को, तब तक कोई काम नहीं होता। तो ये बात बिल्कुल सत्य होती जा रही है। तो मैं आपसे ये ही अनुरोध करूँगा कि आप एक सर्वे करवाएँ। सर्वे में देखिए कि जनता कितनी दुःखी है दिल्ली पुलिस से। अगर दिल्ली पुलिस सुधर जाए तो 80 परसेंट अपराध खत्म हो जाएँ। तो मैं ये ही चाहता हूँ कि आप सर्वे करवाएँ। अगर सर्वे में जनता तैयार है कि इनको एक करोड़ रुपया दिया जाए, शहीद होते हैं अगर तो, तो उसके बाद आप उसपे निर्णय लें और मैं अरविंद जी हैं नहीं, मैं अरविंद जी से केवल ये

ही कहना चाहता हूँ कि आपकी सुरक्षा व्यवस्था को बदला जाए और उनको जेड प्लस सिक्योरिटी दी जाए।

क्योंकि जिस तरीके से अटैक हो रहे हैं। चार अटैक लगातार हो चुके हैं उनके उपर। क्योंकि अरविंद जी आप हैं तो 'आप' हैं। मैं यही लास्ट में कहना चाहता हूँ कि आप हैं तो 'आप' है। 'आप' है तो हम हैं। हम हैं तो हम सब हैं और आप जनता की उम्मीदें हैं और भ्रष्टाचार मुक्त हिन्दुस्तान बनाने में जो आपका योगदान है, उसके लिए जनता तैयार खड़ी है कि धीरे-धीरे परिवर्तन शुरू हुआ है। ये चलता रहे और मैं आपने मुझे बोलने का मौका दिया, मैं सत्येन्द्र जैन जी द्वारा प्रस्तुत रिजल्यूशन का पूर्ण समर्थन करता हूँ और आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: श्री शरद चौहान जी।

श्री शरद चौहान: धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया कि आपने इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर मुझे बोलने का मौका दिया। अभी हमारे सभी भाईयों ने हमारे सीएम साहब पर ये हमले हुए, सोचा अब रोज इसी तरह सोचते हैं। जब ऑफिस में सुबह बैठते हैं। जनता आती है, कहती है, "यार, तुम्हारे सीएम साहब, सेफ नहीं हैं।" "वो क्यों सेफ नहीं हैं?" पूछते हैं, "सेफ हैं क्यों नहीं?" तो बीच में बैठा हुआ कोई कहता है कि अरविंद जी, एक ऐसा तूफान लेके आये कि जिसको रोकने के लिए बीजेपी ने अपना सब कुछ दिल्ली में लगा दिया। अब उनको वो दिखाई देता है कि इस अरविंद में ऐसी क्या खास बात है तो कहीं न कहीं ये क्लीयर है कि इन हमारे जो सेंटरल पुलिस है, सेंटर की जो पुलिस है हमारे ऊपर, ये टोटल का टोटल बीजेपी के दबाव में। मैं क्लीयर कहूँगा और किसी का दबाव नहीं है। बीजेपी के दबाव में हमारे अरविंद जी को ये खत्म करना चाहते हैं। ये क्लीयर करना चाहता

हूँ। चार-चार दफा अटैक हो चुके हैं, तब भी इनको समझ में नहीं आता। पुलिस को समझ में नहीं आता क्या? चार-चार दफा अटैक हो चुके हैं। तो ये मैं आपके माध्यम से ये ज्ञापन भी देना चाहूँगा राष्ट्रपति को कि अगर कल कुछ भी होता है तो उसका बीजेपी जिम्मेदार होगी। उसके अरविंद जी के ऊपर कोई भी अटैक होता है तो उसका जिम्मेदार बीजेपी होगी।

एक वाक्या मेरे साथ हुआ। किसी को जानता नहीं, पहचानता नहीं। कोई किसी ने आत्महत्या कर ली। मुझे कई दिन लोग क्राईम वाले लोग परेशान करते रहे। रोज बुलाते, चले जाते। मैंने एक दिन उनसे बैठ के पूछ लिया, “यार, मेरे पर केस क्या बन रहा है? क्यों बन रहा है, ये बता दो मुझे। भई बन क्या रहा है मेरे ऊपर? कहते हैं, “जी, आप पर ये केस बन रहा है।” मैंने कहा, “क्या केस बन रहा है?” “चूँकि आप अरविंद केजरीवाल के एमएलए हो, ये केस बन रहा है।” ये था केस। ये था केस कि आप अरविंद केजरीवाल के एमएलए हो। ये केस बन गया आप पर। मैंने कहा, “फिर धारा की लगी इस पर?” “नूँ इस पर 120 भी लगा दी प्लान बनाने की।” तो ये इनकी मजबूरी। मैंने पूछा, “मजबूरी क्या है, इस काम को करने की?” कहते हैं, “आप भी जानते हो भाई साहब, आप इतने पुराने हो, आप नहीं जानते क्या कि हम जबरदस्ती भी नहीं कर रहे हैं लेकिन कुछ आदमियों का डंडा इनके ऊपर ऐसा हो गया है।” तो मेरा कहना है, सभी भाइयों ने इसी बारे में अपनी-अपनी बातें रखीं कि दिल्ली पुलिस का... लेकिन दिल्ली पुलिस पर भी दस-बीस परसेन्ट आदमी अच्छे भी हैं। हम ये नहीं कहेंगे कि खराब हैं लेकिन पुलिस प्रशासन को ये सोचना चाहिए कि आप दिल्ली में कानून व्यवस्था... देश की राजधानी में कानून व्यवस्था बनाने के लिए बने हुए हो। यहाँ की कानून व्यवस्था देखनी है आपको। दिल्ली के सीएम की रक्षा आपको करनी है। आपको दिल्ली की जनता की

रक्षा आपको करनी है। इसी जनता ने दिल्ली के सीएम को दिल्ली ने अपने दिल में बिठा के यहाँ पर बुलाया है, बैठाया है। तो इसलिए मैं कहना चाह रहा हूँ। पुलिस का अपना एक रोल है। उनको निभाना चाहिए लेकिन हमारे दिल्लीवासियों का हमारे सीएम साहब की रक्षा करने का उनका अधिकार है और मैं फिर कह रहा हूँ, अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से कि राष्ट्रपति को आपको ज्ञापन देना चाहिए। आपके महोदया से ज्ञापन जाना चाहिए कि हमारे हर दिल अजीज को कुछ होता है तो उसकी जिम्मेदार बीजेपी होगी और कोई नहीं होगा, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: श्रीमती सरिता सिंह जी।

श्रीमती सरिता सिंह: धन्यवाद अध्यक्ष महोदया, आज जिस विषय में आपने मुझे बोलने का मौका दिया है, ये बहुत ही गम्भीर, बहुत ही दुःखद, बहुत ही भारी मन से आज शायद इस बात को मैं यहाँ पर रखूँगी। हमारे बहुत सारे साथियों ने आज बहुत सारी बातें करी। दिल्ली पुलिस की कमियों को बताया; दिल्ली पुलिस बिल्कुल काम नहीं कर रही है, ये सब कुछ बताया और ये बात बिल्कुल सच है कि जो काम दिल्ली पुलिस को करना चाहिए, आज दिल्ली की जनता के प्रति दिल्ली पुलिस वो काम नहीं कर रही है। आज दिल्ली के नागरिक के साथ कोई अन्याय हो जाये। दिल्ली के महिला के साथ कोई दुर्व्यवहार हो जाये तो दिल्ली पुलिस उसमें कोई काम नहीं करती। ये बात बिल्कुल सत्य है और दिल्ली की जनता अगर सर्वे करा लिया जाये तो दिल्ली की जनता इसका जवाब बिल्कुल देगी लेकिन पिछले साढ़े तीन सालों में दिल्ली में ऐसा क्या हो गया कि दिल्ली की कानून व्यवस्था पिछले चार साल में जबसे 2014 में देश में मोदी की सरकार आयी, तब से दिल्ली में ऐसी क्या घटना घट गयी कि दिल्ली के प्रति दिल्ली पुलिस का रवैया पूरी तरह से बदल गया। इसको जब मैं बैठ के सोचती

हूँ, जब मैं बैठ के समझती हूँ तो इससे ये समझ में आता है कि दिल्ली पुलिस किसके अधीन है? दिल्ली पुलिस पूर्णतः केन्द्र में बैठी सरकार के अधीन है जो भारतीय जनता पार्टी की है और आज भारतीय जनता पार्टी को ये पता है, नरेन्द्र मोदी को ये पता है, राजनाथ सिंह को ये पता है कि अगर उनका रथ कोई रोक सकता है पूरे देश में अगर, एक मात्र मुख्यमंत्री उनके खिलाफ आवाज उठा सकता है तो वो अरविंद केजरीवाल है। इसलिए अरविंद केजरीवाल को रोकना बहुत जरूरी है। इसलिए पिछले साढ़े तीन सालों में हमसे एसीबी छीनी गयी ताकि हम दिल्ली में हो रहे भ्रष्टाचार को रोक न सकें। उनको लगा, उनका ये काम भी फेल हो गया। अरविंद केजरीवाल तो रुका नहीं। हमारी सरकार की फाइलों को जबरन एलजी के माध्यम से एलजी ऑफिस में पहुँचाया गया पर फिर भी दिल्ली सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य के बहुत सारे कामों को करने में कामयाब हुई। पर अब लोक सभा के चुनाव आने वाले हैं, अब नरेन्द्र मोदी को दुबारा चुनौती में उतरना है। केवल पाँच महीने बाकी रह गये हैं तो अब इन पाँच महीनों में ऐसा क्या किया जाए कि दिल्ली में अरविंद केजरीवाल का रुख बदला जाये। तो अब अरविंद केजरीवाल को डराया जाये, अरविंद केजरीवाल के ऊपर हमला कराया जाये। अरविंद केजरीवाल के विधायकों को परेशान किया जाये। अब केवल भारतीय जनता पार्टी की यही मंशा रह गयी है कि पिछले चार सालों में भारतीय जनता पार्टी ने कोई काम किया नहीं है। दुर्भाग्य की बात है कि पिछले दो वर्षों में हमारे मुख्यमंत्री के ऊपर चार बार हमले होते हैं और जब हमारे मुख्यमंत्री की बात मैं करती हूँ तो ये दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, दिल्ली की जनता ने यहाँ की दिल्ली की जनता ने 66 सीट जीता के यहाँ पर इनको मुख्यमंत्री बनाया था तो यहाँ पर एक-एक आवाज निकल रही है तो ये पर्सनल आवाज नहीं है। ये दिल्ली की जनता की आवाज है। अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री पर हमला होता है तो दिल्ली के मुख्यमंत्री

अरविंद केजरीवाल पर नहीं, दिल्ली की जनता पर हमला होता है। अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री पर जानलेवा हमला किया जाता है तो ये दिल्ली की जनता ने जो पूर्ण बहुमत दे के आज यहाँ पर अरविंद केजरीवाल को काम करने के लिए भेजा जाता है, उस पर भाजपा की नीयत को दिखाती है। सिग्नेचर ब्रिज में... मैं वहाँ मौजूद थीं। अमानत भाई वहाँ पर, हम सब लोग वहाँ पर मौजूद थे। किसी तरीके से भाजपा के सांसद, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी जी ने एक दिन पहले ट्वीट किया और उद्घाटन चार बजे का था। बारह, साढ़े बारह, एक बजे वो वहाँ पर आके धरना देते हैं। वहाँ पर आके बैठ जाते हैं और उनकी इतनी मतलब मुझे तो उस दिन ये समझ में आ रहा था कि पुलिस उनको एस्कॉर्ट करके स्टेज तक लेके आयी है और जब पुलिस को ये बोला गया कि आप उनको रोक क्यों नहीं रहे हो तो कहते हैं, "मैडम, कैसे रोकेंगे? ये तो सांसद जी हैं।" गजब बात हो गयी! मेरे घर में मेरी बेटी की शादी हो और मैं किसी को न बुलाऊँ तो वो मेरी मर्जी... दिल्ली में स्काईवॉक का उद्घाटन होता है। दिल्ली के मुख्यमंत्री को नहीं बुलाया जाता है। पीडब्लूडी डिपार्टमेंट जो दिल्ली सरकार के अधीन है, उसमें बहुत काम करती है पर अरविंद केजरीवाल अपने लोगों के साथ वहाँ पहुंचकर जबरदस्ती तो उद्घाटन करने जाते नहीं हैं लेकिन मनोज तिवारी जी, "मैं सांसद हूँ, मेरे एरिया का उद्घाटन है, आप बुलावोगे कैसे नहीं? और जबरन वहाँ पर स्टेज में चढ़ने की कोशिश करते हैं। पुलिस, मतलब उस दिन जो वहाँ प्रतीत हो रहा था कि एक तरफ सारी जनता के पीछे पूरी पुलिस लगा दी गयी है और जो बीजेपी के दो सौ गुण्डे थे, उनको बकायदा एस्कॉर्ट करके पुलिस स्टेज तक लेके आती है और सांसद महोदय को गोदी में उठाके ऊपर चढ़ाती है कि लो सांसद महोदय अपना धरना कन्टीन्यू रखो। तो ये समझना पड़ेगा कि ऐसा क्यों हैं? ऐसा इसलिए है, आज पूरे देश में जो माहौल भारतीय जनता पार्टी बनाने की कोशिश

कर रही है। जहाँ पर जिस राज्य में उसको जो समझ में आ रहा है। यहाँ पर उनको ये समझ में आ रहा है कि अरविंद केजरीवाल के खिलाफ सीबीआई की रेड करवा ली, कुछ नहीं मिला। उनके मंत्रियों के खिलाफ कुछ नहीं मिला तो अब क्या करें? अब उनको डरायें।

अब उनको धमकाएँ। अब उनको पुलिस... अब उनकी सिक्योरिटी ब्रीच करें। बिल्कुल सही बात कही मनोज भाई ने कि जब सचिवालय के अंदर जाते हैं तो कड़ी दर कड़ी सिक्योरिटी चैक होता है तो कैसे वो अनिल कुमार नामक व्यक्ति थर्ड फ्लोर सीएम ऑफिस तक पहुँच जाता है और वहाँ उसको बैठने की परमिशन मिल जाती है? एज एमएलए भी हम अगर हम वहाँ जाते हैं तो वहाँ पर हमसे पुलिस पूछती है। वो कैसे वहाँ बैठ जाता है? तो या तो ये फेलियर है पुलिस डिपार्टमेंट की, दिल्ली पुलिस की कि वो अपनी सिक्योरिटी को ढंग से नहीं कर पाई और या तो इंटेन्शनली ये काम दिल्ली पुलिस द्वारा किया गया और भाजपा के दबाव में किया गया। क्योंकि अनिल कुमार कोई और नहीं, भाजपा का कार्यकर्ता है नारायणा का। भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता है और ऐसा क्यों होता है कि जब भी कुछ ऐसा पाया जाता है तो वो लोग भारतीय जनता पार्टी के निकलते हैं। तो ये हमें समझने की बहुत ज्यादा जरूरत है और मुझे आज डर है कि जैसे-जैसे ये लोकसभा चुनाव आएँगे और भारतीय जनता पार्टी का जो गुजरात मॉडल है, जहाँ पर उन्होंने पूरी तरह से मीडिया को कैप्चर कर लिया; अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को दबाने की कोशिश करी, कहीं ऐसा न हो, भगवान न करे अगर अरविंद केजरीवाल जी की जान पर भी बन सकती है। इनकी जान भी जा सकती है और इनकी पूरी की पूरी जिम्मेदारी अगर किसी की होगी तो वो भारतीय जनता पार्टी की होगी। बिल्कुल शरद भाई का कहना सही है कि हमें राष्ट्रपति जी को ज्ञापन देना

चाहिए कि दिल्ली के मुख्यमंत्री जो दिल्ली की जनता के लिए काम कर रहे हैं, दिल्ली की जनता के भविष्य के लिए काम कर रहे हैं, दिल्ली के बच्चों के लिए, दिल्ली की महिलाओं के लिए, दिल्ली के लोगों के लिए काम कर रहे हैं, उनकी जान आज असुरक्षित है।

सभापति महोदयः सरिता जी, कंप्लीट कीजिए।

श्रीमती सरिता सिंहः तो आज हम सब विधायक... मुझे बहुत सरप्राइज हुआ जब मैंने मीडिया न्यूज में, ये जब मीडिया हेडलाइन्स पढ़ी कि एक सेशन बुलाया जाता है, '*And it is only for an individual. It is not for an individual, it is for the CM and the CM has been elected by the people of Delhi.*' आज इनको नुकसान, पूरी दिल्ली को नुकसान है और आज इनको नुकसान भारतीय जनता पार्टी पहुँचाना चाहती है क्योंकि वो लहर जो इनकी है जो इनकी लोकप्रियता है, वो उसको आज पूरे देश में कोई काउंटर नहीं कर सकता। तो मैं बस यही कहना चाहूँगी कि आपने इंक फेंकी थी। आपने स्याही फेंकी थी तो इन्होंने शिक्षा क्रांति लिख दी। आपने जूते फिंकवाए थे तो इनके कदम और मजबूत हो गए। आपने मिर्ची फिंकवाई है उसकी जलन से जो अंगारा निकलेगा उसका नाम अरविंद केजरीवाल है वो और मजबूती से और बुलंदी से और डट के भारतीय जनता पार्टी के सारे अन्याय, सारे अपराध सबके खिलाफ लड़ता रहेगा और हम सब दिल्ली की जनता उनकी आवाज है, उनकी ताकत है जयहिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः मेरा फिर बार बार निवेदन सदस्यों से, समय का ध्यान रखें। श्री सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारतीः धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय। सर्वप्रथम मैं आज अभी अभी खबर आई है कि फार्च्यून मैग्जीन में इकलौते हिन्दुस्तान के मुख्यमंत्री

माननीय मुख्यमंत्री: पुरानी है।

श्री सोमनाथ भारती: आज भी आई है सर। अभी ट्वीट है। तो ये पूरी दुनिया के 50 शक्तिशाली लोगों में हमारे दिल्ली के हर दिल अजीज माननीय मुख्यमंत्री का नाम शामिल हुआ है और ये हम सबके लिए गर्व की बात है।

साथियो आज अध्यक्षा महोदया, आज संविधान दिवस भी है। आज हमारी पार्टी का स्थापना दिवस भी है मैं इन दोनों अवसरों के लिए, इन दोनों मुख्य तिथि के लिए आप सब साथियों का बहुत-बहुत आपको मुबारकबाद देता हूँ। दिल्लीवासियों के लिए, पूरे देश के लिए, पूरे विश्व के लिए, हर उस इंसान के लिए जो जानता है कि ईमानदार राजनीति ही पूरी दुनिया की समस्याओं का खात्मा कर सकती है और जिसके कर्णधार हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल साहब हैं और यही कारण है, कारण यही है कि अरविंद केजरीवाल साहब के ऊपर चार बार हमले हुए। वो हमले क्यों हुए, किसने कराए, आज जैन साहब ने जो रिजल्यूशन हाउस में लेकर आए हैं, उसको पढ़ते वक्त उन्होंने बताया कि जो हमले 2016 में हुए, उसकी चार्जशीट आज तक नहीं आई।

माननीय अध्यक्ष महोदया: एक मिनट, सभी सदस्यों से एक बार निवेदन है कि आपकी सहमति से सदन का समय 30 मिनट के लिए बढ़ाना चाहते हैं, सहमति है?

(सदन द्वारा सामुहिक सहमति)

श्री सोमनाथ भारती: तो जो पहले हमले हुए हैं, उसकी जाँच नहीं होती है। ये पुलिस किसके पास है, पूरी दुनिया जानती है। इन्वेस्टिगेशन किसके पास है, पूरी दुनिया जानती है। आज अरविंद केजरीवाल साहब के

होने से किसको तकलीफ है, ये भी पूरी दुनिया जानती है। दिल्ली में केजरीवाल साहब बहुत पॉपुलर हैं। आम आदमी पार्टी सरकार बहुत पॉपुलर है। उनको लग रहा है, "चलो दिल्ली तक कंटेन करो इनको।" लेकिन जब केजरीवाल साहब हरियाणा जाते हैं चूंकि वो पूर्ण राज्य है। एक एक्सपेरिमेंट हमने किया, एक प्रयोग हमने किया कि पंजाब हमें पूर्ण राज्य के रूप में मिले क्योंकि पूर्ण राज्य जब मिलेगा तो केजरीवाल साहब के हाथों जो भारतीय राजनीति में इतिहास लिखा जाएगा कि सरकारें किस तरह से अभी तक भारतीय राजनीति में सबको बेवकूफ बनाती रही हैं, ये सारे एक्सपोज हो जाएंगे। जब केजरीवाल साहब गए हरियाणा, कहाँ गए थे? स्कूल देखने गए। हस्पताल देखने गए। तो इतनी उनको इनसिक्योरिटी है कि केजरीवाल साहब को वहाँ के एक हस्पताल को देखने तक से रोका गया। हस्पताल ठीक नहीं करेंगे। इन्सपेरेशन नहीं लेंगे, सीखेंगे नहीं लेकिन केजरीवाल साहब को हरियाणा राज्य न मिल जाए, इसकी वो उस में लगे हुए हैं कि भई अगर इनको एक पूर्ण राज्य मिल गया, भगवान साक्षी है हरियाणा में बहुत अच्छा माहौल चल रहा है। हरियाणा के अंदर ऐसा प्रतीत हो रहा है अभी कि हरियाणा में आम आदमी पार्टी की सरकार बनेगी और उसके बनने के साथ ही एक बार केजरीवाल साहब के हाथ आम आदमी पार्टी के हाथ पूर्ण राज्य लग गया तो पुलिस का क्या सदुपयोग होता है, सरकार का क्या सदुपयोग होता है, सरकारें किस तरह से हजारों करोड़ जो खर्चा करती रहती हैं.. भई कितना भी खर्च कर लो, दस लाख का सूट पहना दो। हजारों करोड़ का भ्रमण करा दो लेकिन जब बोलेगा तो क्या बोलेगा? वो मूवी याद है वो 'कालीचरण' एक मूवी आई थी। एक 'कालीचरण' मूवी आई थी न जिसमें शत्रुघ्न सिन्हा जी बहुत पॉपुलर हो गए उस मूवी के बाद। इसमें वो अजीत ने टेस्ट करने के लिए पूछा वो जो उस वक्त विलेन हुआ करते थे। "हाउ डू यू टैकल एन इम्पोस्टर?" क्योंकि वो इम्पोस्टर की तरह उस वक्त उसमें

रोल किया था तो जैसे ही ये लाइन पूछी, वैसे ही वो उनको एक्सपोज हो गए। जैसे ही महात्मा जी माननीय मोदी जी मुँह खोलते हैं, वैसे ही एक्सपोज हो जाते हैं। अभी बोला की संत कबीर, गुरु नानक और बाबा गोरख एक साथ बैठकर बातचीत कर रहे थे। अरे! कितना भी कपड़ा पहना दो। कितना भी हजार करोड़ की घुमा दो लेकिन जब बोलेगा तो सत्यता तो निकलेगी, निकलेगी। फिर बोला वो छह सौ करोड़ भारत की जनसंख्या है, डेढ़ सौ करोड़ वोट पड़े हैं मतलब झूठ के ऊपर भी तो ये जो पीएचडी कर रखा है जुमलेबाजी में, अब ये इन साहब को खतरा नहीं है राहुल गांधी जी से। चूंकि उनको उन्होंने मजाक का एक मुद्दा बना दिया पूरे हिन्दुस्तान में। तो खतरा सिर्फ एक इंसान से है इन साहब को और वो है अरविंद केजरीवाल साहब का और इसी कारण ये सारे हमले हो रहे हैं। साथियो! क्योंकि अब इनका दुर्भाग्य है। सुप्रीम कोर्ट में भी जस्टिस गोगोई आ गये हैं। अब इनकी जो मनमानी पहले करने का प्रयास कर रहे थे, वो प्रयास अब न कर पाएँगे ये। अब क्या है कि बैलेट से जीत नहीं सकते तो बुलेट का इस्तेमाल कर लो। तो ये अभी प्रेक्टिस कर रहे हैं कि पहले बोटल फिकवा दिया, फिर स्याही फिकवा दिया, अब की तीन लेयर ऑफ सिक्योरिटी क्रॉस करके सीएम चैम्बर के बाहर जा के मिर्ची फिकवा रहे हैं। अब अगला क्या है, गोली लाएँगे क्या?

अध्यक्ष महोदया, इस हिन्दुस्तान की जो ये आशा बनकर उभरी है केजरीवाल साहब के रूप में। पहली बार हिन्दुस्तान में किसी ने रैली की, उसका नाम रखा 'स्कूल हस्पताल रैली।'

रैलियाँ खूब हुई हिन्दुस्तान में। हुँकार रैली, परिवर्तन रैली, ये रैली वो रैली... लेकिन ये जो धर्म जाति और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर के एक इंसान ने हिन्दुस्तान को जो रास्ता दिखाया है कि शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में

जो क्रान्ति करके जो रास्ता दिखाया है, लोगों को मंदिर मस्जिद के मध्य से ऊपर उठकर के दिखाया है, ये सब को परेशानी है। कांग्रेस को भी परेशानी है, भाजपा को भी परेशानी है। जितनी ट्रेडिशनल पार्टियाँ हैं, सबको परेशानी है कि इस इंसान को रोको, रोको... रोको... दिल्ली में रोको। ये बढ़ना नहीं चाहिए। अब हरियाणा चले गए। ये भारत का संविधान जिसका आज स्थापना दिवस है, वो हक देता है। उसी हक से तो हम सारे विधायक बने। माननीय केजरीवाल साहब मुख्यमंत्री बने। अब पहुँच गए हरियाणा। पुलिस से रुकवा दिया कि आप देखने न जाओगे। तो इस डर के कारण दिल्ली पुलिस का जो दुरुपयोग हो रहा है भाजपा के द्वारा। जिसको लेकर के तीन इसमें मुख्यतया लोग सम्मिलित हैं— भाजपा पार्टी, दिल्ली पुलिस ऐज ए टूल, कांग्रेस साथ में है और मीडिया साथ मिली हुई है। दिल्ली के मुख्यमंत्री पर सचिवालय के अंदर हमला हो और आप उसको क्या बोल रहे हैं, “सोमनाथ जी, दिल्ली के लोग बहुत नाराज हैं।” अब इस तरह से अपनी नाराजगी को जाहिर कर रहे हैं। अरे! कुछ तो शर्म करो यार। बोलने का लहजा होता है। किस मसले को किस तरह से रखना है, क्या ये आपका उत्तरदायित्व नहीं है। आज मीडिया चौथा स्तम्भ माना जाता है। क्या इस पूरे मसले पर उसने ईमानदारी से अपने काम किया या बात रखी कि भई, पिछले जितने चारों अटेम्प्ट हुए थे माननीय मुख्यमंत्री के ऊपर, उससे क्या हुआ आज तक? ऐसे कैसे हिम्मत बढ़ गई उनकी? ये बहुत सोचना जरूरी है अध्यक्ष महोदया। आज साथियों ने बहुत डिटेल्ड में अपनी बातें रखी हैं और अपनी उनके जो पर्सनल अनुभव रहे हैं पुलिस के साथ, वो भी रखे हैं। लेकिन पुलिस तो सिर्फ एक टूल है। जिस तरह से मिस यूज और एब्यूज भाजपा ने किया है। जिस किसी के पास ये पुलिस होगी, वो तब करेगा। लेकिन मैं पंकज भाई की बात दोहराना चाहता हूँ कि जब कभी भी परमात्मा ऊपर वाला... सेंटर में हमें माननीय केजरीवाल साहब को ताकत

देगा तो पुलिस को हम पॉलिटिकल इन्टरफेयरेंस से मुक्त कर देंगे और उसी वक्त पुलिस सिर्फ एकाउंटेबल किसको होगी; कॉन्स्टीट्यूशन को, संविधान को, सीआरपीसी को, आईपीसी को और जनता को। और ये चाहते हैं कि पुलिस का दुरुपयोग इस तरह से करें कि राजनैतिक जो प्रतिद्वंदी हैं, उनको आप बुलेट के माध्यम से खत्म ही कर दो। न बांस रहेगा, न बांसुरी बजेगी। क्योंकि इस हिन्दुस्तान के अंदर जो आशा और उर्जा के साथ केजरीवाल साहब ने सबकी आशाएँ जगाई हैं, वो किसी और नेता में ना दिख रहा है। ताकत मिलने के पहले सब कहते थे, “हम ईमानदार हैं।” लेकिन इतनी बड़ी ताकत मिलने के बाद जिस ईमानदारी के साथ केजरीवाल साहब के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने काम किया है, ये इतिहास है और इसी इतिहास के कारण आज सबको मुसीबत है केजरीवाल साहब से। नहीं तो अच्छा था इतनी बड़ी सत्ता मिली। आप भी चोर हो जाइए हमारी तरह। आप जो 29 हजार करोड़ से बजट बढ़ाकर के 53 हजार करोड़ कर लिया, चौबीस हजार करोड़ आपने सरकार में जोड़े हैं, पार्टी में नहीं जोड़े हैं। अक्सर सरकारें जो होती हैं, पूरे हिन्दुस्तान के अंदर, वहाँ सरकारें गरीब और पार्टी अमीर होता है। ये पहली पार्टी है साथियों, अध्यक्ष महोदया जहाँ कि पार्टी गरीब है केजरी वाल ने सिटिंग चीफ मिनिस्टर ने बाकायदा मिटिंग बुलाकर के अह्वान किया कि भैया, कुछ तो दो, पार्टी कैसे चलेगी? सौ रुपया, हजार रुपया, पाँच सौ रुपया। ये हमारे लिए गर्व की बात है। और ये ही गर्व है जो उनको तकलीफ दे रहा है कि इनकी अच्छाइयाँ कैसे काटें। अब चूंकि राजनीति से तो कटती नहीं। तो भैया क्या करो। मैं अध्यक्ष महोदया, ये बात दोहराना चाहता हूँ; साथियों की जो बातें हैं कि सम्भवतः और जो दिख रहा है कि जिस तरह के अटैक्स हुए हैं, जिसका आज तक इन्वेस्टिगेशन नहीं हुआ, जिसकी आज तक चार्जशीट फाईल नहीं की गई।

मेरे मन में गहरी पीड़ा है कि भाजपा का ये साजिश है और उसमें मीडिया हाउसेज भी कुछ सम्मिलित हैं कि केजरीवाल साहब के ऊपर जानलेवा हमला करके इनको मरवा दो। इसको न दिल्ली सहेगा, न हिन्दुस्तान सहेगा, न मानव जाति सहेगा। क्यों नहीं सहेगा? क्योंकि ये ही तो एक इंसान है जो कि राजनीति में कुछ रस लेकर आया है। नहीं तो नेताओं को पूछता कौन था?

आज जो हम सबके घर में भीड़ लगती है रोज, इतनी भीड़ कभी ना लगा करती थी। जनता आती ही नहीं थी। बोले, "करेगा ही नहीं काम, जी, क्यों जाना?" आज जो भीड़ लग रही है, वो जो आशा की किरण जगी है जो एक उम्मीद जगी है कि संविधान में जो अधिकार दिये गए हैं, वो अधिकार कौन पूरा करेगा? तो केजरीवाल साहब पूरा करेंगे। और यही उम्मीद इन सबको खाए जा रही है। लेकिन ऊपर वाला भी है। केजरीवाल साहब अपने सम्बोधन में कई बार कह चुके हैं कि कोई डिवाइन शक्ति है जो काम कर रही है और डिवाइन शक्ति जब काम करती है तो हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा लाइन है 'जाको राखे साईयाँ, मार सके ना कोय।' ये कितना प्रयास कर लें लेकिन जो डिवाइन शक्ति है, वो तुम्हारे अधिकार में थोड़े ही आता है। जो दिल्लीवासियों को, जिनको शिक्षा नीति का प्रभाव पड़ा है, जिनको फायदा पहुँचा है, जो स्वास्थ्य नीतियों का फायदा पहुँचा है; इतने लाखों करोड़ों लोगों को फायदा पहुँचा है। जिनके बच्चे आज सबसे बेहतर स्कूल में जा रहे हैं। जिस स्कूल का परिणाम 9 परसेंट प्राइवेट से बेहतर आया है, उन सबकी दुआएँ है इनके साथ। इसलिए परमात्मा केजरीवाल के साथ आम आदमी पार्टी के साथ हैं। इसलिए भाजपा वालो, सुन लो, वो चले गए तीनों, वो तो कुछ का कुछ कह रहे थे। इनका विरोध ऐसा लग रहा था जैसे पता नहीं... अरे कम से कम...

माननीया अध्यक्षा: भारती जी, कम्पलीट कीजिए।

श्री सोमनाथ भारती: आप ही के पार्टी के अटल जी हुआ करते थे। किस तरह से अपने राजनीतिक विरोधियों के साथ बर्ताव करते हैं। इतनी बड़ी घटना घट गई। आपके राजनीतिक विरोधी हैं केजरीवाल साहब। तो जो आपने वाणियाँ निकाली हैं अपने मुँह से, उससे ये बात सिद्ध होता है अध्यक्षा महोदया कि भाजपा की पूरी साजिश है कि केजरीवाल साहब से डील करना अब कोई और तरीका नहीं है, इनकी हत्या करवा दो। और मैं अपने साथी शरद का, उनकी बात में साथ मिलाना चाहता हूँ कि हम सबको राष्ट्रपति साहब के पास जाना चाहिए, बोलना चाहिए कि अगर किसी दिन खरोंच भी लग गई केजरीवाल साहब को। इसका उत्तरदायित्व भाजपा का है। जिसकी पुलिस है। क्यों सिक्यूरिटी दिया है? सिक्यूरिटी दिया है बचाने के लिए कि मारने के लिए! सिक्यूरिटी के नाम पर कलंक दिया है। एक आदमी केबिन के बाहर घंटों बैठा रहता है। आपने पूछा नहीं उसको आज। इस लिए अध्यक्ष महोदया, जो आज रेजूलूशन आया है, मैं उसके साथ खड़ा हूँ।

अध्यक्ष महोदया, दिल्ली के अंदर हर तरह का धंधा चल रहा है। साथियों ने बताया है। ड्रग चल रहा है, ह्यूमन ट्रेफिकिंग चल रहा है। क्राईम चल रहा है। हमारे पास इकलौता हुआ करता था पुलिस कमेटी... थाना लेवल कमेटी। उसको उन्होंने बनने नहीं दिया। आज हम सब साथियों के पास कोई टूल नहीं है कि भई, कैसे लॉ एण्ड ऑर्डर में अपने क्षेत्र के लोगों का सहयोग करें।

एक सच्ची वाक्या है। जेई जूनियर इंजीनियर जो एमसीडी में होता है, मेरे पास आया, क्योंकि अभी चल रहा है हाई कोर्ट के अंदर बड़ा... एमसीडी उसमें जवाब नहीं दे पा रही है। इल्लेगल कंस्ट्रक्शन चल रहे हैं

चारों तरफ। अब वो कंस्ट्रक्शन के नाम पर जो सारा धंधा चल रहा है। अभी धंधा शब्द मैंने यूज किया ना ये शब्द धंधा खराब तो नहीं है, तो धंधा चल रहा है, उस धंधे के अंदर टॉप से टॉप लोग सम्मिलित हैं। जेई ने मुझे कहा, "साहब, बहुत खर्चा होता है।" मैंने कहा, "क्या खर्चा होता है यार।" आपको क्या बताऊँ, "बहुत खर्चा होता है।" कहा, "सर ऐसा है, सबकी बंधी हुई है। ईई की भी बंधी हुई है, डिप्टी कमिशनर की भी बंधी हुई है, कमिशनर की भी बंधी हुई है।" यहाँ तक उसने बताया, मैं इसको कह देना चाहता हूँ हाउस के अंदर। यहाँ तक कहा कि एलजी हाउस और होम मिनिस्टर तक का बंधा हुआ है। इस पूरे इल्लीगल कंस्ट्रक्शन अनऑथोराइज्ड कंस्ट्रक्शन दिल्ली में जो होता है, ये सब में सबका बंधा हुआ है। जो जेई कहता है, "मैं तो मजबूर हूँ। मैं तो कलेक्ट करूँगा ही करूँगा। मैं कहाँ से दूँगा? जिस वक्त मुझे जे. ई. बनाया गया बिल्डिंग डिपार्टमेंट का, मुझसे कहा गया कि इतना तुमको देना पड़ेगा और ये सब गोरखधंधा में एमसीडी, पुलिस दोनों सम्मिलित हैं। तो नैचुरल सी बात है, जो कोई भी उनके हिस्से के खिलाफ बोलेगा, उसके खिलाफ तो वो हो जाएँगे और आज जिस तरह से हम साथियों ने अपनी बातें रखी हैं, मुझे लगता है कि उनको शर्म आयेगा और इसपे कुछ विचार करेंगे कि भई, कुछ तो करो, कुछ तो शर्म करो।

अध्यक्षा महोदया, तीन केसिज मेरे पे हुए। मैं ज्यादा उल्लेख नहीं करूँगा एक लाइन में बताऊँगा, उसमें खिड़कीवाला केस तो सबने देखा है 2014 में। जिस तरह से ड्रग ट्रेफिकर और हयूमन ट्रेफिकर के खिलाफ हमने एक्शन लिया था। आज उस केस में एक भी विटनेस ही नहीं आ रहा, नहीं आ रहा। दूसरा एक और केस बना दिया मेरे ऊपर। कहा कि सपने में... बड़ा हास्यास्पद केस है, वो केस चल रहा है, मैं भुगत रहा हूँ। कह रहे हैं, "जी टीवी पे सोमनाथ भारती दिखा मुझे, और इसी ने मुझे मरवाया है, इसी ने

मुझे मारपीट किया है।" मारने पीटने में मेरा नाम नहीं है, कहते हैं, "जी जिन लोगों ने मुझे मारा पीटा है, वो उनको तो मैं नहीं जानती, लेकिन टीवी पे मुझे दिखाई दिया।" अब वो कंप्लेनेंट है, उसका ये भी पता नहीं की 'ही' है कि 'शी' है। तो बगैर 'ही' और 'शी' जाने एक ऐसा केस भुगत रहा हूँ जिसमें कि मैं था ही नहीं। टीवी पे दिखा, यही आदमी था। अब कुछ तो शर्म करो! भई इतना भी न बिक जाओ और पुलिस के साथियों को अगर वो सुन रहे हैं तो कहना चाहता हूँ कि पाँच महीने की बात है भईया, पाँच महीने बाद ये दस लाख का सूट पहनने वाला आदमी नहीं रहेगा, न वो पार्टी रहेगा।

माननीया अध्यक्ष: चलो भारती जी, बहुत बहुत धन्यवाद।

सोमनाथ भारती: इसलिए... दो मिनट और, इसलिए आपका जो दायित्व है इस देश की आशा की किरण जो जगाया है केजरीवाल साहब ने, आपको उसको बचा के रखना है। केजरीवाल साहब आज कोई इंसान न रह गये, एक थॉट प्रोसेस है जो इस इंसान ने करके दिखाया है, ये पूरे हिंदुस्तान को चाहिए... मैं पाँच राज्यों का प्रभारी हूँ। वहाँ हर इंसान कहता है, "केजरीवाल साहब, हमारे पास कब आएँगे?" आपकी शिक्षा की नीति हमारे पास कब आएगी? स्वास्थ्य की नीति हमारे पास कब आएगी?" हर कोई ललक रहा है। हमारे पास रिसोर्सज नहीं हैं, नहीं तो हम भी सरकार वहाँ बना देते। हरियाणा में सरकार बनना सुनिश्चित है और ये इसको कोई रोक नहीं सकता। आखिरी की दो लाइन जो आजकल चल रहा है राम मंदिर, राम मंदिर पर चल रहा है ना, बनाएँगे, बनाएँगे। डेट तो बताएँगे नहीं, तो आज हमारे एक साथी ने भेजा है मुझे: 'वो मंदिर नहीं, फिर से सरकार बनाना चाहते हैं, वो मंदिर नहीं, फिर से सरकार बनाना चाहते हैं, देश में मूर्ख कितने हैं, वो फिर आजमाना चाहते हैं; ये है।

माननीय अध्यक्ष: बहुत बहुत धन्यवाद। माननीय मंत्री इमरान हुसैन जी।

माननीय खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री (श्री इमरान हुसैन): धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया आपने मुझे इतने गंभीर और महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। मैं बहुत दुःख के साथ, मुझे बहुत दुःख है, बहुत दिल में दर्द है मतलब कि सचिवालय के अंदर इतनी सिक्योरिटी के बावजूद अरविंद केजरीवाल जी पर उनके ऑफिस के बाहर सिर्फ महज दस कदमों की दूरी के ऊपर उनके ऊपर जानलेवा हमला कर दिया जाता है। मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ, पूरे होशो-हवास में सदन के सामने ये बात रखना चाहता हूँ कि ये एक सोची समझी साजिश के तहत अरविंद केजरीवाल जी को मरवाने के लिए मोदी जी ने और अमित शाह जी ने कांस्परेसी रच कर इसको अंजाम को, इसको अंजाम दिया और वो किसी भी हद तक जा सकते हैं। उसकी वजह सिर्फ ये है कि आज पूरे देश में भाजपा के नेता, चाहे वो मोदी जी हों, अमित शाह हों, या दिल्ली के हमारे सातों सांसद हों, वो कहीं भी जा रहे हैं, किसी भी इलाके में जा रहे हैं, किसी भी कालोनी में जा रहे हैं, मोहल्ले में जा रहे हैं तो लोग उनसे सवाल करते हैं कि तुमने पिछले साढ़े चार साल में क्या किया? और उनसे पूछते हैं भई, आपने कोई स्कूल बनवाया? आपने कोई अस्पताल बनवाया? आपने मोहल्ला क्लिनिक बनवाया? और यहाँ तक कि ये सवाल भी पूछ देते हैं कि होम डिलीवरी ऑफ सर्विसेज जो दिल्ली सरकार दे रही है, आपने वो भी चुरा ली और जो होम डिलीवरी आफ राशन केजरीवाल की का सपना है और केजरीवाल सरकार का सपना है, अगर वो दिल्ली के अंदर लागू हो गयी तो उन्हें इससे बहुत ज्यादा खतरा है, इन योजनाओं से। इसीलिए वो नहीं चाहते कि... केजरीवाल जी को वो देखना नहीं चाहते, अपने सामने किसी को देखना नहीं चाहते। तो मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ ये बयान दे रहा हूँ यहाँ पे, हाउस के सदन

के सामने अपनी बात रख रहा हूँ कि अगर अरविंद केजरीवाल जी को कुछ होता है तो इसका जिम्मेदार कोई और नहीं, मोदी जी और अमित शाह होंगे, पूरी भाजपा होगी क्योंकि भाजपा को ये बहुत अच्छी तरह पता है कि अगर पूरे हिन्दुस्तान में अगर कोई शख्स है, अगर कोई जनता का नेता है जो पब्लिक के लिए काम करता है, जो वादे करता है, उसको पूरे करता है तो वो सिर्फ अरविंद केजरीवाल है। ये पूरे देश की जनता जानती है और पूरे देश को जो आज उम्मीद है, वो सिर्फ अरविंद केजरीवाल से है। क्योंकि जुमलेबाजी तो पिछले साढ़े चार साल से वो देखते आ रहे हैं। उन्हें सब पता चल गया है कि 15-15 लाख किसके खाते में आ गये और क्या-क्या... आप सब लोग जानते हैं कि 15-15 लाख का उन्होंने वादा किया, किसानों के साथ उन्होंने लोन माफ करने का वादा करा उन्होंने, जो जो वायदे वो करते हैं, जहाँ भी जा रहे हैं इस वक्त, तो सब उनसे सवाल पूछ रहे हैं और दिल्ली के मॉडल को उनके सामने रख भी रहे हैं क्योंकि मीडिया चाहे न चलाए, लेकिन सोशल मीडिया का एक ऐसा माध्यम है और दिल्ली देश की राजधानी है, पूरे हिन्दुस्तान से लोग दिल्ली में आते हैं और भाजपा का मैं आपके सामने दोहरा चरित्र रखना चाहता हूँ भाजपा का कि 20 फरवरी इसी 2018 को मैं अपने साथ बीता हुआ हादसा बताता हूँ कि 20 फरवरी को मैं सचिवालय गया लगभग 12 बज के 15 मिनट पर, उसके बाद मैं अपने ऑफिस जाने लगा तो वहाँ काफी भीड़ थी। अब मुझे नहीं पता कौन- कौन लोग थे, लेकिन वो सब कैमरे के अंदर मौजूद हैं। मैं जाने लगा, मैं आधे रास्ते तक प्लाजा पे चला गया, उसके बाद मैं जैसे और आगे बढ़ा तो पीछे से चारों तरफ से आवाज आने लगी मारो, मारो, मारो, मारो... और कुछ अपशब्द भी लोग कह रहे थे। मुझे भी कह रहे थे और अब सीएम साहब के बारे में और मंत्रियों के बारे में सब के बारे में, पार्टी,

सब के बारे में, तो उस वक्त मैं एकदम डर गया, हैरान हो गया, मैं लिफ्ट में गया। मेरे साथ मेरा एपीएस राना मार्कण्डेय हिमांशु वो भी मेरे साथ थे। तो हम लिफ्ट में जैसे ही गए तो लिफ्ट को रोक लिया गया। जब लिफ्ट में... लिफ्ट को बंद कर रहा था ऊपर जाने के लिए, क्योंकि मैं ऑफिस आया था तो उसको रोक लिया गया और पीछे से पूरे जोर के साथ धक्का मारा गया, एक बार मारा गया, फिर दूसरी बार मारा गया, फिर जब तीसरी बार धक्का आया तो मैंने कहा अब तो बचना बहुत मुश्किल है। अब मतलब अब बचना वाकई मुश्किल है। तो मैंने हाथ दिया, ये सारी रिकार्डिंग है, ये सारी मीडिया के पास है, सारे मीडिया चैनलों के पास है, सारे के सारे यू-ट्यूब पे आप अगर अभी खोलेंगे अध्यक्ष महोदय, तो उसपे भी मिलेगा आपको और सारे चैनलों ने इसे कवर भी करा है। उसके बाद मैंने उनसे कहा, "ठहरो, मैं ही बाहर आ रहा हूँ, मार लेना। जो करना है, कर लेना।" लेकिन जब मैं बाहर गया तो उसके अंदर विलप के अंदर बिल्कुल साफ नजर आ रहा है कि बहुत सारे लोग हाथ चला रहे हैं, मेरी एपीएस को भी बहुत मारा उन्होंने, उसकी कमर पे निशान मीडिया ने दिखाए तो उस वक्त जो उसके मतलब काफी चोट आई थी, मुझे भी मारा, और वहाँ एक लड़का और था हमारे स्टाफ का, उसको भी मारा और मेरे एपीएस का भी मोबाइल टूट गया। मेरा भी मोबाइल टूट गया। किसी तरीके से हम लोग समझो, वहाँ से जान बचा के भागे, किसी तरीके से भागे, उसके बाद मैं आपको भाजपा की क्या करतूत बताऊँ, उसके बाद जब हम थाने पहुँचे तो वहाँ से एसएचओ को गायब कर दिया गया। मैं लगभग एक-डेढ़-दो घंटे बैठा रहा कंप्लेंट देने के लिए, उसके बाद वहाँ जितने कांस्टेबल थे उन्होंने कंप्लेंट नहीं ली, कहने लगे एसएचओ साहब आएँगे, तब देंगे। फिर मैंने चलो... काफी देर बैठा रहा और वहाँ मेरे साथ मैं अकेला नहीं था वहाँ मीडिया

भी पूरी थी लगभग सारे चैनल्स के लोग थे। क्यूं इन्हें पता है सारी बात, सारा हादसा इनके सामने हुआ है। उसके बाद में एसएचओ आए तो वो कंप्लेंट न लें, वो कहें कि भई ऊपर बात चल रही है। मैंने कहा कि भई ऊपर कहाँ बात चल रही है? क्या मोदी जी से बात चल रही है? तो उसके बाद में बहुत देर, घंटों बाद फिर मैं बाहर आया, मैंने मीडिया को मैंने कहा.. मैं मीडिया से कह रहा हूँ और जनता में जाके बता रहा हूँ कि आप आम आदमी पार्टी के मंत्री, विधायक के साथ ऐसा हादसा हुआ और वो भी सेक्रेटरिएट में जिसकी जिम्मेदारी खुद सुरक्षा की वो पुलिस की है, तो उसके बाद उन्होंने मेरी कंप्लेंट ली, उसके बाद भी उन लोगों ने कोई एफआईआर दर्ज नहीं की, उसके बाद हम लोगों को कोर्ट जाना पड़ा। 156/3 के अंदर हम लोगों ने उसमें एफआईआर कराई और आज के दिन तक मोदी जी का इत्ता बड़ा संरक्षण है।

भाजपा का इन लोगों को इतना बड़ा संरक्षण है कि आज के दिन तक उन लोगों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन लोगों से पूछताछ नहीं हुई। उनमें से कोई एक घंटे के लिए भी थाने नहीं गया। उसमें सैकड़ों लोगों की शक्लें आ रही हैं और काफी लोगों के चेहरे नजर आ रहे हैं; जो मेरे साथ मारपीट कर रहे हैं, मेरे एपीएस के साथ मारपीट कर रहे हैं। तो ये दोहरा चरित्र है। और एक बात और मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ कि वहीं उससे एक दिन पहले चीफ सेक्रेटरी साहब की मीटिंग हुई थी। सीएम साहब ने चीफ सेक्रेटरी को बुलाया था। तो राशन के ऊपर मीटिंग थी, क्योंकि आम आदमी पार्टी की एक ऐसी महत्वपूर्ण योजना है, अगर ये लागू हो गई तो भाजपा को ये बहुत अच्छी तरह से पता है और मोदी जी को भी ये बहुत अच्छी तरह पता है कि अगर इन्होंने ये योजना दिल्ली में ला दी और दिल्ली के घर-घर तक राशन पहुँचा दिया तो पूरे हिंदुस्तान

में मोदी जी तो सिर्फ जुमलेबाजी करते हैं और अरविंद केजरीवाल को कोई रोकने वाला नहीं होगा। तो उन्हें बहुत अच्छी तरह पता था तो वहाँ जब उससे कहा गया; चीफ सेक्रेटरी से कि ये आपने इतनी इंपोर्टेंट फाइल क्यों रोक रखी है और क्यों इस पर काम नहीं हो रहा तो उसके बाद में वो वहाँ से बिल्कुल चलते हुए आ रहे हैं सीधा विलप में दिखाया जा रहा है; सीधे आ रहे हैं और उन्होंने रात को ही... भाजपा ने रात को ही हमारे एमएलए के ऊपर... और मैं एक बात और कहना चाहता हूँ, सदन के सामने रखना चाहता हूँ कि अगर हमारे कोई एमएलए पर इल्जाम लगाया जाता है, उस पर एफआईआर की जाती है भाजपा की तरफ से तो उसके अंदर मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का नाम जरूर जोड़ा जाता है। “भई, क्यों जोड़ा जाता है? अब इन्होंने कहा जैसा कि मैं मीडिया के माध्यम से मुझे पता चला और मैंने ये देखा; मेरे ऊपर जानलेवा हमला हुआ, उसकी पूरी रिकार्डिंग है और मैं बचता नहीं उस दिन, बिल्कुल नहीं बचता अगर मैं लिफ्ट के अंदर रह जाता ना, तो मैं यहाँ होता ही नहीं, बात ही नहीं कर रहा होता। तो वो उन लोगों को आज तक कार्रवाई नहीं हुई और जिसका सबूत नहीं है, चीफ सेक्रेटरी बिल्कुल ठीक-ठाक जा रहे हैं, वहाँ से गाड़ी में बैठ के जा रहे हैं और वहाँ से फिर वो एलजी के यहाँ गये, मोदी जी के कहने पर और वहाँ जा के वहीं कमिशनर भी आ जाता है रातों-रात, सारी प्लानिंग बना ली कॉन्सप्रेसी रच दी जाती है और अगले ही दिन हमारे दो विधायकों को अमानतुल्लाह खान साहब को और प्रकाश जारवाल साहब को चौराहों पर से इस तरह से उठाया जाता है जैसे ये लोग क्रिमिनल्स हों, देश छोड़ के जाने वाले हों और जो एफआईआर करी जाती है, उसके अंदर ग्यारह एमएलए और मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का नाम और उसके बाद सबसे पूछताछ और उसके बाद मुख्यमंत्री के घर की... कुर्की कहूँगा, मैं इसको कुर्की

कहूँगा; दीवारें तक चैक कराई गई कि कहीं दीवारों के अंदर तो कुछ नहीं रखा हुआ है, कहीं कुछ छेड़-छाड़ तो दीवारों के साथ तो नहीं हो गई। तो ये जो एक मानसिक तनाव में है भाजपा इस वक्त अरविंद केजरीवाल से, आम आदमी पार्टी से घबराई हुई है और मुझे अध्यक्ष महोदय, ये मैं कह रहा हूँ... मुझे मतलब पूरा यकीन है कि भाजपा केजरीवाल जी को मरवाना चाहती है क्योंकि भाजपा को अगर पूरे देश के अंदर... क्योंकि उनकी राजनीति ऐसी है, वो अपने सामने किसी को देखना नहीं चाहते हैं। आज कांग्रेस का कोई वजूद नहीं है उनके सामने। कांग्रेस से जो अध्यक्ष हैं, उसको उन्होंने खिलौना बना दिया है। अगर आज कोई टक्कर ले रहा है, अगर देश को किसी से उम्मीद है क्योंकि कोई आज दिल्ली के जो स्कूल हैं, वो दिल्ली की जो शिक्षा प्रणाली है या दिल्ली की जो स्वास्थ्य प्रणाली है या दिल्ली की जो सड़कें हैं, दिल्ली में जो पानी का काम है या सड़क का सीवर का काम है, वो देश से छुपा हुआ नहीं है और पूरे देश के लोग चाहते हैं कि अरविंद केजरीवाल जी उनके यहाँ आये और वहाँ भी इसी तरीके से काम करें जिस तरह दिल्ली के अंदर काम हुआ है। मुझे बहुत दुःख है, अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि अरविंद केजरीवाल जी को अगर कुछ होता है, मैं आप लोगो से भी चाहूँगा कि आप लोग इसे रिकॉर्ड में रखें अगर आईदा अरविंद केजरीवाल जी पर कोई हमला हो... बल्कि ये जो अभी हमला हुआ था, इसकी एफआईआर होनी चाहिए। उसके अंदर कॉन्सप्रेसी के अंदर मोदी जी और अमित शाह जी के नाम से ये एफआईआर होनी चाहिए और उनसे पूछताछ होनी चाहिए कि वो जो साजिश रच रहे हैं, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी के लिए, अरविंद केजरीवाल जी के लिए, पूछताछ भी होनी चाहिए और अगर वो इसमें लिप्त हों तो उन्हें सजा भी मिलनी चाहिए, शुक्रिया, जयहिंद।

माननीय अध्यक्ष: सदन का समय आधे घंटे के लिए और बढ़ाया जाता है। माननीय मन्त्र्यमंत्री जी।

माननीय मुख्यमंत्री: अध्यक्ष जी, पिछले तीन साल में मुझ पर चार बार हमले करवाये गये। मेरी कोई औकात नहीं है, मैं बहुत छोटा सा आदमी हूँ। केजरीवाल की कोई औकात नहीं है। मुझ पर हमले क्यों कराये गये? क्योंकि दिल्ली के लोगों ने एक गुस्ताखी कर दी कि एक आम आदमी को उन्होंने मुख्यमंत्री बना दिया। ये हमले... आज अगर मैं सीएम नहीं होता तो मेरे पर हमले नहीं कराये जाते। ये इसलिए उन्होंने हमले किए क्योंकि मैं दिल्ली के लोगों द्वारा चुना गया मुख्यमंत्री हूँ। तो अध्यक्ष महोदय, ये हमले मुझ पर नहीं हैं। भारतीय जनता पार्टी के सीधे-सीधे ये हमले दिल्ली के लोगों के ऊपर कराये जा रहे हैं। उन्होंने दिल्ली के लोगों के ऊपर जब से हमारी सरकार बनी है और जब से दिल्ली के लोगों ने 70 में से 67 सीट देने की हिम्मत की है, भारतीय जनता पार्टी ने कहा है कि हम देखते हैं, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई जो तुमने केजरीवाल को, आम आदमी पार्टी को दिल्ली की सत्ता सौंप दी!" तो ये हमले किसी व्यक्ति के ऊपर नहीं हैं। भारतीय जनता पार्टी के चारों के चारों हमले दिल्ली की जनता के ऊपर कराये गये हैं। पहले हमले में मैं छत्रसाल स्टेडियम में ऑड-ईवन का प्रोग्राम था... सरकारी प्रोग्राम था, उस प्रोग्राम में स्पीच दे रहा था स्टेज से, जब एक लड़की ने स्टेज के सामने आकर मेरे ऊपर स्याही फेंकी। उस हमले की आज तक कोई जाँच नहीं हुई। उस हमले की कोई चार्जशीट नहीं हुई और जिन्होंने भी ये काम किया, वो लड़की तो मात्र मोहरा थी। उसके पीछे कौन लोग थे, उनकी किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई। दूसरे हमले में प्रेस कॉन्फ्रेंस के अंदर दिल्ली सचिवालय के अंदर सरकारी प्रेस कॉन्फ्रेंस के अंदर एक व्यक्ति ने जूता फेंका। उसमें कोई चार्जशीट नहीं हुई, कोई

जाँच नहीं हुई, कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। दो चार दिन के लिए जो करता है, उसको पकड़ लेते हैं, फिर बेल मिल जाती है उसको। लेकिन जिन लोगों ने करवाया, उसकी कोई जाँच नहीं हो रही।

तीसरे हमले में भारतीय जनता पार्टी के एक सांसद ने अभी एक महीना पहले सिग्नेचर ब्रिज के उद्घाटन के तहत कई कैमरों के सामने स्टेज के ऊपर... जब मैं स्पीच दे रहा था तो उन्होंने बोतलें फिकवाई और तरह-तरह की चीजें फिकवाई। उसकी कोई जाँच नहीं हुई, कोई कार्रवाई नहीं हुई, कुछ नहीं हुआ। उसका और अभी चौथी बार सचिवालय के अंदर, मेरे चैम्बर के सामने मुझ पर मिर्च फेंकी गई। उसका देखते हैं, अब क्या होता है। मेरे पास उस दिन शाम को राजनाथ सिंह जी का फोन आया। राजनाथ सिंह जी ने कहा, "मैं मध्यप्रदेश में हूँ। मैं एक सभा कर रहा था जब स्टेज से उतरा तो मुझे पता चला। बड़ा दुःख हुआ। कैसे हैं आप?" मैंने कहा, "आप ही ने भेजा था। पूछ लो उससे, कैसे हैं हम। आप ही का आदमी है। "अरे! नहीं-नहीं, केजरीवाल जी, आप कैसी बात करते हो। मैंने कहा, "राजनाथ सिंह जी, एक चीज बताइये, ऐसा कभी हो सकता है? आपकी सुरक्षा जो भी है, उसको देखते हुए कि कोई लड़की... आप जब स्टेज पर भाषण दे रहे हों, कोई लड़की आपकी स्टेज के सामने आपके ऊपर इंक फेंक दे। ऐसा हो सकता है?" फिर वो इधर-उधर की बात करने लगे। मैंने कहा, "हाँ या ना में जवाब दीजिए?" क्या आपकी सुरक्षा को देखते हुए आपकी स्टेज के सामने कोई लड़की आके आप के ऊपर इंक फेंक सकती है और वो बोतल एक्चुअली पहुँच जाये और मेरे ऊपर इंक गिरे। मतलब ऐसा नहीं कि अटैम्प्ट किया, एक्चुअली फेस पर और कपड़ों पर इंक गिरी। ऐसा हो सकता है?" बोले, "नहीं हो सकता।" तो मैंने कहा, "या तो आप निकम्मे हैं और या आप मिले हुए हैं। दोनों में से एक ही

काम है या तो आप मेरे को सुरक्षा नहीं दे सकते, नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री होते हुए अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री की सुरक्षा नहीं कर सकते तो इस्तीफा दे दें और नहीं तो जनता यही सोचेगी कि दिल्ली की जनता के ऊपर नरेन्द्र मोदी ने हमला किया है। नरेन्द्र मोदी दिल्ली की जनता से बदला ले रहा है।” इसके अलावा तो दूसरा कोई और वो नहीं है। या तो तुम मिले हुए हो या तुम भेज रहे हो। दोनों में से या तो तुम भेज रहे हो और या तुम निकम्मे हो दोनों में से कुछ हो ही नहीं सकता लेकिन ये सोचना पड़ेगा, ये क्यों करा रहे हैं! पहली चीज, 70 साल तक कांग्रेस ने इस देश को लूटा है, लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लिस्ट है बड़ी लंबी। बोफोर्स, टूजी स्कैम, कोयला स्कैम, कॉमन वेल्थ स्कैम, फलाना स्कैम, ढिमका स्कैम... 70 साल तक कांग्रेस ने लूटा। और अब इन चार साल में... जितना 70 साल में कांग्रेस ने लूटा था, उससे सौ गुणा इन्होंने चार साल के अंदर लूट लिया। बोफोर्स घोटाला कितने करोड़ का था? 56 करोड़ का और रॉफेल घोटाला कितने करोड़ का है? 36 हजार करोड़ का। चार साल में उन्होंने बोफोर्स की पता नहीं, कितनी जीरो, कितने परसेंट पूरा कर लिया! विजय माल्या 6 हजार करोड़ रूपए बैंकों का लोन लेकर भाग गया। उसको भगा दिया। कितने पैसे देकर गया विजय माल्या मोदी को, ये देश जानना चाहता है? कितने पैसे दिए नीरव मोदी ने नरेंद्र मोदी को, ये देश जानना चाहता है? सहारा की डायरी के अंदर नरेंद्र मोदी का बाई नेम नाम लिखा हुआ है कि नरेंद्र मोदी के हाथ में पैसे दिए गए। बिड़ला की डायरी के अंदर नरेंद्र मोदी का बाई नेम नाम लिखा हुआ है। लूट रहे थे अभी तक ये सब लोग। पहली बार एक सरकार आई है जो स्कूल और अस्पताल बनाने लगी है। अब जनता इनसे पूछ रही है, “मोदी जी, आप कहते थे, मैंने गुजरात का विकास कर दिया। 12 साल में तुमने क्या करा, दिखाओ तो सही?”

गुजरात के स्कूलों को दिल्ली के स्कूल से कम्पेयर करो। गुजरात के अस्पतालों को दिल्ली के अस्पताल से कम्पेयर करो। गुजरात की बिजली को दिल्ली की बिजली से कम्पेयर करो। गुजरात के सीवर को दिल्ली के सीवर से कम्पेयर करो। 12 साल तुम्हारे, साढ़े तीन साल हमारे। नरेंद्र मोदी जी हार जाते हैं और अब अगर जनता इनसे पूछने लगेगी बार-बार, बार-बार कि स्कूल कहाँ हैं? अस्पताल कहाँ हैं? आईआईटी कहाँ हैं? सड़क कहाँ है? बिजली कहाँ है? रोजगार कहाँ हैं? काला धन कहाँ है? जब जनता पूछने लगेगी तो इनके पास एक ही चारा बचता है केजरीवाल को मरवा दो। ये नहीं चाहते कि इनकी लूट-पाट खत्म हो। तो ये साजिश है जिसके तहत ये हम लोगों को खत्म करना चाहते हैं। हम सरकार कैसे चलाएं?

जब दिल्ली के अंदर स्ट्राइक होती है... डीटीसी की स्ट्राइक होती है, एस्मा लगाया जाता है। पुलिस को फोन करते रहो, फोन करते रहो, ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर यहीं बैठे हैं, कैलाश गहलोत, बेचारा सवेरे से जिस दिन स्ट्राइक हुई थी, रात को एस्मा लग गया था, सवेरे से एल.जी को फोन कर रहा है, एल.जी. को फोन कर रहा है। एल.जी के पास कपिल मिश्रा से मिलने का टाइम है। एल.जी. के पास दो टके के बीजेपी के कार्यकर्ताओं से मिलने का टाइम है। एल.जी. के पास कैलाश गहलोत से मिलने का टाइम नहीं है। लानत है ऐसे एल.जी. के ऊपर! डूब मरना चाहिए ऐसे एल.जी को, चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। राजनीति करते हो तुम दिल्ली के लोगों के साथ। बेचारा फोन करता रहा, चार घंटे तक फोन करता रहा, एल.जी. ने फोन नहीं उठाया। टाइम माँगा, दिल्ली के अंदर ट्रांसपोर्ट की स्ट्राइक चल रही है, बसें नहीं निकल रहीं, दो दिन के बाद टाइम दिया एल.जी. ने इनसे मिलने का। जब इन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहा कि एल.जी. मेरे से मिलता नहीं है। पुलिस को बोल दिया कि कोई एस्मा को लागू करने की जरूरत नहीं है।

दिल्ली के डीटीसी के सारे कर्मचारी हमारे साथ हैं। हमारे जैसी सेंसिटिव सरकार कभी नहीं मिलेगी कर्मचारियों को। सारे कर्मचारी हमारे साथ थे। बीजेपी के भेजे हुए 50 लुच्चे-लफंगें गुंडे बैठे थे, जो कर्मचारियों को अंदर नहीं घुसने दे रहे थे। बार-बार ये कह रहे थे पुलिस वालों को कि इनको पकड़ो, इनको हटाओ यहाँ से, पुलिस वाले नहीं हटा रहे थे। क्यों? क्योंकि उनको ऊपर से ऑर्डर थे, स्ट्राइक को होने दो, दिल्ली ठप्प कर दो। दिल्ली वालों को तंग करो। कैसे चलाएं हम सरकार इस तरह से? अगर जान-बूझकर दिल्ली को ठप्प करने की कोशिश की जाती है। बिना फोर्स के दिल्ली सरकार हम कैसे चलाएं? हम अपनी सुरक्षा कैसे करें? हम अपने विधायकों की सुरक्षा कैसे करें? हम अपने कर्मचारियों की सुरक्षा कैसे करें? हम अपने मंत्रियों की सुरक्षा कैसे करें? हम दिल्ली की जनता की सुरक्षा कैसे करें?

जब से तीन साल से हमारी सरकार बनी है, इन्होंने नाक में दम कर दिया। दिल्ली वालों के लिए सीसीटीवी कैमरे नहीं लगने दे रहे मोदी जी। मोहल्ला क्लिनिक नहीं बनने दे रहे मोदी जी। स्कूल नहीं बनने दे रहे मोदी जी। अस्पताल नहीं बनने दे रहे मोदी जी। दवाइयाँ फ्री नहीं होने देते मोदी जी।

दोस्तो! एक वो गाना आया था—मोदी, दिल्ली के लिए तू तो हानिकारक है। दिल्ली के लिए तो और हानिकारक है।

तो अध्यक्ष महोदय, मैं जो गृह मंत्री ने प्रस्ताव रखा है कि दिल्ली पुलिस को सीधे-सीधे चुनी हुई सरकार के दायरे में लाया जाए, इसके लिए... लेकिन संविधान का संशोधन करना पड़ेगा। लेकिन जब तक ये संशोधन नहीं किया जाता तब तक कम से कम एक ऐसा वर्कबल सॉल्यूशन निकालना पड़ेगा,

जिससे कि दिल्ली सरकार जब-जब जरूरत पड़े, अपनी सुरक्षा के लिए एस्मा जैसे कानून को एन्फोर्स करने के लिए, तब तक उन लिमिटेड दायरे के अंदर कम से कम दिल्ली पुलिस सीधे दिल्ली की चुनी हुई सरकार को एन्फोर्स करे, जब तक संविधान का संशोधन नहीं हो जाता, इस तरह की एक वर्कबल प्रणाली निकालनी पड़ेगी।

दूसरा, अभी मैं कई विधायकों को सुन रहा था। उनके दर्द को सुन रहा था। एक विधायक ने शायद नितिन जी ने प्रस्ताव रखा है कि 1 करोड़ रुपये की पॉलिसी जो दिल्ली पुलिस की है, वो कैंसिल की जाए। मैं इसके समर्थन में नहीं हूँ। मुझे लगता है कि दिल्ली पुलिस कोई एक या दो अफसरों की पुलिस नहीं है। दिल्ली पुलिस एक इंस्टीट्यूशन है। दिल्ली पुलिस की मैं बहुत इज्जत करता हूँ। दिल्ली पुलिस में कई कमियाँ हो सकती हैं। लेकिन आज जो भी कहें, दिल्ली के अंदर जितनी भी कानून व्यवस्था है, वो दिल्ली पुलिस के जाबांज सिपाहियों की वजह से है। हम दिल्ली पुलिस की इज्जत करते हैं। और मैं नहीं चाहता कि किसी भी हालत में हमें जो-जो दिल्ली पुलिस के जाबांज सिपाही शहीद हुए हैं, उनको किसी भी तरीके से हमें रोकना चाहिए, उस पॉलिसी को। मैं मानता हूँ कि इमरान हुसैन के ऊपर हमला हुआ और उस पर एफआईआर दर्ज नहीं की गई। सारे वीडियो के अंदर कैसे हमला हुआ, क्या हुआ, सब कुछ कैप्चर्ड है, उसके बावजूद एफआईआर दर्ज नहीं की गई। लेकिन इसके लिए दिल्ली पुलिस जिम्मेदार नहीं है। इसके लिए भाजपा जिम्मेदार है जो पुलिस को एफआईआर करने से रोक रही है। मैं मानता हूँ कि आप सारे माननीय सदस्यों के ऊपर, कम से कम 20 सदस्यों के ऊपर झूठे केस किए गए हैं। झूठे केस कर करके आप लोगों को कइयों को गिरफ्तार किया गया। आप सोच के देखो, किसी और राज्य के अंदर, आप लोगों ने तो कुछ किया ही नहीं था, बिना

किए आप लोगों को उठा लिया। बिना किए आपके ऊपर... क्या किसी पुलिस की हिम्मत है कि किसी विधायक को हाथ भी लगा दे, अगर विधायक असली में कोई गुंडागर्दी कर रहा हो। नहीं है हिम्मत। ये पुलिस नहीं कर रही है, दिल्ली पुलिस नहीं कर रही ये, ये भाजपा करवा रही है। ये प्रधानमंत्री मोदी जी करवा रहे हैं। मैं मानता हूँ कि मेरे ऊपर झूठी एफआईआर, सिग्नेचर ब्रिज का उद्घाटन था, मुख्यमंत्री भाषण दे रहा, मेरे ऊपर बोलतें फेंकी गईं और मेरे ही ऊपर एफआईआर हो गई। किसी पुलिस की हिम्मत कि मुख्यमंत्री पर एफआईआर कर दे। पुलिस नहीं कर रही है, भाजपा करवा रही है। इसको समझने की कोशिश करनी पड़ेगी। आप लोगों के दर्द को मैं समझ रहा हूँ, मैं काफी देर से यहाँ पर सुन रहा था। जब काफी विधायकगण ये कह रहे थे पुलिस ने ऐसे किया, पुलिस ने ऐसे किया। पुलिस नहीं कर रही, ये करवाया जा रहा है। इसको समझने की कोशिश कीजिए। मेरा अपना ये मानना है, अभी अलका लाम्बा जी ने कहा एक डीसीपी था जो गड़बड़ था, अगला डीसीपी आया जो अच्छा था। क्योंकि वो अच्छा काम कर रहा था, उसको वहाँ से बदल दिया। किसने बदला? भाजपा ने बदला। तो पुलिस वाला अच्छा था। इस सिस्टम के अंदर आज मेरा मानना है कि कम से कम 95 परसेंट पुलिस वाले बहुत अच्छे हैं। उनके अच्छे काम तो अपने सामने नहीं आते। कोई गड़बड़ हो जाती है तो सामने आता है। 95 परसेंट में आपको... जो 18 लोगों को हम लोग सम्मानित करने जा रहे हैं, जिनको एक-एक करोड़ रुपये के चैक दे रहे हैं... या तो दे दिए या आने वाले दिनों में देने जा रहे हैं, उन 18 लोगों में 11 लोग दिल्ली पुलिस के जवान हैं। जिन्होंने अपनी जान के ऊपर खेलकर, उन्होंने मौत को गले लगा लिया ताकि आप और आपके बच्चे सुरक्षित रह सकें। मैं उनके नाम पढ़ना चाहता हूँ— योगेश कुमार—कांस्टेबल, राम कंवर मीणा—हेड कांस्टेबल, दीपक

कुमार-कांस्टेबल, आनंद सिंह-कांस्टेबल, रविन्द्र-कांस्टेबल, विनेश कुमार-कांस्टेबल, यशवीर सिंह-कांस्टेबल, अब्दुल सबूर खान- हेड कांस्टेबल, बिरेन्द्र सिंह- कांस्टेबल, भूप सिंह- कांस्टेबल, आनंद कुमार- कांस्टेबल। ये 11 नाम हैं।

... (व्यवधान)

माननीय मुख्यमंत्री: उनके नाम नहीं हैं इसमें। वीरेन्द्र कुमार है, दीपक है। दो हैं, उन दोनों के नाम हैं। ये 11 नाम हैं। ये तो वो लोग हैं जिन लोगों ने अपनी जान खो दी और ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने जान जोखिम में डाल के हम लोगों की सुरक्षा की है। आप ये सोच के देखो आज तक जब तक हमारी सरकार नहीं बनी थी, दिल्ली के अंदर, दिल्ली के स्कूलों की बहुत बुरी हालत थी, सरकारी स्कूलों की। लोग टीचरों को गाली देते थे लेकिन दोष टीचरों का नहीं था, उन्हीं टीचरों से हम लोगों ने काम कराके और सारे सरकारी स्कूल ठीक कर दिए। आप ये सोच के देखो जब तक हमारी सरकार नहीं बनी थी दिल्ली में, सरकारी अस्पतालों के अन्दर डॉक्टरों को गाली देते थे लोग, आज उन्हीं डॉक्टरों को लोग देवता मानते हैं और उन्हीं डॉक्टरों के जरिए हमने दिल्ली के अस्पताल ठीक कर दिए।

मैं आपको अपना एक पर्सनल वाकया सुनाता हूँ अभी तीन दिन पहले का। एक कोई हमारे जान-पहचान वाले हैं, पैसे वाले खूब, उन्होंने बहुत बड़े दिल्ली के नामी सबसे फाइव स्टार नाम लेना ठीक नहीं है, उस अस्पताल के अंदर इलाज कराया, उस अस्पताल वालों ने जवाब दे दिया। बोले जी, ले जाओ, मरीज में अब कुछ नहीं बचा। वेंटीलेटर पे थे वो। उनका मेरे पास फोन आया, उन्होंने कहा कि जी सरकारी अस्पताल में देख लो।

मैंने जीबी पंत में फोन किया, जी बी पंत में वो एडमिट हो गए। आपको ये जानके ताज्जुब होगा जिसको उस बड़े अस्पताल ने, प्राइवेट अस्पताल ने तीन दिन का टाइम दिया था कि जी, तीन दिन में अब ये बचेंगे नहीं तीन दिन के अंदर जी. बी. पंत वालों ने उनको ठीक करके घर भेज दिया। ये हमारे सरकारी अस्पताल हैं। मेरा मानना है कि जिस दिन दिल्ली पुलिस, चुनी हुई दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार के अंदर में आ गई, आप इसी तरह के कारनामे इन्हीं पुलिस वालों से सुनोगे कि उस पुलिस वाले ने हेरोइन पकड़ ली, स्मैक पकड़ ली। ये जान की बाजी लगा के आपके लिए काम करेंगे। दोषी दिल्ली पुलिस नहीं है, दोषी भारतीय जनता पार्टी है। आप लोग अपने मन से दिल्ली पुलिस के लिए जितनी भी कड़वाहट है, उसको निकाल दीजिए। दिल्ली पुलिस का कोई दोष नहीं है, दोष इस देश की गंदी राजनीति का है। उन्हीं टीचरों ने अच्छे कर दिए स्कूल, उन्हीं डॉक्टरों ने अच्छे कर दिए अस्पताल, ये ही दिल्ली पुलिस के कर्मचारी, दिल्ली वालों की सेवा करने लेंगे जिस दिन इनके बॉस अच्छे और ईमानदार हो गए। मेरी बस दिल्ली पुलिस के साथियों से एक निवेदन है, आपकी मजबूरी को हम अच्छी तरह से समझते हैं, ये 11 पुलिस वालों के मैंने नाम लिए हैं, इन 11 पुलिस वालों की शहादत को खराब मत होने देना। एक भारतीय जनता पार्टी का गुंडा सांसद आपके दो अफसरों पे हाथ उठाता है, एक अफसर को आपके थप्पड़ मारता है और दूसरे अफसर की कॉलर पकड़ के उसको हिलाता है और दिल्ली पुलिस चुप है। आपके सम्मान की रक्षा आपको करनी पड़ेगी, ये 11 पुलिस वालों ने शहादत इसके लिए नहीं दी थी कि आप अपने सम्मान की रक्षा भी न कर पाए। कल केजरीवाल रहे या ना रहे, आपमें से कोई रहे, न रहे दिल्ली पुलिस पाँच सौ साल तक रहेगी कम से कम, दिल्ली पुलिस एक इंस्टीट्यूशन है, उस इंस्टीट्यूशन की

मर्यादा को, उसके सम्मान को खत्म मत होने देना। भारतीय जनता पार्टी का एक नेता मिला था मेरे को, कहता है, "दिल्ली पुलिस हमारे पाँव की जूती है।" मेरे को एक बार तो मन कर रहा था उसको खींच के थप्पड़ मारूँ, एक केस और हो जाता। तो मेरा केवल दिल्ली पुलिस से यही कहना है कि अपने सम्मान की कम से कम रक्षा करना सीखें आप। हमारे ऊपर केस करते हैं, आपके ऊपर बहुत दबाव है, हम उसको मानते हैं। आप जितने मर्जी केस करो, हमको जितनी मर्जी बार अंदर कर दो; ये राजनैतिक लड़ाई है। आपसे हमारी कोई गिला-शिकवा नहीं है दिल्ली पुलिस का और दिल्ली पुलिस के सारे सिपाहियों का मैं खूब सम्मान करता हूँ। उनको सैल्यूट करता हूँ। जिस तरह से वो अपनी जान की बाजी लगा के दिल्ली की रक्षा कर रहे हैं और कोई रहे या न रहे अगर कल आपको दिल्ली पुलिस के किसी सिपाही को किसी चीज की जरूरत हो तो बेफिक्र केजरीवाल के घर आ जाना, कुछ भी माँग लेना, मैं आपका साथ दूँगा, मैं आपके पीछे खड़ा हुआ नजर आऊँगा। मोदी कभी तुम्हारा साथ नहीं देने वाला। मोदी कभी साथ नहीं देने वाला, बीजेपी कभी साथ नहीं देने वाली, ये आम आदमी पार्टी तुम्हारे काम आएगी कल को अगर तुम्हारे बच्चे का एडमिशन नहीं हो रहा हो, कहीं इलाज कराना हो, कुछ करना हो, हमारे पास आ जाना।

तो ये दूसरा, जो नितिन त्यागी जी ने किया है मेरी आप सबसे गुजारिश है कि उसको विदज्ञ कर लिया जाए। एक करोड़ रुपए की राशि हमारे दिल्ली पुलिस के सिपाहियों के लिए, वो उन्हें बरकरार रखी जाए, बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीय अध्यक्ष: अब श्री सत्येन्द्र जैन, माननीय गृह मंत्री द्वारा नियम-90 के तहत प्रस्तुत संकल्प सदन के सामने है:

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें;
जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें;
(सदस्यों के हाँ कहने पर)
हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता;
संकल्प स्वीकार हुआ।

अब ध्यानाकर्षण (नियम-54 श्री अजय दत्त जी।

ध्यानाकर्षण (नियम-54)

श्री अजय दत्त: अध्यक्ष जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, आज हम रामलीला मैदान से हो के आए हैं, जहाँ लाखों की संख्या में सरकारी कर्मचारी इकट्ठा हुए। तो मैं थोड़ा सा इसका बैकग्राउंड बताना चाहूँगा पहले आपको। 2004 में बीजेपी की सरकार के शासन काल में सरकारी कर्मचारियों की पेंशन को बंद करके उसको मार्केट से लिंक कर दिया गया कि अगर मार्केट, शेयर मार्केट परफॉर्म करेगी तो उनको पेन्शन मिलेगी और अगर नहीं करेगी तो नहीं मिलेगी। तो उस समय जो भी लोग 2004 के बाद रिक्रूट हुए, उन लोगों को पेन्शन न देने का एक बहुत कड़ा और सख्त डिसिजन बीजेपी की सरकार ने लिया और उसका इम्पैक्ट आज सरकारी कर्मचारियों पे है और उसके बाद करीबन 2004 से आज तक टोटल 60 लाख कर्मचारी पूरे भारतवर्ष में इस पेन्शन की कुरीति को झेल रहे हैं और इस पेन्शन में बहुत सारी खामियाँ हैं। इसका नाम दिया गया है एनपीएस (नैशनल पेन्शन स्कीम) जिसके दौरान सरकारी कर्मचारी अपने 10 परसेंट वेतन और डीए की कटौती

करवाएगा और उसके लिए वो बाध्य है और उसके बाद ये एक विशेष खाता जिसे 'प्रेन' के नाम से खोला गया, उसमें ये राशि जाएगी और टोटल जो पेन्शन का वेतन है, उसका 20 परसेंट काटने के बाद 80 परसेंट जो बहुत बड़ी राशि है, वो मार्किट में रिलाएंस, आईसीआईसी, यूटीआई और बहुत सारी प्राइवेट संस्थानों में उसका निवेश किया जाएगा और उस निवेश के बाद अगर मार्किट नीचे आती है तो पेन्शन धारियों को उससे कुछ नहीं मिलेगा और अगर ऊपर जाती है तो उसमें एक कटऑफ लिस्ट बना दी कि इसके बाद हम उनको पैसा नहीं देंगे। इसमें निवेश पर कोई रिटिन की गारंटी नहीं है और ये पूरी तरह बाजार पे आधारित है, इस पेन्शन में, पेंशनधारी को कोई ऋण की सुविधा नहीं है और अगर वो सेवानिवृत्त हो जाता है तो उसको कोई न्यूनतम पेन्शन की गारंटी भी नहीं है। आज कम से कम आम आदमी पार्टी ने एक किसी भी आम आदमी को जो 60 साल से ऊपर का है या अगर कोई विधवा बहन है या कोई विक्लांग साथी है, उसकी एक हजार से बढ़ाकर पेन्शन हमने ढाई हजार कर दी है तो उनको तो एक गारंटी दे दी है लेकिन इस पेन्शन में कोई गारंटी नहीं है और अगर कोई व्यक्ति, किसी की अक्स्मात मौत हो जाए तो उसके परिवार को वो पेन्शन नहीं मिलेगी, क्योंकि इसमें कोई प्रावधान नहीं है और अगर कोई व्यक्ति, कोई कर्मचारी इस्तीफा दे, उसके बाद उसकी टोटल जमा राशि का सिर्फ 20 परसेंट ही उसको मैक्सिमम मिल सकता है अगर बीच में किसी को किसी बीमारी की वजह से या कोई पर्सनल प्रॉब्लम की वजह से बीच में उसको अपना इस्तीफा देना पड़े या उसको नौकरी छोड़नी पड़े तो उसको सिर्फ 20 परसेंट मैक्सिमम मिलेगा और इसके अलावा अगर किसी कर्मचारी को अपना उपचार कराना है तो पुरानी पेन्शन में वो अपनी पेन्शन से पैसा निकाल के उपचार करा सकता था जैसे कि कोई गुर्दे का, कोई किडनी

ट्रांसफर, ट्रांसप्लांट करानी हो या कोई हार्ट की सर्जरी करानी हो या कोई और कैंसर का इलाज कराना हो तो पैसा पुरानी पेन्शन में मिल जाता था। इसमें उसका सिर्फ 25 परसेंट एक बार मिलेगा और उसके बाद नहीं मिलेगा। और ये भी आप सोचिए कि जो मार्किट से लिंक है अगर उस समय मार्किट परफॉर्म नहीं कर रही है तो वो उसको पैसा हजार या दो हजार के रूप में मिलेगा। इसी तरीके से अगर कोई बुजुर्ग अपनी पेन्शन को पूरी लेना चाहता है तो उसका सिर्फ 60 परसेंट पैसा उसको मिलेगा और उसमें भी उसको टैक्स देना पड़ेगा। जबकि पहले इसमें कोई ऐसा प्रावधान नहीं था। ये बहुत गंभीर मुद्दा है... थोड़ा सा सुन लीजिए, अध्यक्ष जी। और उसका 40 परसेंट पैसा मार्किट में लगेगा और 10 साल तक लगा रहेगा उसके बाद अगर कोई मार्किट से रिटर्न है तो ये वापिस मिलेगा। तो ऐसी इस पेन्शन में बहुत सारी कुरीतियाँ हैं जिससे सरकारी कर्मचारी पूरे देश का 60 लाख कर्मचारी परेशान है। मैं एक और आपको एग्जाम्पल देता हूँ। अभी कुछ समय पहले कुछ सरकारी कर्मचारियों ने अपना इस्तीफा दे दिया क्योंकि वो बीमार थे या उनकी कुछ घर की समस्या थी तो उनको उनके नाम के साथ हमारे पास डेटा है। उनको हजार रुपये और 1200 रुपये की पेन्शन दी जा रही है और इसीलिए पूरे देश का सरकारी कर्मचारी बहुत ही ज्यादा आक्रोश में है, बहुत दुःख में है और वो कई बात, कई साल से आन्दोलन कर रहा है और इस आन्दोलन और उनका आन्दोलन जायज भी है। क्योंकि बीजेपी की सरकार ने उनको बड़ी-बड़ी कंपनियों को फायदा पहुँचाने के लिए अरबों रुपये मार्किट में लगा दिये और ये जो पैसा है, उनके डीए से कट के जाता है। उनकी सैलरी से कट के जाता है। उनके पीएफ से कट के जाता है। जब जाके पेन्शन का पैसा जमा होता है। उनको सरकारी कंपनियों को दे दीजिए, दे दिया गया और करोड़ों अरबों रूपयों का ये घपला

उन्होंने बना दिया। आज पूरे देश का सरकारी कर्मचारी बहुत रुष्ट है और जैसा मैंने बताया कि आज रामलीला मैदान में लाखों की संख्या में पूरे देश से सरकारी कर्मचारी आये और उन्होंने अपना रोष प्रकट किया और रामलीला मैदान से संसद तक का प्राइम मिनिस्टर जी का घर का घेराव करने के लिए गये और उन्होंने ये ऐलान कर दिया कि बीजेपी की सरकारों ने 2004 में तो उनकी पेंशन पे डाका डाला और 2015-16 में जीएसटी लगा दी और नोटबंदी के नाम पे लोगों के हाथ में कटोरा ला दिया तो न तो देश का व्यापारी खुश है, न ही देश का कर्मचारी खुश है, न ही देश का गरीब आदमी खुश है तो ये बीजेपी की सरकारें इस देश को बर्बादी की तरफ ले जा रही हैं और सिर्फ ये अडानी, अंबानी के पेट भर रही हैं। तो जब हजारों लाखों की संख्या में लोगों ने ये अपील हमारे दिल्ली के मुख्यमंत्री साहब को की तो आज दिल्ली की एक ऐतिहासिक स्थल रामलीला मैदान से लाखों की संख्या में आये हुए उन लोगों ने मुख्यमंत्री साहब को कहा कि सर, ये हमारे साथ अन्याय है और हम चाहते हैं कि इस देश में इस अन्याय को खत्म किया जाये और उन्होंने एक नारा दिया के जो पेन्शन की बात करेगा, वही देश पर राज करेगा और ये समस्या गंभीर है क्योंकि आप सोचिये कि जब व्यक्ति अपने आखिरी पड़ाव में है। जब व्यक्ति 65 साल 70 साल की उम्र का है, उस समय उसके हाथ में कटोरा दे दिया गया। उस समय उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचायी गई। उसके बच्चों को जो पाल रहा था, अब उन बच्चों के ऊपर आश्रित रहने का, उसको इस तरीके से सारा प्रपंच रच दिया गया और एक बात और भी मैं बताता हूँ जो इस पेन्शन में बहुत महत्वपूर्ण है जब देश की संसद बीजेपी की संसद ने ये कानून लागू किया तो उसने प्राइम मिनिस्टर की पेन्शन, मुख्य मंत्रियों की पेन्शन, मंत्रियों की पेन्शन, सांसदों की पेन्शन और विधायकों की पेन्शन

तो एक तरफ रख दी लेकिन सरकारी कर्मचारियों की जेब पे, उनके अधिकार पे डाका डाल दिया और ऐसा कानून बना दिया कि अगर 40 दिन कोई सांसद रहे या विधायक रहे तो वो पेन्शन पूरी जिंदगी लेगा लेकिन सरकारी कर्मचारी अगर 40 साल तक मेहनत करे तो उसको पेन्शन का अधिकार नहीं है तो अध्यक्ष महोदया, मैं एक प्रस्ताव सदन के सामने रखना चाहता हूँ, ये बहुत गंभीर है। 60 लाख सरकारी कर्मचारियों के भविष्य का सवाल है और करोड़ों लोग जो उन सरकारी कर्मचारियों के साथ जुड़े, उनकी फैमिली के लोग, उनके परिवार के लोग, जो उनपे आश्रित हैं, उनके भविष्य का सवाल है तो मैं एक रेजल्यूशन, एक प्रस्ताव आपके सामने रखना चाहता हूँ, सदन के सामने रखना चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि इस पे चर्चा हो तो मैं आपसे रिक्वेस्ट करूँगा कि मैं इस प्रस्ताव को आपके सामने पटल पे रखूँ।

अध्यक्ष महोदया: बिल्कुल रखिये।

श्री अजय दत्त: *I want to draw attention of the House that :*

Taking note of the negative consequences of the Anti-employee National Pension System (NPS) that is imposed on the Government Servants by the then NDA Government in 2004 and sustained by the UPA-I, UPA-II And NDA-II Governments,

Given the fact that, unlike the old pension scheme, the NPS:

- ***does not give any guarantee to the employees either for assured returns on investments or for minimum pension.***
- ***does not provide for family pension or social security,***
- ***does not provide for loan facility when in dire need,***

- *does not provide for Annual increments and hike in DA,*
- *does not allow the employees to withdraw enough money from their own pension fund to meet the medical emergencies,*
- *leaves the employees at the mercy of volatile markets and the forces that have notoriously been manipulating the markets,*
- *imposes draconian restrictions on withdrawals from pension fund,*
- *allows the insurance companies to exploit employees by way of forcing them to buy Annuity for A minimum of ten years even After retirement, and*
- *runs contrary to the spirit of welfare state As enshrined in the Constitution,*

Given the fact that the pro-people and welfare oriented Government of NCT of Delhi is strongly in favour of restoring the rights and privileges of its employees by way of replacing the NPS with the time tested old pension scheme,

Resolves to urge upon the Government of India to scrap the NPS with immediate effect and bring at once all the Government Servants working under the Government of NCT of Delhi under the old pension scheme and restore to them all the benefits of the old pension scheme wherein the fair and legitimate pensions' benefits are disbursed through the Consolidated Fund of India, so that the dedicated work force of the Government of NCT of Delhi And their families will be able to lead their lives with sense of security And dignity, and

Further resolves to urge upon the Government of India to restore the old pension scheme in place of NPS or the benefit of all the Government Servants working under the Government of India and also to actively encourage other States to follow this true welfare measure'.

अध्यक्ष जी, मैं सदन के सामने ये प्रस्ताव रखता हूँ और मैं ये रिक्वेस्ट सभी मेंबर्स से भी करता हूँ कि ये बहुत सेंसिटिव मुद्दा है। इसमें चपरासी से लेकर और कलैक्टर तक सभी अधिकारी जो 2004 के बाद रिक्रूट हुए हैं। उनके भविष्य का, उनकी फेमिली के भविष्य का सवाल है। तो इस मुद्दे पर आप... मैं सदन पटल पर रखता हूँ। इस पर चर्चा भी कराएँ और आपके सामने ये मुद्दा है, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष महोदय: बहुत-बहुत धन्यवाद। अब माननीय मुख्यमंत्री इस संबंध में संक्षिप्त वक्तव्य देंगे।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय: अध्यक्ष महोदय, ये जो अभी अजय दत्त जी ने प्रस्ताव रखा है, ये बहुत महत्वपूर्ण प्रस्ताव है। 2004 में पेन्शन पॉलिसी बदल दी गई थी न्यू पेन्शन पॉलिसी लाई गई थी, ओल्ड पेन्शन पॉलिसी खत्म कर दी गई थी और अब निकलकर आ रहा है कि पिछले साल दो साल में उस नई पेन्शन पॉलिसी के तहत जो कई कर्मचारी रिटायर हो रहे हैं, उनको रिटायरमेंट के बाद किसी को 800 रुपये महीना, किसी को 700 रुपये महीना, किसी को 1000 रुपये महीना के हिसाब से पेन्शन मिलती है। जिसकी वजह से अब सभी कर्मचारियों को ये लगने लगा है कि रिटायरमेंट के बाद उनका और उनके परिवार का भविष्य बहुत ही अंधकारमय है। जैसा मैंने अभी थोड़ी देर पहले बताया था कि जितना अच्छा काम आज हम दिल्ली सरकार में कर रहे हैं। वो सारा हमारे कर्मचारियों की कड़ी मेहनत की वजह से है। अगर हमारे कर्मचारी दुःखी रहेंगे तो हम कभी भी अच्छा

काम नहीं कर पायेंगे। वो कड़ी मेहनत करके दिल्ली के लोगों की सेवा कर रहे हैं। दिल्ली में पेन्शन की व्यवस्था थोड़ी अजीब है। दिल्ली में सभी सरकारी कर्मचारियों को पेन्शन केन्द्र सरकार से मिलती है कंसोलिडेटेड फण्ड ऑफ इंडिया से मिलती है दिल्ली सरकार से नहीं मिलती। अगर दिल्ली सरकार से मिलती तो आज ये हम 24 घंटे के अंदर ये न्यू पेन्शन पॉलिसी खत्म करके ओल्ड पेन्शन पॉलिसी लागू कर देते। लेकिन मेरा आज सदन से ये निवेदन है कि ये प्रस्ताव पारित करके हम केन्द्र सरकार को आज भेजें और केन्द्र सरकार से कहें कि दिल्ली के सारे कर्मचारियों के लिए ओल्ड पेन्शन पॉलिसी तुरंत प्रभाव से लागू कर दी जाए और ताकि दिल्ली के कर्मचारियों को न्यू पेन्शन पॉलिसी के जो नुकसान है, वो न उठाने पड़े और दिल्ली सरकार भी अपनी तरफ से केन्द्र सरकार के ऊपर दबाव डालेगी और जो-जो जरूरत पड़ेगी, केन्द्र सरकार से कराके रहेगी और अब मेरा सदन से ये निवेदन है कि इस प्रस्ताव को पास कर दिया जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदया: अब श्री अजय दत्त जी द्वारा प्रस्ताव सदन के समक्ष है:

जो इसके पक्ष में हैं, वो हाँ कहें;

जो इसके विरोध में हैं, वो न कहें;

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता,

प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

अब मैं प्रस्ताव करती हूँ कि आज शेष बचे हुए कार्य को निपटाने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली की विधानसभा के सातवें सत्र के चौथे

भाग की बैठक मंगलवार दिनांक 27 नवम्बर, 2018 को भी आयोजित की जाएगी। कृपया सदन अपनी सहमति दे।

(सदन द्वारा सामुहिक सहमति व्यक्त करने पर)

सदन सहमत है। मुझे लगता है कि सदन सहमत है आज सूचीबद्ध अल्पकालिक चर्चा कल पुनः सूचीबद्ध की जाएगी। अब सदन की कार्यवाही मंगलवार दिनांक 27 नवम्बर, 2018 को अपराह्न 2:00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है। धन्यवाद।

(माननीय अध्यक्ष महोदया के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही मंगलवार दिनांक 27 नवम्बर, 2018 को अपराह्न 2:00 बजे तक के लिए स्थगित की गई)

... समाप्त ...

विषय सूची

सत्र-07 भाग (04) सोमवार, 26 नवम्बर, 2018/05 मार्गशीर्ष, 1940 (शक) अंक-91

1. सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2. शोक संवेदनाएँ	3-9
<p>1. श्री अटल बिहारी वाजपेयी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री;</p> <p>2. श्री मदन लाल खुराना, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री;</p> <p>3. श्री अनंत कुमार, कैबिनेट मंत्री, भारत सरकार</p> <p>4. श्री मनिंदर सिंह धीर, दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष;</p> <p>5. श्री साहब सिंह चौहान, दिल्ली विधान सभा के पूर्व सदस्य;</p> <p>6. श्री जिले सिंह, दिल्ली विधान सभा के पूर्व सदस्य;</p> <p>7. श्री नंद किशोर सहरावत, दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य;</p> <p>8. पंजाब, जम्मू एवं कश्मीर और छत्तीसगढ़ में हाल में हुए आतंकी/नक्सली हमलों में मारे गये निर्दोश व्यक्तियों/सुरक्षा कर्मियों के प्रति; और</p> <p>9. 26 नवम्बर, 2008 को मुम्बई में हुए आतंकी हमले के पीड़ितों के प्रति।</p>	
3. संविधान दिवस	10-13
4. सरकारी संकल्प (नियम-90)	14-138
5. ध्यानाकर्षण (नियम-54)	139-147

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्सs, 2266/41, बीडनपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।
